Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SARVDESHIK
APRIL-NOV 1930 G: K: U:

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112933

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक

सन् १९३० ई० = अप्रैल - मई, नवम्बर

RB 0525

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म् ❀

पुस्तक-संख्या............

पंजिका संख्या.........

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Regd. No. L. 2121.

ओ३म्

वैसाख, ज्येष्ठ
१९८७ वि०
अप्रैल, मई
१९३० ई०

दयानन्द
अब्द
१०६

सार्वदेशिक

भूमण्डल

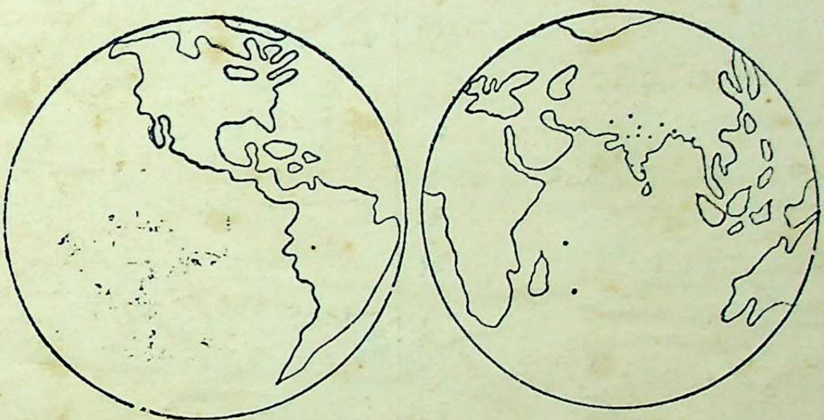

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

वार्षिक
मूल्य
२) रु०

सम्पादक—स्वामी आनन्दभिक्षु सरस्वती

एक प्रति
≡) आना

विदेश से ५ शिलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

संख्या विषय	पृष्ठ सं०
१-सार्वदेशिक सभा वार्षिक साधारण अधिवेशन	१
२-धन संग्रह करने के अनुचित उपाय	
३-लार्ड इरविन का भाषण	६
४-सम्पादकीय	८
५-गीता और अवतार वद लेखक श्री स्वामी मंगलानन्द जी पुरी	६
६-आर्य समाजों के जीवन और मृत्यु का प्रश्न ले० श्री आत्माराम जी अमृतसरी राज्य रत्न बड़ौदा	१३
७-वैदिक धर्म की सार्वभौमता ले० श्री स्नातक धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति सम्पादक वेदसन्देश मंगलौर	२१
८-वेद में चारों वर्णों का कर्तव्य निर्देश ले० श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ	२६
९-तारों की शीतल छाया में	२८
१०-रामके प्रति श्रद्धाञ्जली ले० श्री भगवानदास जी केला भारतीय ग्रन्थ माला वृन्दावन	३१
११-आर्य्य समाज में परिवर्तन ले०-श्री फि० चा० वैद्य ईश्वर दत्त जी अजमेर	३४
१२-संसार में सबसे अधिक अपराधी देश?	३६
१३-सार्वदेशिक सभा का बाइसवां वार्षिक बृतान्त	४१

सार्वदेशिक के नियम

ग्राहकों से निवेदनः-

१ सार्वदेशिक प्रत्येक अंग्रेजी मास की १५ ता० को प्रकाशित होता है।

२ इसका वार्षिक मूल्य भारत के लिये दो रुपया, विदेश के लिए पांच शिलिंग है। वी० पी० से मंगाने वालों को ≡) इस से अधिक देने पड़ेंगे।

३ सार्वदेशिक का वर्ष मार्च मास से आरम्भ होता है, किंतु वर्ष के किसी भी मास से कोई ग्राहक वन सकता है।

४ पत्रादि लिखते समय ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता तथा ग्राहक संख्या खूब साफ लिखना चाहिये।

५ प्रत्येक ग्राहक के पास "सार्वदेशिक बड़ी सावधानी से भेजा जाता है। यदि इस पर भी किसी के पास कोई संख्या महीने के अन्त तक न पहुंचे, तो उन्हें पहले अपने डाकघर से पूछ लेना चाहिए, फिर हमें लिखना चाहिये। वह संख्या उनके पास भेज दी जायगी।

सम्पादकः-"सार्वदेशिक" देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112933
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
112933

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र

वर्ष ४ | वैशाख ज्येष्ठ १ सम्वत् १९८७ वि० | अप्रैल, मई १९३० ई०] [दयानन्दाब्द १०६ | अङ्क २-३

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन गत २९ मार्च ३० को देहली में हुआ! अधिवेशन की कार्य्य वाही इस प्रकार दी जाती है :—

(१) निश्चय हुआ कि यह अधिवेशन श्री० पं० शङ्करनाथ जी तथा श्री० बा० सूरजकरण जी शारदा की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकट करता हुआ उनके परिवार के प्रति सम्वेदना प्रगट करता है।

(२) आगामि ३ वर्ष के लिये प्रतिष्ठित सभासदों के निर्वाचन का विषय पेश हुआ। पाँच सज्जन निर्वाचित होने वाले थे परन्तु ७ महाशय नामजद किये गये। परचियों द्वारा सम्मति लेने पर इस प्रकार सम्मतियाँ आईं।

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी १८
(२) „ स्वामी आनन्द भिक्षु „ १५
(३) „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द „ १४
(४) „ बा० घासीराम „ १२
(५) „ स्वामी ब्रह्मानन्द „ ११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) ,, प्रो० इन्द्र ,, ६
(७) ,, स्वामी वेदानन्द ,, ५

अतः बहु पक्षानुसार प्रथम के ५ सज्जन प्रतिष्ठित सभासद चुने गये।

(३) वार्षिक रिपोर्ट पेश होकर सुनी गई और सर्व्व सम्मति से स्वीकृत हुई तथा यह भी निश्चय हुआ कि श्री प्रधान जी उसे उचित संशोधनों के साथ प्रकाशित करा देवें!

(४) श्री कुँवर हुकमसिंह जी के नाम १५०) की पेशगी का विषय १८-८-२९ को अन्तरङ्ग के नि० स० २ के साथ पेश हुआ और सर्व्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह रक़म ख़ारिज करदी जाय।

(५) आगामि वर्ष अर्थात् सन् १९३०-१९३१ के लिये पदाधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यों आदि का निर्वाचन इस प्रकार हुआ :—

(क) अधिकारी

(१) प्रधान—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
(२) उपप्रधान (१) श्री प्रो० रामदेव ,,
(२) ,, बा० श्रीराम ,,
(३) मन्त्री-श्री० स्वामी आनन्दभिक्षुजी सरस्वती
(४) उपमंत्री-,, स्वामी रामानन्द ,, संन्यासी
(५) कोषाध्यक्ष—,, ला० नारायणदत्त जी
(६) पुस्तकाध्यक्ष—,, ला० ज्ञानचन्द जी

(ख) अन्तरङ्ग सदस्य

(१) श्री म० बिजयशंकर जी (बम्बई)
(२) ,, बा० देवधारीसिंह जी (बंगालबिहार)
(३) ,, कुंवरचान्दकरण जी शारदा (राजस्थान)
(४) ,, बा० घनश्यामसिंहजी गुप्त (मध्यप्रदेश)
(५) ,, प्रो० ताराचन्द (सिन्ध)
(६) ,, प्रो० धर्म्मेन्द्रनाथ जी
(७) ,, बा० ज्वाला प्रसाद जी
(८) ,, बा० श्यामसुन्दरलाल जी
(९) ,, बा० घासीराम जी
(१०) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(११) ,, म० कृष्ण जी
(१२) ,, ला० देशबन्धु जी
(१३) ,, राय साहब गंगाराम जी
(१४) ,, पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य

(ग) श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा के लिये इस सभा के प्रतिनिधि निम्न सज्जन सर्व्व सम्मति से निर्वाचित हुए :—

(१) श्री बा० हरशरण दास जी
(२) ,, बा० जगन्नाथ प्रसाद जी
(३) ,, राय साहब ला० गंगाराम जी

आडीटर

सर्व्व सम्मति से श्री बा० जगन्नाथ प्रसाद जी एकाउन्टेन्ट इलाहाबाद बैंक सभा के आडीटर नियुक्त हुए।

(६) सन् १९३०-१९३१ के लिये सार्वदेशिक सभा का १५०८७ तथा श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा का ४१७७० कुल ५६८५७ का बजट स्वीकार किया गया।

(७) सार्वदेशिक सभा में आर्य्य प्रादेशिक सभा के दाखिले का विषय पेश हुआ। श्री प्रधान जी के गत तथा इस वर्ष के दोनों नोट पढ़े गये। श्री म० कृष्ण जी ने सभापति से इस बात की सम्मति चाही कि आया एक प्रान्त में दो प्रतिनिधि सभायें बन सकती हैं या नहीं यदि नहीं तो इस विषय पर बिचार नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभापति ने सम्मति देने से पूर्व सभा में उपस्थित सज्जनों से प्रार्थना की कि जो सज्जन इस प्रश्न (Point of order) पर कुछ कहना चाहें कहें। इस पर अनेक सज्जनों ने बक्तृतायें दीं। उनके सुनने के बाद सभापति ने अपना निश्चय इस प्रकार प्रकट किया :—

"आर्य्य समाज के उपनियमों से लेकर इस सभा के नियमों तक में कहीं 'प्रान्त, की परिभाषा नहीं की है। सरकार ने जो अपने प्रबन्ध की दृष्टि से प्रान्त नियत किये हैं उन्हें क्रियात्मक रीति से प्रतिनिधि सभायें नहीं मानतीं। उदाहरण के लिए पंजाब की प्रतिनिधि सभा में बिलोचिस्तान और पूर्वी अफ्रीका तक के समाज प्रविष्ट हैं। संयुक्त प्रान्त की सभा ने स्याम की समाजों को प्रविष्ट कर रक्खा है। जब प्रान्त की न परिभाषा की गई और न सीमा नियत की गई तो फिर यह प्रश्न कि क्या एक प्रान्त में दो सभायें बन सक्ती हैं, नहीं उठ सक्ता।"

सभासदों में से अनेक सज्जनों को इष्ट यह था कि कोई ऐसी तजबीज हो जो राज़ीनामे के तौर से सब को स्वीकृत हो परन्तु ऐसे किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सके थे इसलिये लाला देशबन्धु जी ने यह प्रस्ताव किया कि इस विषय को ३ मास के लिए स्थगित किया जावे और श्री प्रधान जी इस बीच में यत्न करें और कोई ऐसी तजवीज़ निकालें जो आर्य्य प्रादेशिक सभा तथा आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब दोनों को स्वीकार हो। इस प्रस्ताव का श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने अनुमोदन किया। प्रस्ताव पर सम्मति लेने पर १३ पक्ष तथा ८ विपक्ष में सम्मतियाँ आने पर यह प्रस्ताव बहुपक्ष से स्वीकार हुआ।

(८) सभा के नियम सं० ३ के (ख] भाग में संशोधन करने का विषय पेश हुआ। भारतवर्षीय आर्य्यकुमार परिषद् का प्रार्थना पत्र इस सभा में प्रविष्ट करने के सम्बन्ध में पढ़ा गया। भारतवर्षीय आर्य्य कुमार सम्मेलन आगरा के स्वीकृत प्रस्ताव पेश हुए उनसे प्रगट हुआ कि उस सम्मेलन में प्रविष्ट करने के स्थान में 'संरक्षण, की प्रार्थना करने का आदेश किया गया है। चूंकि यह निश्चित नहीं है कि परिषद् क्या चाहती है इस लिये निश्चय हुआ कि यह विषय अन्तरङ्ग सभा में वापिस भेजा जाय कि वह प्रशंसित परिषद् से आवश्यक पत्र व्यवहार करके उचित निर्णय कर देवे।

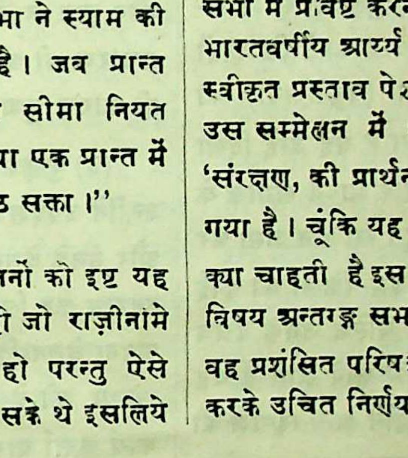

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन संग्रह के अनुचित उपाय

[लेखक—श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज]

—※—

आर्य्य समाज के प्रचार युग में आर्य्य समाज के अन्तर्गत ब्राह्मण-वृति का प्राधान्य था परन्तु संस्था युग में वैश्य-वृत्ति प्रधान हो गई इस लिये कार्य कर्त्ता, अधिकारी, उपदेशक, प्रचारक, और भजनीकों में से प्रत्येक को योग्यता की कसौटी भी धन ही हो गया। जो अधिक धन जमा कर देवे वही अच्छा अन्यथा अयोग्य। कई पुरुष जो सद्व्यवहार नहीं रखते, जिनके पड़ोसी उनके दुर्व्यवहार की खुले तौर से शिकायत करते सभाओं से फरीयाद करते कि उन्हों ने अपने दुर्व्यवहार से उन (पड़ोसियों) की सम्पत्ति का हरण कर लिया है वह उन्हें दिला दी जावे। परन्तु वे पुरुष चूंकि आर्य्य समाज के लिये 'येन केन प्रकारेण' बहुत सा धन जमा कर देते हैं इस लिये उनके विरुद्ध किसी की कोई फर्याद नहीं सुनी जाती बल्कि उनके चित्र कृतज्ञता के साथ अखबारों में छापे जाते हैं यह प्रकट करने के लिये कि उन्होंने आर्य समाज की बड़ी भारी सेवा की है इसका फल यह होता है कि न्यायाभिलाषियों के हृदय से ऐसी सभाओं का मान घटता है—

(२) एक उपदेशक या भजनीक जब अपने प्रचार करने के बाद जनता से धन की याचना करता है तो उसके प्रचार का सब असर जाता रहता है और लोग उसे अपमान की दृष्टि से देखने लगते हैं। कई उपदेशक और भजनीक शिकायत किया करते हैं कि जब वे समाजों में जाते हैं तब उनका साधारण सा भी आतिथ्य नहीं होता। इसका कारण यह नहीं है कि आर्य्यों में अतिथि यज्ञ करने का मान नहीं बल्कि असली कारण यही है कि आर्य नर नारी समझते हैं कि ये जरूर चन्दा जमा करने आये हैं इस लिये स्वाभाविक है कि ऐसे उपदेशकों का वह मान नहीं हो सकता जो निःस्वार्थी उपदेशकों का हुआ करता है जिनका उद्देश्य प्रचार के सिवा और कुछ नहीं होता। ऐसे धन संग्रह कर्त्ता प्रचारक भी आर्य्य समाज के मान कम करनेका ही कारण हुआ करते हैं—

(३) कुछेक संस्थायें ऐसा भी करती हैं कि उन्होंने उपदेशक या भजन मण्डलियां रक्खीं और उनके वेतन नियत न करके उनके साथ यह ठहराव कर लिया कि तुम धन संग्रह करो और अपना वेतनादि लेकर जो कुछ बचे उसे उस संस्था को दे देवें। ऐसी संस्थायें और उनके कार्य कर्त्ता वास्तव में बड़ा पातक करते हैं।

आर्य्य समाज और आर्य्यों से यदि १००) वसूल किये गये तो उस में से उस संस्था को केवल दस बीस रुपये ही मिलते बाकी ८०)-९०) वे धन संग्रह कर्त्ता अपनी जेबों में ही रखते हैं। मर्य्यादा के साथ यदि धन संग्रह किया जावे तो १०) सैकड़ा से अधिक धन संग्रह का व्यय नहीं होना चाहिये और ९०) सैकड़ा उस कार्य में लगना चाहिये जिसके लिये धन संग्रह किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा रहा है। परन्तु इन क्षुद्र और सूखी संस्थाओं ने उलटी गंगा वहा रक्खी है। ये संस्थायें आर्य समाजों की मान हानि का कारण हैं और इन के प्रचारक और भजनीकों को एक पैसा देना भी आर्य जनता को पाप समझना चाहिये।

(४) टके वसूल करने का एक और निकृष्ट साधन उपदेशकों और भजनीकों ने निकाल रक्खा है और यह साधन इसलिये और भी अधिक निकृष्ट कहे जाने योग्य है कि इस साधन से प्राप्त धन द्वारा व्यक्तिगत स्वार्थकी पूर्ति होती हैं। वह साधन यह है कि इन लोगों ने कुछ पुस्तकें भजनों अथवा अन्य किन्हीं विषयों की छपवा रक्खी हैं। पुस्तकों का बंडल बगल में दवाकर ये लोग आर्य समाज की पवित्र वेदी को अपवित्र करने के लिये वेदी पर आते हैं। और व्याख्यान और भजनों के मध्य में संकेत करते जाते हैं कि जो कुछ वे कह रहे हैं वह उनकी इस पुस्तक में छपा हुआ है और व्याख्यान या भजन के अन्त में तो खुला नोटिस अपनी पुस्तकों का दे दिया करते हैं। ऐसे उपदेशक और भजनीकों के व्याख्यान और भजन उनकी पुस्तकों के विज्ञापन के सिवाय और कुछ नहीं होते। इनका सुनने वालों पर बुरा प्रभाव पडता है। लोग समझते हैं कि आर्यसमाज का प्रचार केवल धन संग्रह के लिये होता है इस कुप्रथा की जितनी अधिक मलामत की जावे थोड़ी है और ऐसे उपदेशक और भजनीक कदापि इस योग्य नहीं हैं कि उन्हें आर्य्य समाज की वेदी पर खड़ा होने दिया जाय।

(५) एक और कलुषित साधन धन बटोरने का कुछेक उपदेशक अधिकतर भजनीकों ने निकाल रक्खा है जिस का नाम इन लोगों ने फीस रख छोड़ा है। जब कभी समाजों के उत्सव हुए या विवाह आदि के अवसर हुए तब इस श्रेणी के उपदेशक और भजनीकों के हाथ मानों सोने की चिड़िया आगई और अब ये भांडों और वेश्याओं की तरह ठहराव करने लगते हैं। उत्सव या विवाह में शरीक होने के ५०), १००) कभी दो दो सौ रुपये तक ठहरा लेते हैं और उस में से कुछ पेशगी भी साई के तौर पर ले लिया करते हैं। कभी २ एक एक भजनीक कई २ जगह से एक ही साये की साई लेलेता है और एक अच्छी जगह छांट कर चला जाता है वहाँ से अच्छा खासा धन बटोरता है। और बाकी जगहों की साई जब्त कर लेता है। वे लोग पत्र पर पत्र भेजकर तक़ाज़ा करते हैं, कि यदि उनके संस्कार या उत्सव में शरीक न हुआ तो जो धन पेशगी में मंगालिया था उसे तो वापिस कर देवे परन्तु यहां कौन सुनता है? इस प्रकार के इन भजनीकों के अनेक फरियादी हैं। यह निकृष्टतम साधन पैसे बटोरने का है जो शीघ्र से शीघ्र बन्द होना चाहिये। आर्य्य लोग क्यों ऐसा करते हैं, क्यों ऐसे भजनीकों से इस प्रकार का ठहराव करते हैं इस का कारण यह है कि इन नामधारी आर्य्यों में पुराने हिन्दू होने के संस्कार जागृत होजाते हैं, वेश्याओं का नहीं तो किसी न किसी का तो गाना सुनना ही चाहिये यह उन्हें इष्ट होता है, इसीलिये उचित अनुचित किसी प्रकार के साधन क्यों न हों उन को उन्हें अपने व्यसन की पूर्ति के लिये काम में लाने में जरा भी संकोच नहीं होता। यही कारण है कि ऐसे निकृष्ट भजनीकों की संख्या बढती जाती है और आर्य्य समाज का अपयश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी इनकी बढ़ोतरी के साथ ही साथ बढ़ता जाता है।

(६) कुछेक लोगों ने संस्थाओं को अपना पेशा बना रक्खा है-बिधवा आश्रम, गोशाला, पाठशाला और अनाथालय आदि कई संस्था नाम मात्र के लिये खोल ली और उसके नाम से व्याख्यान दे दे कर भजन गा गा कर धन जमा किया करते हैं और स्वार्थ सिद्धि के लिये काम में लाया करते हैं। ऐसे धूर्तों को कभी एक पैसा भी नहीं देना चाहिये बल्कि यथावसर उन्हें पकड़ कर पुलिस के हवाले करना चाहिये जिससे ये फिरकभी किसी को धोखा न देसकें।

ये और इस प्रकार के अनेक साधन हैं जो इस समय धन संग्रह के लिये आर्य्य समाजों में प्रचलित हैं। आर्य्य समाज की निर्मल कीर्ति पर इन धन संग्रह के अनुचित उपायों से, अपयश का धब्बा न लगे या जितना लगा है छूट जावे इसके लिये आवश्यक है कि आर्य्य और आर्य्य समाजें गम्भीरता से इन पर विचार करके इन के दूर करने के लिये आन्दोलन और घोर आन्दोलन करें।

—:o:—

लार्ड इरविन का भाषण

—:o:—

९ जौलाई को शिमला में, व्यवस्थापक और राज-सभा के सामने वायसराय लार्ड इरविन ने जो भाषण दिया उसका सारांश इस प्रकार है—

"लन्दन की गोलसभा को भारतीय समस्याओं की जांच की पूरी छूट रहेगी और उसकी यह मिहनत शिक्षालय में होने वाली मिहनत जैसी न होगी। विलायत की सरकार को इस समय भी इस बात का बिश्वास है, कि भारत के सभी विचार के लोग चाहे अब तक उनका भाव कैसा ही क्यों न रहा हो, इस निर्माण कार्य में भाग लेने पर तैयार होजायेंगे। अब भी सवेरा है!" इसके उपरान्त आपने कहा, कि बहुतेरे भावों के प्रभाव से भारतीय शासनसंस्कार भारत की आशुवृद्धिशीला जातीयता को गिन ही न सका, इसीलिये उसका सारा असर मिट्टी में मिल गया। और जातीयता भी कैसी? ब्रिटिश अनुभव ब्रिटिश राजनीतिकों के सहवास और ब्रिटिश ही शिक्षा के प्रभाव से प्राप्त की हुई। बात यह है कि भारत के बाहर के लोग भारतीय जातीयता को उतनी सफाई से समझ ही नहीं रहे हैं. विशेषतः अंगरेज अपने पड़ोस के ही झगड़ों में इतना फंसे हुए हैं, कि उन्हें भारतीय स्थिति का आशुपरिवर्त्तन देखने की फुर्सत नहीं।

आपने आगे चलकर कहा है, कि अंगरेजों और भारतीयों का एक दूसरे से परिचित न होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। दोनों को उनकी जातीयता उनके धर्म और उनके सान्निध्य तथा इतिहास जुदा कर रहे हैं। किंतु दूरदर्शियों को दिखाई देता था, कि प्रति बष जातीय भाव बढ़ाने वाला आत्ममर्यादाभिमानी भारत सदा दास बना रहेगा. यही समझ के विलायत की सरकार ने गत वर्ष मुझसे यह विघोषित कराया था, कि भारतीय शासन संस्कारों का चरम लक्ष्य भारत को औपनिवेशिक स्वराज प्रदान करना है। जो बात उस समय कही गई थी, वही इस समय भी दुहराई जाती है।

विलायत की गोल सभा में ब्रिटिश और भारतीय मुखिया मिल के वह व्यवस्था निर्धारित करेंगे, जिसे विलायत की सरकार मंजूरी के लिये पार्लियामेन्ट में पेश करेगी। इसमें सन्देह नहीं, कि साइमन कमीशन ने अपनी रिपोर्ट में एक जटिल समस्या का समाधान किया है। फिर भी यह रिपोर्ट इस लिये लिख ही न गई थी, कि विलायत की सरकार इसकी बातों के अनुसार कार्य करे। भारत सरकार चाहती है, कि वह इस रिपोर्ट पर अपना अन्तिम मत प्रकाशित करने से पहिले कुछ देशी नरेशों और उन लोगों से राय ले, जो भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ओर से बोल रहे हैं। लेकिन इनबातों पर शान्तभाव से विचार करने का वातावरण वर्तमान सत्याग्रह-आन्दोलन ने बिलकुल बिगाड़ दिया है। मैंने श्री गांधी जी के रोकने का यत्न किया था; किन्तु उसका कोई फल न हुआ। मैंने देश को भी सूचना दी थी, किन्तु वह भी अनसुनी कर दी गई। इस सारे आन्दोलन का एक ही उद्देश्य यह है, कि वर्तमान भारत सरकार उखाड़ के फेंक दी जाये, इसी लिये भारत सरकार इसे गैर कानूनी और भयानक सत्यानाशी समझती है। वर्तमान भारतीय आन्दोलन यूरोपियन देशों में सार्वत्रिक हड़ताल जैसा है। जनता के दल बादल उमड़ के सरकार के साथ विचार करने के पहले उसे तोड़ डालने का यत्न कर रहे हैं। इसलिये ब्रिटिश सरकार ने भी इस आन्दोलन से सामना करने के सारे साधन संग्रह कर लिये थे। भारतीय आन्दोलन और भी भयानक बनाया जाने लगा है। अखिल भारतीय कांग्रेस की कार्य-कारिणी समिति ने पुलिस और फौज के सिपाहियों में भी अराजकता फैलाने का मन्तव्य प्रकाशित कर दिया है। इससे समझ में आगया है, कि यह समिति बढ़के कहां तक पहुंचा चाहती है। इसी लिये यह समिति गैर कानूनी ठहरा दी गई। अगर भारतीय समाज में फैलता हुआ यह रोग रोका न जायगा, तो एक न एक दिन सरकार को निश्चय ही मिट्टी में मिला देगा।

इस रोग के रोकने के लिये ही इन दिनों फर्मान पर फर्मान निकाले जाते हैं। हलचल में अपराधियों के साथ निरपराधों का भी चुटीला होना अनिवार्य हो जाता है। फिर भी निरपराधों के चोट खाने पर मैं दुःखी हूं, और उनके प्रति अपनी सम्पूर्ण सहानुभूति प्रकट करता हूं। साथ ही लोगों को भी देखना चाहिये कि दोष किसका है। आग लगाने वाले अपनी लगाई आग क्यों नहीं बुझाते? साधारणतः मैं अपनी पुलिस और फौज की ही पीठ ठोकूँगा, क्योंकि वेतरह उभारी जाने और जान के खतरे के सम्मुख होने पर भी यह दोनों बड़ी दक्षता से अपना कर्तव्य पालन कर रही हैं।

फिर भी भारतीय शासन संस्कार पर इस आन्दोलन का कोई भी असर नहीं हुआ है। विलायत में होने वाली गोल सभा की तारीख प्रकाशित हो गई है और आज मैं विलायत की सरकार की ओर से इसकी कार्यवाही का वर्णन किये देता हूं। खूब विचार करने पर विलायती सरकार ने फैसला कर दिया है कि जो नियम मैं अपनी गत नवम्बर महीने की पहली तारीख की वक्तृता में प्रकट कर चुका हूं, उससे अधिक नियम के बन्धन में यह सभा बांधी न जाय। सिवा इसके उसने यह भी फैसला किया है, कि इसके विचार की स्वतन्त्रता में किसी तरह की भी बाधा पहुंचने न पाये। यह सभा अगर चाहे, तो सायमन रिपोर्ट या अन्य किसी लिखावट का सहारा ले जो उसके सामने रक्खे जायेंगे। विलायत की सरकार को यह भी विश्वास है, कि यह सभा ऐसी व्यवस्था तैय्यार कर सकेगी, जो दोनों देशों के हर दल और सम्प्रदाय के लोगों को पसन्द आजायेगी। इसी व्यवस्था की भित्ति पर विलायत की सरकार अपने प्रस्ताव पार्लियामेन्ट सभा में उपस्थित करेगी। यह सभा तर्क या वाद विवाद की सभा नहीं होगी, इसमें दो देश के प्रतिनिधियों के सामने उपस्थित किये जाने वाले यथार्थ प्रस्ताव तय्यार किये जायेंगे।

मुझे भी ऐसा कोई कारण दिखाई नहीं देता, जिस से यह सभा ऐसी व्यवस्था तय्यार कर न सके। कौन कहता है कि भारत और बिलायत के बीच समझौता हो ही नहीं सकता?

अन्त में लार्ड इरविन ने भारत के व्यक्तिगत मित्र के रूप में कुछ बातें कही हैं। आपने कहा है, कि भारतीय समस्याओं का समाधान तभी होगा, जब भारत और ग्रेट ब्रिटेन दोनों मिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के इसका अन्वेषण करेंगे। गत नवम्बर को फैलाया जाने वाला मैत्री का हाथ यदि स्वीकार किया जाता, तो भारतीय समस्यायें बड़े ही अनुकूल रूप में दिखाई देती।

कांग्रेस ने भारत की भलाई का एक बहुत बड़ा सुअवसर अपने हाथ से गवां दिया। फिर भी, अभी तक बात बिगड़ नहीं गई है। अब भी भारतीय राजनीतिक मिलके बृटिश के साथ ऐसी कोई व्यवस्था तय्यार कर सकते हैं, जिस से उन्हें शासनाधिकार प्राप्त हो सकता है। इस तरह हमारे सामने दो राहें खुली हैं। एक अशान्ति, अनैक्य, हृदयभग्नता और नैराश्य की ओर ले जाती है, दूसरी भारत को ब्रिटिश साम्राज्य की हिस्सेदारी तक पहुंचाती है, भगवान से प्रार्थना है, कि वह भारत से सत्पथ ग्रहण कराये।

सम्पादकीय

सार्वदेशिक का अप्रैल और मई का अङ्क पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जाता है। अप्रैल के अङ्क के ३ फार्म छप चुके थे और चौथा फार्म कम्पोज़ हो चुका था, तब ही प्रेस आर्डिनेन्स की घोषणा की गई। सार्वदेशिक जिस प्रेस में छपता था उससे भी जमानत मांगी गई। प्रेस के सञ्चालकों ने जमानत न दे कर प्रेस को बन्द कर दिया। ऐसी परिस्थिति में सार्वदेशिक के पूरे फार्म न छप सके और हमें एक प्रेस से दूसरे और दूसरे प्रेस से तीसरे का प्रबन्ध करने के लिये वाधित होना पड़ा। तत्कालही आर्य्य पत्रों द्वारा घोषणा कर दी गई कि प्रेस का समुचित प्रबन्ध न होने के कारण सार्वदेशिक समय पर नहीं निकल सकेगा। प्रेस का प्रबन्ध हो जाने और पत्र प्रकाशित होने पर पाठकों की सेवा में भेजा जायगा।

प्रेस के प्रबन्ध में अवश्य काफी देर हुई। देहली के एक प्रेस से निश्चय करके Declaration के लिये प्रार्थनापत्र भेजा। हमारा वह पत्र तहकीकात के लिये सी. आई. डो. में भेजा गया। सी. आई. डी. ने लगभग १½ मास तहकीकात में लगाया इसके बाद ज़िला मजिस्ट्रेट के दफ्तर में अपनी रिपोर्ट भेजी। रिपोर्ट पहुंच जाने पर प्रार्थना पत्र जाने के लगभग २ मास बाद हम व्यवस्था करने में समर्थ हुए।

इस बीच में सार्वदेशिक के ग्राहकों अनुग्राहकों को और प्रेमियों के अनेक पत्र कार्यालय में आए और देरी का कारण पूछा गया और बेचैनी प्रगट की गई क्योंकि सार्वदेशिक सदैव नियम से उनके पास पहुँचता रहता था। इस बेचैनी और उन भावों से जो पत्रों में प्रगट किए गए हैं हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि सार्वदेशिक उत्तरोत्तर लोक प्रिय हो रहा है।

भिन्न २ प्रेसों में छपने, प्रकाशन की व्यवस्था ठीक न होने और मूल कापी तक प्राप्त न होने से प्रूफ संशोधन में अशुद्धियों का रहना सम्भव है इसलिये पाठक क्षमा करेंगे।

आजीवन सदस्य——

सार्वदेशिक सभा ने अपने नियमों को संशोधन करके इतना सुगम बना दिया है कि आर्य्य समाज के सदस्य केवल पांच सौ रुपये देकर सभा के आजीवन सदस्य बन सक्ते हैं। प्रसन्नता की बात है कि इस नियम से लाभ उठा कर देहली के प्रसिद्ध आर्य्य ठेकेदार ला० ज्ञानचन्द जी ने ५००) सभा के कोष में दाखिल कर के अपने को आजीवन सदस्य बना लिया है। अन्य आर्य्य नर नारियों को भी इस नियम से लाभ उठाना चाहिये—

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता और अवतारवाद

:०:

(लेखक—श्री स्वामी मङ्गलानन्द जी पुरी)

:०:

कहते हैं कि भगवद्गीता में जो कुछ है वह उपनिषदों का सारांश है—गीता महात्म्य में यह श्लोक आया है:—

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धो गोपाल नन्दनः ।
पार्थोवत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ॥

अर्थात् सारी उपनिषदों रूपी गाय का दूध भगवद्गीता के ७०० श्लोकों में दुह कर रख दिया गया है। यह बात कहां तक सत्य है इसकी छान बीन करने की आवश्यकता है, हमारा कथन यह है कि गीता की और सारी हो बातें चाहे उपनिषदों के आधार पर कहीं गई हों परन्तु यह अवतारवाद का ख्याल तो सर्वथा नवीन तथा स्वतन्त्र है। जिस का लेश मात्र भी संकेत हमें उपनिषदों में नहीं मिलता। उपनिषदों से अभिप्राय केवल उतने मात्र प्राचीन उपनिषदोंसे है जिन पर श्री स्वा०शङ्कराचार्य महाराज का भाष्य विद्यमान है—अन्य उनके पश्चात् की रचना होने से अमान्य हैं।

गीता की चौथी अध्याय में यह वायदा किया गया है कि जब २ धर्म की कमी हो जाती है, तब २ मैं ससार में उस कमी को दूर कराने के लिये आता हूं। यह या ऐसा कोई वाक्य किसी भी उपनिषद् में हम नहीं पाते, न ही वेदों में या अन्य गीता से प्राचीन ग्रन्थों में पाते हैं।

अगर किसी गीता प्रेमी सज्जन ने कभी इस विषय पर ऊहापोह किया हो और उक्त श्लोक (यदा यदा हि०) का विषय वाक्य उपनिषदों, वेदों, षट्दर्शनों में देखा हो तो मेरी उन पंडित विद्वान से नम्र प्रार्थना है कि अवश्य मुझे सूचित कर देने की कृपा करेंगे। मेरा तो निश्चय है कि यदि अर्थों में खेंचातानी न की जाय वरन सरल शब्दार्थ से काम लिया जाय तथा भाष्यकारों के भाष्यों पर आधार रक्खा जाय तो कदापि ऐसी ईश्वरीय प्रतिज्ञा का वाक्य नहीं मिल सकता।

आर्य समाजों में भी गीता का काफी प्रचार हो रहा है। इसलिये गुरुकुलोंके स्नातकों आदि से भी मेरा यह अनुरोध है कि अगर आपने पूर्व में कभी इस विषय पर ध्यान न भी दिया हो तो एक बार उपनिषदों, वेदों, को खास।इस नियमसे पढ़ डालिये कि देखें यह विषय वाक्य कहीं है भी या नहीं !!

दर्शनों के ८ प्रमाणों में से एक शब्द प्रमाण है।(आप्तोपदेशः शब्दः) तदनुसार हिन्दू धर्मी (सनातनी आर्यसमाजी दोनों) वेदों को श्रुति अर्थात् परमेश्वर की ओर से हमें दिया गया मानते हैं। आर्य समाजी केवल ४ वेदों संहिता मात्र को परन्तु सनातनी उपनिषदों को भी श्रुति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अन्दर मानते हैं लेकिन भगवद्गीता स्वयं तो ईश्वरीय (श्रुति) नहीं है । अगर उसकी बातें वेदों उपनिषदों के अनुकूल पोई जायं तब तो माननीय होंगीं नहीं तो शब्द प्रमाण से खारिज समझी जायेंगी ।

इस बात का विचार करते हुए हम समझते हैं कि गीता प्रेमी धर्मात्मा हिन्दुओंको इस विषय की (Importance) आवश्यकता का अवश्य ध्यान रखना चाहिए । थोड़ी देर के लिए मान लीजिये कि गीता की यह बात स्वतन्त्र सिद्ध हो जाय (जैसा कि मेरा निर्णय है) तो क्यों फिर गीता को वेदानुकूल ग्रन्थ माना जाय, या इन श्लोकों को क्षेपक क्यों न मान लिया जाय ?

हम गीता की इबारत को वेदो उपनिषदों के लेखशैली से मिलाकर पढ़ते हैं तो इस अवतार-वाद के कारण बड़ा भारी भेद दोनों के लेख शैली में प्रत्यक्ष दीखता है । गीता में हम पढ़ते हैं :—

१-मेरी अध्यक्षता में प्रकृति संसार रचती है। (६, १०)

२-मैंने इस सब जगत को रचा है। (९, ४)

३-मैं इस जगत का माता पिता आदि हूं। (९, १७)

४-मुझ में तू अपना मन लगादे। (१२, ८)

५-जो कोई अपना मन बुद्धि मुझमें लगा देता है वह मेरा प्यारा भक्त है। (१२, २४)

६-तू मेरी शरण पकड़ ले तो मैं तुझ को सब पापों से छुड़ा दूंगा। (१८, ६६)

इत्यादि २। परन्तु उपनिषदों वेदों में एक भी वाक्य हमें ऐसा नहीं मिलता—वहां जो मिलता है वह ऐसे ढङ्ग की इबारत में है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से बात कर रहा है—गीताके सदृश परमेश्वर की ओर से मनुष्य को सम्बोधित नहीं किया गया है। उपनिषदों में प्रायः गुरु शिष्य संवाद चलता है। कठमें नाचिकेता बालक प्रश्न करता है यम या मृत्यु उत्तरदाता हैं, "यम" देवता माने गये हैं। अतः लेखक चाहता तो "यम" के मुँह से उक्त प्रकार की गीता जैसी इबारत कहला देता पर नहीं उस सच्चे ज्ञानी महात्मा ऋषि ने ऐसा नहीं किया उनकी इबारत का नमूना देखिये।

विज्ञान सारथिर्यस्तु मनः प्रग्रहवान्नरः।
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम्॥
(कठ ३, ९)

अर्थ—जिस मनुष्य का विज्ञान सारथी है और मन को लगाम बना रक्खा है वह (इस संसार रूपी) यात्रा से पार होकर उस विष्णु के परम पद को पा जाता है।

उपनिषदों से और आगे बढ़ें तो हमें वेदों में ऐसे वाक्य मिलते हैं कि:—

(१) अग्ने नयसुपथा---हे अग्नि महाराज! मुझको अच्छे मार्ग से ले चलिये।

(२) अग्नि मीले पुरोहितम्-अग्नि महाराज की जो ऐसे २ हैं, मैं स्तुति करता हूं।

(३) तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि--हे अग्नि महाराज! आप शरीर की रक्षा कर सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं इस लिये मेरे शरीर की रक्षा कर दीजिए।

इत्यादि इत्यादि—गीता के सदृश अगर वैदिक शब्द होते तो यों होना चाहिए था कि मैं अग्नि (परमात्मा) तुझ मनुष्य के शरीर की रक्षा करदूंगा। तू घबरा मत इत्यादि। वेद ईश्वर की ओर से होने के कारण अगर उक्त प्रकार की इबारत में उन के लेख होते तो कोई शङ्का भी न हो सकती थी। परन्तु ऐसा नहीं है, क्यों? इस लिए कि वेदों के लेखक ऋषि लोग सच्चे महात्मा थे। जब कि उनके सामने कोई इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि देवता या सब देवों का महादेव परब्रह्म परमात्मा प्रत्यक्ष बैठा नहीं था तो झूठ मूंठ वैसी इबारत बनाकर अपने आत्माको झूंठा क्यों बनाते।

परन्तु समय बदल गया। गीता को श्लोक बद्ध करने वाले लेखक के सामने दूसरे प्रकार का संसार उपस्थित हो गया। वही मांग खपत (=demaud and supply) का सिद्धान्त है जैसी मांग थी वैसी पूर्ति की गई।

श्री कृष्ण अर्जुन का संक्षिप्त संवाद जो ७०० नहीं केवल १०० वरन् ५० श्लोक मात्र में आ सकता था परम्परा गत कण्ठाग्र कर के सैकड़ों वर्ष सुरक्षित रक्खा गया। इतनेमें अवतारवाद का प्रचार बढ़ता गया। श्रीकृष्ण जी महाराज के शरीरान्त तक किसी ने अवतार का स्वप्न भी न देखा था। पश्चात् धीरे २ वह तो मनुष्य क्या देवता थे; अजी वे तो साक्षात् परमेश्वर ही थे इत्यादि प्रशंसा पर वाक्योंकी वृद्धि होते २ दस, फिर २४ अवतार माने जा कर श्री कृष्ण जी को सर्वोच्च दरजा पूर्ण १६ कला देदिया गया।

यह सब कार्यवाही १००० वर्षों में हुई होगी। अतः श्रीकृष्ण जी के १००० वर्षों के पश्चात् वर्तमान गीता के लेखक ने इस को यह रूप देकर संसार में एक नवीन युग उत्पन्न कर दिया।

गीता काल से पीछे का सारा संस्कृत साहित्य १८ पुराण, १८ उपपुराण, अनेकों तन्त्र ग्रन्थ, १०८में से १२छोड़कर शेष ९६ नकली उपनिषदों तथा अनेकों आधुनिक लेख मालायें इसी प्रकार की इबारतों से भरपूर है कि परमेश्वर मानों मनुष्य के साथ बातें कर रहा है। भारत से बाहर जितने मज़हब खड़े हुये (और अवश्य ही उन का काल गीता रचना समय से पीछे का ही है) सबने इसी प्रणाली को अपनाया। पारसियों की जिन्दावस्था में हम पढ़ते हैं तो यही कि कोई महाशय खास परमेश्वर से प्रश्न करते हैं कि तू ने यह संसार कैसे रचा और हम को क्या २ करने तथा क्या २ न करने की आज्ञा देता है। यहूदियोंके तौरेत में यों आता है कि हज़रत मूसा के साथ परमेश्वर बादलों की ओट में छिप कर बातें करता और खूब बातें करता था। ईसाइयों की इंजील में तो गीता के अनेकों श्लोक ज्योंके त्यों अनुवादित पाये जाते हैं। गीतामें कहा गया था कि मेरी भक्ति करो तो मैं तुम्हें मुक्ति दे दूंगा। ईसा ने कहा कि मेरा बाप मेरी सिफारिश से तुमको मुक्ति देवेगा। सब से अन्तिम धार्मिक पुस्तक संसार में कुरान है उस पर भी गीता का रंग चढ़ा है उस में परमेश्वर अपना सन्देश भेजता है कि ऐ मुहम्मद! कह दे लोगों से कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा ऐसा करें, इत्यादि।

निदान, गीता के लेखक ने इस में अवतार वाद का ऐसा जबरदस्त रंग चढ़ाया है कि हम देखते हैं धार्मिक जगत के दो विभाग बन गये हैं। एक गीता से पूर्व का (वेदों, उपनिषदों दर्शनों का) जहाँ मनुष्य प्रश्न कर्ता और मनुष्य ही उत्तर दाता बन कर पुस्तक निर्माण करते हैं, परंतु दूसरा विभाग गीता के पश्चात् का ऐसा है जिस में परमात्मा के मुँह से कुछ कहलाये बिना उनका काम नहीं चल सका।

यह प्रणाली बढ़ते २ इतनी बढ़ गई कि मनुष्यों का देवताओं के साथ साक्षात्कार कराना, पुराण रचने वालों के बायें हाथ का खेल बन गया। एक सत्यनारायण जी की कथा का भारी रिवाज़ है उस में यह आता है कि परमेश्वर—विष्णु-भगवान एक ब्राह्मण का भेष बदलकर उस बनिये से बात चीत करने आ गये थे। पुराणों में हम पढ़ते हैं कि अमुक ने ब्रह्मा, विष्णु, शिव या इन्द्र देवता की तपस्या की और कहा कि हम तुझ से प्रसन्न हैं वरदान मांग ले,परन्तु चार वेदों के २० सहस्र मन्त्रों में ऐसी एक भी घटना न घटी, न उन बेचारे ऋषि महर्षियों को कभी किसी देवता का साक्षात् दर्शन मिला, न वे उन पर प्रसन्न होकर वरदान देने को आये। कारण यह कि तब तक यह गढ़न्त उन वैदिक ऋषियों के दिमाग़ों में न घर कर सकी थीं कि परमेश्वर अवतार लेकर मनुष्य रूप भी बन जाता है इत्यादि—

हमारे भाइयोंने एक कदम और आगे ब या और नारद जी विष्णु, ब्रह्मा शिव आदि के साथ वार्तालाप कराया या भृगु जी ने जाकर विष्णु भगवानकी छाती पर एक लात जमा दियो। कहीं शिव पारबती आकर गङ्गा तट पर लोगों से बातें करते हैं, कहीं बेचारे शिव जी को भस्मासुर के भय से (कि वह सर पर हाथ रख देगा तो मैं भस्म हो जाऊंगा) भाग कर शरीर रक्षा करनी पड़ती है इत्यादि इत्यादि तो संस्कृत पुस्तकों (पुराणों) की करामातें थीं। हिन्दी वाले और और भी आगे बढ़ गये इन्होंने (भक्तमाल आदि में) ऐसी कथायें रची कि एक ब्राह्मण पुजारी कहीं जाने लगा अपने १२ वर्ष वाले बालक को कह गया कि ठाकुर जी की पूजा कर देना। उस सरल हृदय बालक ने जब ठाकुर जी को भोग लगाया और वह समझता था कि मूर्ति भोजन करती होगी पर ऐसा न हुआ तो इस बालक ने प्रतिज्ञा की कि जब तक ठाकुर जी न खायें तब तक मैं भी अन्न जल ग्रहण नहीं करूंगा। निदान तीन दिनों के उपवास व्रत से ठाकुर जी प्रसन्न हो गये और मूर्ति से निकल कर भोजन खाया तब उस बालक ने भी प्रसाद पाया।

इस से आगे एक मंजिल और बढ़िये तो यह दृश्य पाया जायेगा कि एक चपरासी किसी दिन साधुओं ब्राह्मणों के आतिथ्य में लगा रह गया अपनी नौकरी (पहरा देने) पर न जा सका तो श्री विष्णु भगवान स्वयं उस का रूप धारण करके पहरा दे आये।

इत्यादि इत्यादि गाथाओं से पाठक समझ सकते हैं कि इस अवतार वाद ने जिस का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यसमाजों के जीवन और मृत्यु का प्रश्न

:o:

(ले०—श्री० आत्माराम जी अमृतसरी 'राज्य रत्न' बड़ौदा)

:o:

आर्य समाजको जन्मे ५० वर्ष हो लिये। इस के जीवन के तीन भाग हैं। पहिला भाग १५ वर्ष का जानो। इस में धर्म-भाव की प्रधानता होने से सदाचार वा आर्य जीवन की देश में वृद्धि हुई। यद्यपि स्कूल कालेज इस आदि काल में भी खुले तथापि धर्मभाव ही उन की आधार शिला थी। आयुर्वेद में लिखा है कि तीन वैद्य समान योग्यता के हैं। पर जो वैद्य धर्म दृष्टि से वैद्यक का धंदा करता है वह ब्राह्मण। जो वैद्य यशकी दृष्टि से उक्त धंदा करे वह क्षित्रिय और जो वैद्य सेठ बनने के भाव से धन कमाता है वह वैश्य। ठीक इस दृष्टान्तके अनुसार हम समाज के आदि काल को कालिज आदि होने पर भी धर्मसभा के रूप में देखते वा कह सकते हैं। आर्यसमाज आदि काल में वैदिक ब्राह्मण समाज वा "आर्यधर्म-सभा" के रूप में रह चुका है।

दूसरा भाग इस के जीवन का भी १५ वर्षों का ही जानो। इस युग में आर्यसमाज आप को 'विद्यासभा' के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टि पड़ेगा। गुरुकुलें, कालिजें, हाईस्कूल आदि इस युग की संपत्ति हैं।

इस के पीछे का युग जो इस के जीवन में आता है उस में समाज के अनेक नेता राजनैतिक क्षेत्रमें उतरकर देश नेता पद को प्राप्त करते हैं। पूज्य महात्मा श्रद्धानन्दजी और पूज्य पंजाब केसरी श्री लाजपतरायजी इस युग में राज्यक्षेत्र में काम करते पाये जाते हैं। इसी वीरयुग में युवक सैकड़ों की संख्यामें जेल गये, महात्मा गांधीजीके कहने पर, जो हिन्दू मुसलिम प्रेमका प्रयोग करना चाहते थे। वह प्रयोग असफल हुआ यह हम सब जानते हैं। इसी युगमें महात्मा गांधीजी ने यवन मौलवियोंको प्रसन्न रखने की विचित्र नीति से धर्ममूर्त्त परम तपस्वी महर्षि दयानन्द और उन

आरंभ गीता के उस सुविख्यात वाक्य (यदा यदा हि०) से हुआ है धार्मिक जगत की कैसी काया पलट दी है और हिन्दू जनता के खयालात को वेदों, उपनिषदों, व दर्शनों से कितना दूर जा पटका है। तथा अहिन्दू जनता (मुसलमान-ईसायों आदि) पर भी कितना भारी प्रभाव डाला है। अब विचारणीय यह है कि क्या इस मन्तव्य से (चाहे वह वेदादिसे विरुद्ध ही सही) मनुष्यों की धार्मिक उन्नति होनी सम्भव है या पतन, इस बातको विद्वान् बुद्धिमान सज्जन गण विचार करें और उचित समझें तो लेखद्वारा अपने अमूल्य विचारों से जनता को लाभ पहुंचायें।

—o—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश पर असत्यपूर्ण आक्षेप किये। समाजने वे सब सहे और भुलाने का यत्न किया। महात्मा गांधी जी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से धनके लोभी आर्यसामाजिक संस्थाओं को अपने दानी भक्तों द्वारा धन दान दिला कर मोह लिया और मित्रता चालू हुई। इसी वर्तमान युग में आर्य वीर दल सर्वत्र बन गये और भारी संख्या में आर्यधर्म वीरों के भारी बलिदान हुए। इन सब बातों ने समाज के अन्दर क्षात्र धर्म के दृढ़ भाव जगा दिये।

आज कल अनेक आर्यबन्धु साबरमती सेना में भरती होनेकी चिन्ता कर रहे हैं। हम उन से बल पूर्वक निवेदन करेंगे कि वह याद रक्खें कि आर्यसमाज पोलिटिकल बौडी नहीं; करण कि इसका प्रतिनिधि बनकर लाला लाजपतराय वा स्वामी श्रद्धानन्द कभी राष्ट्रीय सभा (कांग्रेस) में नहीं गये।

रूसकी क्रांतिके गीत गाने वाले अनेक आर्य लेखक हैं पर समाज को गौरव है,

महात्मा नारायण स्वामी

का जो सार्वदेशिक पत्र में रूस के क्रांति लोला के दोषों को खोलकर वैदिक धर्म की दृष्टि से दिखा कर भारतीय आर्यों को अंधी नकल करने से बचा रहे हैं। यदि उक्त स्वामी समान आर्य पुरुष विचार करें तो कितना कार्य हो सकता है।

विज्ञानाचार्य ड० बोस गुण कर्म से ब्राह्मण हैं वह कभी राष्ट्र सभा (कांग्रेस) के सभापति बनने वा साबरमती सेना में भरती होने नहीं जावेंगे।

आर्यसमाज में जो लोग ब्राह्मणवर्ण की रुचि रखते हैं वे मास्टर, अध्यापक, गुरु, आचार्य, संपादक, उपदेशक तथा "संन्यासी-महोपदेशक महात्मा" का उत्तम काम मरण पर्यन्त करते चले जावेंगे। सार्वदेशिक सभा इङ्गलैंड में योग्य उपदेशक श्री डाक्टर भक्तरामजी द्वारा धर्म का प्रचार कैसा उत्तम करा रही है, इस काम की जितनी स्तुति करें थोड़ी है।

धर्मसभा और विद्या सभा तो आर्यसमाज में थीं पर अब लाहौर में आर्य स्वराज्य सभाके नाम से आर्यराज्यसभाके कार्य को उत्तमता से उन्होंने हाथ लगाया है। जो आर्यबन्धु राष्ट्रसभा वा साबरमती सेना में भरती होकर क्षात्र गुणकर्म धारण करना चाहें उनको लाहौर की आर्यस्वराज्यसभाका सभासद बनकर देशकी क्षात्रभावसे सेवा करनी चाहिये।

ता० ३०।३।३० को पूज्य महात्मा स्वामी शङ्करानन्द जी का उत्तम तथा सारगर्भितभाषण कन्या गुरुकुल इटोला बड़ौदा के महोत्सव पर हुआ। यह वही महात्मा स्वामी हैं जो सिलोन (लंका) में वैदिक धर्म का भारी प्रचार करके आज कल ही वापिस आये हैं।

आप ने कहा कि :—

'व्यक्ति रूपसे प्रत्येक आर्यसभासदको अधिकार है कि चाहे वह किसी कार्य वा आन्दोलन में अपने आप को लगाय परन्तु आर्यसमाज और उसके स्थापन किये हुए गुरुकुल कन्या विद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुखमा

(ले०—श्रीयुतजैनेन्द्रकुमार जी)

सुखमा अब २२ वर्ष की है, वह बहुत पढ़ लिख गई है। अक्षरों की शिक्षा उसे चाहे किसी ने दी हो, परन्तु ज्ञान की, अर्थात् विचारों की शिक्षा उसे अपने पिता सत्यप्रकाश और स्वामी सत्यानन्दसे मिली है। सच यह है कि उसकी अक्षरों की शिक्षा के सम्बन्ध में विशेष चिन्ता भी नहीं रखी गई है। स्वामी जी (जो किसी भी कार्य में लोक प्रसिद्ध नहीं हैं) कहा करते हैं, बहुत से अक्षर, शब्द, अलंकार और भाषा और विद्या के बड़े बड़े आडम्बर खड़े करके मनुष्य अपने को धोखे में डालना चाहता है। विद्या इतनी सीखनी पर्याप्त है, जिसमें तुम स्वयं उलझ न जाओ। नहीं तो विद्या का जाल इतना बेढब है कि तुम सहज ही उसमें खोये जा सकते हो। अगर तुम अपने को पाना चाहो, खोना नहीं,तो विद्या छोड़ कर ज्ञान के पीछे पड़ो। विद्या का तो सहारा भर लो और वह ज्ञान बाहर से नहीं, भीतर से मिलेगा।

—इस अद्भुत प्रकार से शिक्षित होने के बाद एक दिन सुखमा ने पिता से पूछा "पिता विधवा विवाह आन्दोलन के क्या मायने हैं ?

—पिता ने कहा-"मायने और क्या ? यही कि विधवाओं का विवाह होना चाहिये।"

—सुखमा—"यह कौन कहता है? क्या विधवाएं—"

—पिता—"नहीं विधवाएं तो नहीं,आन्दोलक पुरुष ही कहते हैं।"

—सुखमा –"क्यों ?"

—पिता-"उनका कहना है कि विधवाएं नहीं कहती इसीलिये उन्हें कहना पड़ता है।विधवाओं में जब तक यह कहने का साहस न आये तब तक वह कहते हैं। समय की आवश्यकता ठहरी न रहेगी। उनमें यह साहस भी तो प्रचार किये बगैर नहीं आ सकता।"

—सुखमा ने चिढ़ कर कहा–तो क्या पुरुषों के साहस का सारा सदुपयोग यहीं हो जायगा।

वा कालेज तथा स्कूलों को उस आन्दोलन का भाग बनाना वा ब्रह्मचारी वा विद्यार्थियों को उस आन्दोलन में भाग लेने की तरफ प्रेरणा करना वा उस में भाग लेने से न रोकना यह सब बातें आर्य समाज के शिर पर कलङ्क रहेंगी और जिन लोगों ने आर्यसमाज के प्रचार से प्रेरित होकर इन संस्थाओं को धन दिया है अथवा अपने लड़के लड़कियों को अर्पण किया है उन लोगों के साथ विश्वासघात करने का पाप आर्यसमाज के शिर पर होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं नहीं समझ सकती कि समय की आवश्यकता उन्हीं को बली बना कर उन्हीं के मुख से खिरना चाहती हैं ? विधवाओं के दुखदर्द में यह क्यों मजा लेते हैं, विधवाओं के ही सुधार का क्यों ठेका उठाते हैं । क्या उनके अपने पास सुधारने कुछ नहीं है ?

—बेटी का आवेश पिता की समझ में बिलकुल न आया । उन्होंने पूछा—तो तुम क्या चाहती हो ?

—सुखमा ने कहा-मैं इस आन्दोलनमें भाग लेना चाहती हूं ।

—पिता ने फिर पूछा—तो मुझ से क्या चाहती हो ?

—सुखमा—आपकी क्या आज्ञा है ?

--पिता-मेरी आज्ञा । सुखमे ! मैं कह चुका हूं, मेरी आज्ञा कुछ नहीं है । जो तुम्हारी आत्मा कहे वही तुम्हारे लिये आज्ञा है ।

—सुखमा-आप की आत्मा क्या कहती हैं?

—पिता--मेरी आत्मा कहती है कि इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें बिलकुल तुम्हारे ही ऊपर छोड़ दूं ।

यह सुन कर सुखमा चली गई और इसी आवेश में उन्होंने एक लेख लिख डाला । लिखा कि 'युवक समाज रक्षा की और समाज हितकी सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर मान कर और अपने से सर्वे-सर्वा समझ कर जो स्त्रियों के कर्त्तव्यके सम्बन्धमें अपने विधान जारी कर दिया करते हैं, यह उन का कोरा दम्भ है । उन्हें ऐसा कोई अधिकार नहीं। स्त्रियों का हित किस में है । स्त्रियों को ही समझने दीजिए और स्त्रियों को ही कहने दीजिए । इस सम्बन्धमें पुरुषों का ज्यादा सचेष्ट होना कोई उन के लिए शोभा की बात नहीं है जिन उदाहरणों को देकर विधवा-विवाह का औचित्य प्रतिपादित किया जाता है, उन में हर जगह कितना अधिक उत्तरदायित्व पुरुष को होता है, यह विचार कर पुरुषों को शर्म आनी चाहिए । यह न करके वह विधवा के सुधार का दम भर कर आगे आते हैं समझ नहीं पड़ता ।

जब पुरुषों के लिए अपनी पशुवृत्ति चरितार्थ करने के लिए समाज ने अपनी स्वीकृति से कई भागे जायज़ कर रक्खे हैं, तो क्यों नहीं पुरुष उसीमें सन्तुष्ट रहते, वे जितने चाहें विवाह कर सकते हैं,जिस अवस्था में चाहें और जितनी बार चाहें विवाह कर सकते हैं; तब भी वे विधवा विवाह के लिए लालायित हो रहे हैं । यह देख कर लोभ आये बिना नहीं रह सकता ! विधवा विवाह को वही उचित ठहरा सकते हैं जो प्रवृत्तियोंको चरितार्थ करनाही धर्म मानते हैं, किंतु धर्म यह नहीं है । प्रवृत्तियों का दमन बलात् ज्ञान यही धर्म है,वैधव्य से आज जो थोड़ा बहुत धर्म बाकी है, उसकाभी नाश चाहना कोई शोभा की बात नहीं है । अन्त में लिखा प्रवृत्ति की दुर्दम्यता स्वीकार करती हूं । परन्तु उसके लिये अवसर दिये जायं, उसके लिए साधन जुटाये जायें, उसे समाज की ओर से सभी करार दिये जाने के लिए प्रयत्न किये जायें, प्रवृत्ति को पूर्ण करने के लिए हम मार्ग-निकालें, उन्हें हम पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह नाम देकर उचित ठहरावें, इन जघन्य घातों को पुण्य कहा जाना, मैं कभी बर्दाश्त नहीं कर सकती।

लेख बहुत ही जलती भावनाओं को लेकर जलती भाषा में लिखा गया था। अखबारों में छपा तो उसने खासा शोर सा मचा दिया। वह लेख जब सत्यप्रकाश ने स्वामी सत्यानन्द जी को दिखाया और उनसे 'सुखमा' के अपने से मिलनेकी बात कह कर पूछा "आप क्या समझते हैं? तो स्वामी जी ने भी प्रत्युत्तर में पूछा आप क्या समझते हैं?

पिता ने कहा—मैं तो यह समझता हूं पुरुषों के ऊपर सुखमा का गुस्सा अयथार्थ नहीं है।

स्वामी ने कहा—सो बात नहीं उस का असली गुस्सा पुरुषों पर नहीं अपने ऊपर है।

सत्य प्रकाश को सुन कर आश्चर्य सा हुआ। स्वामी जी ने कहना प्रारम्भ रक्खा। "बात कुछ गहरी नहीं है। सुखमा अपने साथ बड़ा युद्ध कर रही है। आवेश और उत्सुकता उसी के परिणाम हैं। प्रवृत्ति के वह इसलिये ज्यादा सिर है कि वह उसे तङ्ग करती है और वह उन्हें बड़ी झुंझलाहट देकर दवा पाती है। पर वह भूलती है। हमेशा प्रवृत्तियों से लड़ते रहना ही तो जीवन की सार्थकता नहीं है। कुछ आवश्यकतायें हैं जो शरीर के अस्तित्व के साथ एकमएक हैं। उन्हें कमज़ोरियां कहने से न नफा है न हानि। उन आवश्यकताओं का जीतना संभव तो है, उस पर विजय के लिये अपना शरीर ही दे बैठना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। वह विजय इतनी कीमती नहीं। दिन रात मस्तिष्कको और शरीरको आग पर जलाये रखकर अगर कुछ देर तक अपनी प्रवृत्तियों को काबू में रख भी सकें, तो क्या? यह जीत तो बहुत ही महंगी पड़ी। अगर इस के कहते कुलक्षण की हार स्वीकार कर तुम्हें मस्तिष्क और देह का दीर्घ कालिक स्वास्थ्य लाभ हो तो, इस में क्या हर्ज? इस समय बच्चा सुखमा अपने से लड़ने को इतनी व्यस्त है कि वह स्वस्थ्य नहीं। कुछ रोज में जब उसके आवेश का शमन हो जायगा, तब सब ठीक हो जायगा मैं उससे मिलना चाहता हूं।

> विचारशील पाठकों से अनुरोध के साथ निवेदन है कि वे इसे ध्यानके साथ पढ़ें। वे देखेंगे यह कहानी ही नहीं है वरन एक ज़रूरी सामाजिक समस्या पर नया ही प्रकाश फेंकता हुआ एक महत्वपूर्ण विवेचन है। विवाह—विशेषकर विधवा विवाह के प्रतिपादन का यहां हमें नया ही दृष्टि बिन्दु मिला है जो इस से पहिले शायद ही किसी ने सामने रक्खा हो। आशा है पाठक मनन पूर्वक पढेंगे और लाभ उठावेंगे। कहानी का पिछला भाग दिसम्बर १९२६ के अङ्क में है।
>
> —सम्पादक

सत्य प्रकाश ने स्वामीजीके शब्दों को ध्यान से सुना; पर सुनकर प्रसन्न न हुए। एक तो यह शब्द कुछ धर्म आदर्श से गिरते हुये मालूम हुए, और दूसरे यह शब्द उसकी लड़की के सम्बन्ध में थे।

तीसरे रोज़ सुखमा स्वामी जी के सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित हुई। स्वामी जी ने कहा "बेटी, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। आत्म चिन्तन से बढ़ कर मनुष्य के लिये कोई सौभाग्य नहीं। उसी का दूसरा नाम आत्मशोध है। तुम उस ओर बढ़ रही हो यह जानकर मैं कितना प्रसन्न हूं, कैसे बताऊँ?

सुखमा ने कहा—आपने मेरा लेख देखा होगा। क्या मैं ग़लत हूं?

स्वामीजीने कहा-नहीं बिलकुल नहीं। लेकिन सम्पूर्ण सत्य किसी ने देखा है? इस लिये जो ग़लत नहीं है, वह ग़लत भी हो तो क्या पता?

सुखमा बोली—मैं विधवा विवाह का बिलकुल नाम सुनना नहीं चाहती।

स्वामी जी ने कहा—बेटी, विधवा विवाह का नाम सुनने की इच्छा करना पाप नहीं है न विधवा विवाहका नाम सुननाही पाप है। लेकिन यदि विधवा शब्दसे ही तुम्हें हठात् अपना ध्यान आ जाता हो और इस लिये तुम विधवा विवाह का शब्द न सुनना चाहती हो, तो भूल है।

सुखमा चुप रही। स्वामी जी ने ज़रा रुककर कहा—लोग सत्य से घबराते हैं पर अब तक की साधना से जो मैं समझा हूँ वह यह है कि धर्म और कोई वस्तु ही नहीं। पाप पुण्य, धर्म अधर्म ये धोखेके शब्द हैं। आज इन शब्दोंकी उलझनों के बीच में सत्य को अधिष्ठित करना होगा।

सुखमा निस्पंद मौन थी। स्वामीजी कह रहे थे विधवा-विवाह को विभीषिका समझ बैठना ठीक नहीं, न उसे उत्कर्ष समझना ठीक है। यह तो सब अप्रिय सत्य की स्वीकृति है। जीवन को प्रत्येक कार्य ही यह है। शुद्ध पुण्य तो कोई वस्तु ही नहीं है। पुण्य भी तो अशुद्ध ही है क्योंकि वह कर्म की वर्गना है। किन्तु अशुद्ध वस्तु भी शुद्ध होनेमें सहायक हो सकती है इस में चिढ़ने की तो कोई बात नहीं।

स्वामीजी ने फिर कहा—"समाज में आज असत्य की प्रतिष्टा है। जैसे सब से बड़ा धर्म सत्य है, वैसेही सब से बड़ा पाप असत्य है। इस असत्य को नाश करना ही होगा। मैं तुम्हें यह बतलाना चाहता हूं कि धर्मके ढोंग से पाप कहीं अच्छा है।

ऐसी अवस्था में पाप पाप ही नहीं है, धर्म है। आज जिस वस्तु को ढोंग के भीतर, असत्य के भीतर लुका छिपा रक्खा है, उस पर से ढोंग और असत्य के परदे को अलग हटा कर उसके वास्तव रूपको प्रगट करना और स्वीकार करना, क्या यह शुभ कर्म नहीं हैं? विधवा-विवाह और क्या है?

"एक बात और है, समाज नहीं चाहता कि विधवायें आदर्श विधवायें रहें। उस के नियम ही ऐसे हैं कि आदर्श विधवा भी अपने को पतित, नींच और कुमार्गी समझती हैं। यदि समाज को तुम्हारी तरह से प्रवृत्ति के संयम की चिन्ता होती, तो आज विधवा का आसन ऊंचा होता, विधवा प्रतिष्ठा और पूजाकी वस्तु होतीं। किन्तु आज सब कार्यों में क्या सामाजिक और क्या धार्मिक जहां सधवायें अधिकारतः प्रतिष्ठा की अधिकारिणी होती हैं वहां विधवायें बुरे ग्रह की तरह दूरही पर रक्खा जाती हैं। क्या सधवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी लिए प्रतिष्ठा पात्र है कि उसे संयमकी कम आवश्यकता है। ? वास्तव में समाज तुम्हारी तरह से संयम नहीं चाहती। संयम का आदर नहीं चाहती। वह तो उन असत्यों की प्रतिष्ठा चाहती हैं जो उसने अपने पोषण में खड़े कर रक्खे हैं।"

स्वामी जी और भी कहना चाहते थे, कि सुखमा ने देखा संयम को प्रतिष्ठा की दरकार क्या है ? उस संयम का भी कुछ मूल्य है, जो दूसरों के आदर पर ही ज़िन्दा रहता है ?

—स्वामी "सो तो ठीक ही है, मैं समाज की बात करता हूं वह जो अधर्म धर्म को बहुत शोर मचाती है वह धर्मकी रक्षाकी खातिर नहीं केवल अपनी रक्षा के खातिर।

सुखमा—स्वामी जी ! क्या संयमका पूर्णतः पालन किसी तरह भी सम्भव नहीं ?

स्वामी—है। एक तो कठोर तपस्या से, जिसका अंत शरीर विनाश है। दूसरे मन, वचन तन को किसी एक कार्य में लगा देने से। किंतु दोनों तजुर्बे बड़े ही खतरे के हैं। आदमी जरा फिसला कि बुरी तरह गिरता है और चूंकि उसे बाहरी बातों की परवाह रहती है। इस से वह असत्य को आश्रय पकड़ता है। असत्य का पोषण पाने पर पतन दुर्निवार्य और भयङ्कर हो जाता है। ऐसा आदमी रहता तो साधु है, पुजता भी है पर भीतर से और वास्तव में क्या है सो न पूछो।

सुखमा—जो पूर्ण आदर्शका अनुगामी होकर पूर्ण संयमी बनना चाहता है, उस के लिये क्या मार्ग आप बतायेंगे ?

स्वामी—पहली बात यह कि किसी बाहरी रूप (external form) की चिन्ता न करे। अपना फैसला अपने से लें; दूसरे के मतामत की चिन्ता न करे; इसके लिये आवश्यक है कि वह विवाह कर ले।

सुखमा—पर पहाड़ टूटा। स्वामी जी ने अश्वासन देते हुए कहा—बेटी, डरो मत ! नग्न सत्य ऐसा ही होता है। विवाह हो जाने पर भी मनुष्य को क्यों न संयम से रहने का प्रयत्न करे। समझ में नहीं आता विवाह से अवश्य अलाभ है कि प्रलोभन समीप रहता है। किंतु यदि प्रयत्न किया जाय, तो संयम पालन में भी पति पत्नी एक दूसरे की मदद कर सकते हैं। ऐसे दृष्टान्त असम्भव नहीं। मैं स्वयं ऐसे एक पति पत्नी को जानता हूं। किन्तु सब से बड़ा जो लाभ है वह यह है, कि आदमी फिसलता भी है तो सँभल सकता है। वह बुरी तरह नहीं गिरता और दूसरा बड़ा लाभ यह है कि इस प्रकार किसी बाहरी प्रतिष्ठा आदि को कायम रखनेकी चिंता नहीं रहती और अपना निरीक्षक वह खुद ही रहता है।

सुखमा को बड़ा जबर्दस्त धक्का लगा था। वह उस दिन फिर स्वामीजी से और कुछ न कह सकी। अगले रोज़ उसने कहा तो आज्ञा दीजिये।

—स्वामी जी ने पूछा—क्या बेटी ?

—सुखमा ने अकम्प स्वर और स्थिर दृष्टि से कहा-"मैं विवाह करूंगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—स्वामी जी ने कहा—"बेटी जल्दी न करो"।

—सुखमा—मैं आप को अपने को समझती हूं, गुरु जी !

—स्वामी-पर तुम्हारे जैसा संयमी पुरुष कहाँ है।

—सुखमा सो मैं कुछ नहीं जानती आप जानें।

—स्वामी-मैं जानूं ? अच्छा, मैं ही सही।

* * *

विवाह हो गया। विवाह के उपलक्ष में कुछ पत्रों ने "आधुनिक शिक्षा का कुत्सित उदाहरण" "स्त्रीकी उच्छं खलता" "कलियुगकी वानगी", "ढोंगी सत्यानन्द और उस की चेल" आदि शिष्ट शीर्षकोंके नीचे "दुष्ट भ्रष्ठा-ढोंगन आदि कई उपाधियां सुखमा को दे डालीं।

इधर किन्हीं पत्रोंने अपूर्व साहसिकताआदि टिप्पणियों द्वारा दिखलाया कि किस प्रकार यह विवाह आज कल की व्यभिचार ग्रस्त विधवाओं के लिये मार्ग प्रदर्शक होना चाहिए। और किस प्रकार उन्हें पाप की बहुत सी पोट बांधने की जगह परिमित संतोष से काम चलाना चाहिये। हम इन दोनों प्रकार के सम्पादकों को बहुत अकलमन्द नहीं समझते।

विवाह स्वामी के एक योग्य शिष्य सत्यकेतु से हुआ। सत्यकेतु संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित, अङ्गरेजीमें पूर्ण विलक्षण, किंतु सीधे सादे किसान हैं। सत्यप्रकाशने विवाह में योग दिया। विवाह किसी सभा की ओर से नहीं हुआ। स्वामीजी ने ग्रंथि-बन्धन करते समय कहा--"तुम दोनों साथ परमात्मा को पाओ, परमात्मा जो सम्पूर्ण सत्य है यही मेरा आर्शीवाद है।

* * *

सत्यकेतु और सुखमा-पत्नी हैं। ठीक है, संसार यही समझे। परंतु यह तुच्छ लेखक समझता है, वह देवी देवता हैं। अच्छा हो, हम उन्हें पति पत्नी कहें ही नहीं।

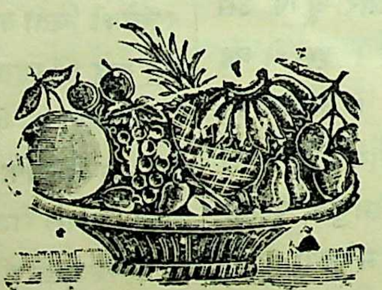

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म की सार्वभौमता

पुस्तकालय 112933 गुरुकुल कांगड़ी

—-*—

(लेखक—श्री स्नातक धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति सम्पादक 'वेद संदेश' मंगलौर)

:o:

क्या कोई धर्म सार्वभौम हो सकता है, यदि हां तो वह कौनसा है? यह प्रश्न है जो कोल्हापुर के राजाराम कालिज के एक विद्यार्थी ने गत १८ फरवरी को लेखक के 'ऋषि दयानन्द के जीवन और सन्देश' विषयक व्याख्यान के अनन्तर उससे किया। यही प्रश्न अनेक सज्जनोंको अनेक स्थानों पर करते हुए सुना गया है। इसमें सन्देह नहीं कि प्रायः हरेक मत के अनुयायी अपने २ मत की सार्वभौमता को सिद्ध करने का यत्न करते हैं किन्तु उनके लिये सार्वभौम धर्म के लक्षणों को अपने मत पर चरितार्थ करना असम्भव हो जाता हैं। 'सार्वभौम' का अर्थ केवल इतना ही नहीं कि जिस के अनुयायी उसे सारे संसार में फैलाना चाहें किन्तु वह जिसके सिद्धान्त सारी पृथिवी के लिये अथवा सारे विश्व के लिये सचमुच हितकारक हों। 'सार्वभौम धर्म' वही हो सकता है जो (१) मनुष्य मात्रके भ्रातृव का प्रतिपादन करने वाला हो, (२) जिसमें किसी प्रकार के जन्ममूलक जातिभेद वा ऊँच नीच भाव को स्वीकृत न किया गया हो (३) जिसमें समाज की रचना पूर्णतया, न्याय तथा समानता के सिद्धान्त पर अवलम्बित हो (४) जो विज्ञान और तर्क शास्त्र के बुद्धि संगत तत्वों के विरुद्ध न हो तथा (५) जिसमें मनुष्य मात्र की सर्वतोमुखी उन्नति (Harmonious develepement) के लिये आवश्यक सब तत्वों का प्रतिपादन हो। संसार में प्रचलित सब मतमतान्तरों को इस कसौटी पर कसा जाय तो वे उत्तीर्ण नहीं हो सकते। वर्तमान पौराणिक मत जन्ममूलक जाति भेद को स्वीकृत करते हुए और अस्पृश्यता [अछूतपन] के कलंक से कलङ्कित होते हुए, स्त्री जाति तथा शूद्रों के प्रति अत्यन्त हीन भावों को रखते हुए, तर्क विरुद्ध अनेक मिथ्याविश्वासों का समर्थन करते हुऐ, सार्वभौम कहलाने का कभी अधिकारी नहीं हो सकता। इसकी आधारशिला में ही असमानता और अन्याय के तत्व दृष्टिगोचर होते हैं। ईसाई मत सार्वभौम होने का सब से अधिक दावा करता है। इसके अनेक प्रचारक राजकीय सहायता के अतिरिक्त स्वार्थत्याग तथा तपोमय जीवन के कारण इसके संदेश को संसार के अत्यन्त दूर २ देशों और द्वीपद्वीपान्तरों में ले जाने में समर्थ हुए हैं। "Christ at the Round Table" इत्यादि पुस्तकों द्वारा रेवरेण्ड स्टेन्ली जौन्स आदि योग्य ईसाई मिशनरी संसार के सामने यह रखने का प्रयत्न करते हैं कि ईसाई मत ही सार्वभौम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसको अन्यमतों के सब उत्तम विचारक भी हृदय से स्वीकार करते हैं कि [चाहे ऊपर से इस भाव को प्रकट करने में उन्हें संकोच हो] केवल इस की शिक्षाओं के द्वारा ही संसार में शान्ति फैल सकती है। इसमें सन्देह नहीं कि ऊपर 'सार्वभौम धर्म' की जो कसौटियां दी गई हैं उनमें से पहिली तीन ईसाई मत पर बहुत कुछ चरितार्थ होती हैं ऐसा कहा जा सकता है। पर पिछली दो तो उसमें बिलकुल लागू नहीं होती। मैंने ईसाई मत के युक्तियुक्त समर्थन में जो अच्छी से अच्छी पुस्तकें अब तक पढ़ी हैं उनमें " Christ of the Indian Road " और 'Chirst at the Round Table'ये दो रेवरेण्ड स्टेनली जोन्स द्वारा लिखी पुस्तकें मुझे विचार तथा लेखशैली आदि की दृष्टि से विशेष पसन्द आई हैं। लेखक ने इन पुस्तकों में बड़ी योग्यता से हरेक बातको सामान्य उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करने का यत्न किया है पर आखिर वह ईसाई मत के तर्क और सामान्यबुद्धि विरुद्ध सिद्धांतों का कहां तक समर्थन कर सकता था। इसके लिये दो उद्धरण पर्याप्त होंगे। उस लेखक ने इस बात को दोनों पुस्तकों में कई जगह लिखा है कि हमारे [ईसाइयों के] सब से बड़े विरोधी आर्यसमाजी ही हैं। देखिये उनकी आशंकाओं को पादरी जोन्स साहब क्या जवाब देते हैं। हम उनके अपने शब्दों में ही इसे लिखेंगे। "Christ of the Indian Roads" में वे एक स्थान पर कहते हैं।

" An Arya Samajist asked me if I could prodnce in human history another example of the virgin birth. I replied that I Could not, for I could not prodnce another Jesus christ. He was the unique and therefore did the unique. " P. 194

अर्थात् एक आर्यसमाजी ने मुझ से पूछा क्या सारे मानवीय इतिहास में कुमारी से उत्पत्ति का और भी उदाहरण दे सकते हो? मैंने कहा नहीं, क्योंकि मैं दूसरा जीजस क्राइस्ट [ईसामसीह] पैदा नहीं कर सकता। वह अनुपम था और इसलिये उसने अनुपम कार्य किया। इस पर टीका टिप्पणी करना व्यर्थ है। पाठक! स्वयं विचार करें कि इस उत्तरके अन्दर कितना सार है।

एक दूसरे स्थान पर एक आर्यसमाजी की शंका का [जो वास्तव में बड़ी युक्तियुक्त है और जिस को हम लोग निःशंक होकर बड़े से बड़े पादरियों के आगे रख सकते हैं] उल्लेख करके पादरी जोन्स निम्न लिखित उत्तर देते हैं।

" I was asked by an ardent Arya Samajist " What have you in you religion that we have not in Ours ? I answered Shall I tall you in a word ? you have no Christ. just then is the great lack of the Non-Christian faiths. Fine things in their cultured thought but the real lack, the lack for which nothing else can atone is just

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Christ. They have no Christ. And lacking him, life lacks its supreme necessity.

अर्थात एक जोशीले आर्यसमाजी ने मुझ से पूछा कि तुम्हारी ईसाई मत में ऐसी कौनसी [उत्तम] बात है जो हमारे धर्म में न हो? उत्तर में मैंने कहा क्या मैं केवल एक शब्द में बता दूं? तुम्हारे धर्म में ईसामसीह नहीं। अन्य मतों की सब से बड़ी कमी यही है कि उनके पास ईसामसीह नहीं। उनकी सभ्यता और विचारों में अत्युत्तम अनेक बातें हैं किन्तु एक वास्तविक कमी, एक ऐसी कमी जिसकी पूर्ति किसी भी तरह नहीं हो सकती, वह है ईसा मसीह न होने की। उनमें ईसा मसीह की कमी है और उसके अभाव में जीवन की एक अत्यावश्यक वस्तु से वे वंचित हैं।

पाठकगण! आप ने देख लिया कि किस तरह एक अत्यन्त योग्य ईसाई प्रचारक अपने सिद्धान्तों का (जो सचमुच तर्क विरुद्ध हैं) समर्थन करने का विचित्र प्रयत्न करता है। यही बात इस्लामकी है। यहां पैगम्बर मुहम्मद साहेब के जीवन की घटनाओं या कुरान की शिक्षाओं का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं, किन्तु यह बात साफ है कि जो ग्रन्थ कुछ विशेष सिद्धांत को न मानने वालों का काफ़िर नाम से तिरस्कार करके उन्हें लूटना और सब प्रकार की हानि पहुंचाना बुरा नहीं समझता और जिसके अनुयाइयोंकी दृष्टिमें अब्दुलरशीद और इलमुदीन जैसे आदमी ग़ाज़ी, पीर इत्यादि नामोंसे प्रतिष्ठा पा सकते हैं वह मत कभी सार्वभौम कहलाने की अधिकारी नहीं। उसका भ्रातृत्व केवल मुसलमानों तक सीमित है। बाइबल में कुछ उत्तम आचार संबन्धी उपदेश होने पर भी उसका अधिक भाग चमत्कारादि के गपोड़ों से भरे होने के अतिरिक्त शारीरिक मानसिक उन्नति के अथवा सामाजिक राष्ट्रीय उन्नति के तत्वों का उसमें सर्वथा अभाव है जिसके कारण वह सार्वभौम नहीं हो सकता। वस्तुतः देखा जाय तो वैयक्तिक मत—वे जिन का आधार किसी व्यक्ति के इतिहास वा जीवन से अधिकतर रहता है और इस लिये उस व्यक्ति की न्यूनताओं अथवा उसके जीवन की ऐतिहासिक दृष्टि से सत्यता पर जो अवलंबित होते हैं वे 'सार्वभौम धर्म' कहलाने के पात्र नहीं होसकते ऐसे मतोंमें प्रायः व्यक्ति पूजा ही ईश्वर का स्थान लेलेती हैं और एक व्यक्तिको जगतजननीके साथ सीधा संबन्ध रखनेके पवित्र अधिकार से वंचित कर दिया जाता है। बौद्धमत का श्री गौतम बुद्ध के व्यक्तित्वके साथ सम्बन्ध होने तथा सामाजिक राजनैतिक वा शारीरिक मानसिक उन्नतिके प्रतिपादक तत्वों की उसके ग्रन्थों में सर्वथा अभाव होने के कारण वह भी सार्वभौम नहीं कहला सकता यद्यपि उस के आचार सम्बन्धी उपदेश बड़े ही उच्च तथा शान्तिदायक हैं। इसी तरह अन्य मतमतान्तरों के विषय में भी बिना सङ्कोच के कहा जा सकता है।

किन्तु वैदिक धर्म के अन्दर 'सार्वभौम धर्म' के उपर्युक्त पांचों लक्षण सम्पूर्णतया चरितार्थ होते हैं। इसके धर्म ग्रन्थ "अज्येष्ठासो अकनिष्ठास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पते संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय" (ऋग्वेद) 'शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः" (यजु० वेद) इत्यादि मंत्रों द्वारा स्पष्टतया मनुष्यमात्रके भ्रातृत्व की उद्घोषणा करते हैं, इस में जन्ममूलक किसी प्रकार की ऊंच नीचताकी कल्पनाका प्रतिपादन नहीं किन्तु मैक्समूलर, वींबर, विलियम् जौन्स इत्यादि पाश्चात्य विद्वानों ने भी एक स्वर से स्वीकार किया है कि वेदों में वर्तमान जाति का विधान नहीं। 'पंचजनाममहोत्रं जुषन्ताम्। 'पंचजनाममहोत्रं जुषध्वम्' "इमायाः पंच प्रदिशो मानवीः पंच कृष्टयः। (ऋग्वेद) वृष्टेःशापं नदी रिवेह स्फाति समावहन्॥ (अथर्व वेद) इत्यादि वेद मंत्र सब मनुष्य मात्र के प्रीति पूर्वक ईश्वर भजन, अग्निहोत्र तथा परस्पर बृद्धि में सहायता करने का आदेश करते हैं। वैदिक धर्म में समाज की रचना न्याय और समानता के सिद्धान्तों पर अवलम्बित है। वर्णव्यवस्था का आधार गुण कर्म पर है। स्त्रियां पुरुषों की सहधर्णियाँ और अर्धाङ्गिनियां हैं न कि दासियाँ। उन्हें न केवल वेदादि पढ़ने वा अग्निहोत्रादि करने की किन्तु स्वयंबरादि पत्र का पूर्ण अधिकार दिया गया है। ईसाई मतादिकों के इतिहास के पृष्ठों को जहां हम हिपेशिया, गैलिलियो, ब्रूमो इत्यादि प्रसिद्ध दार्शनिकों और वैज्ञानिकों पर किये गये अत्याचारों के वर्णनों से भरा हुआ पाते हैं वहां वैदिक धर्म के ग्रन्थों में केवल तर्क वा विज्ञान के तत्वों का विरोध नहीं बल्कि अनेक अत्यन्त उच्च कोटि के वैज्ञानिक सिद्धान्तों का स्पष्ट प्रतिपादन है। इस बात को ऋषि दयानन्द के अतिरिक्त बंगाल के सुप्रसिद्ध विद्वान पं० सत्यव्रत सामाश्रमी तथा भारत के सुप्रसिद्ध विचारक और योगी श्रीयुत अरविन्द घोष, श्रीयुत परमशिव ऐय्यर, इत्यादि बड़े २ विद्वान मानते हैं। जहां अन्य मतों में धर्म और दर्शन शास्त्र तथा विज्ञान के बीच में सदा विरोध रहा है वहां सब के साथ हमारे दर्शनशास्त्र तथा ज्योतिषादि सम्बन्धी ग्रन्थ एक स्वर से वेदों को प्रामाणिकता को स्वीकृत करते हैं और उन्हें सारे ज्ञान का भंडार बताते है।

जैकोलियट जैसे उच्चकोटि के पाश्चात्य विद्वान् Bible in India नामक ग्रन्थ में वेद में प्रतिवादितसृष्ट्युत्पत्ति के विषय की अन्य मतोंके मूलग्रन्थसे तुलना करते हुए आश्रम सागर मे मग्न होकर कहते हैं-

"Astonishing fact ! The Hindu Revelation (Vedas) is of all revelations the **only one whose ideas are in pefect harmony with Modern Science** as it proclaims the slow & gradual founation of the world.

अर्थात बड़े आश्चर्य की बात है कि सब 'ईश्वरीयज्ञान' समझे जाने वाले ग्रन्थों में से केवल वेद ही है जिसके सिद्धान्त विज्ञान के सर्वथा अनुकूल हैं।

वैदिक धर्म की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, धार्मिक सामाजिक, राजनैतिक सब प्रकार की उन्नति के तत्वों का स्पष्ट निर्देश करता है। समविकास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका मूल मन्त्र है। वेदों में से इन सब विषयों के सैकड़ों मन्त्रों को उद्धृत किया जा सकता है। श्रद्धातर्क, ज्ञानकर्म उपासना, त्याग और मोक्ष का इतना सुन्दर मेल वेदों के अंदर प्रतिपादन किया गया है कि उसे देखकर कोई भी निष्पक्षपात विचारक चकित हुए बिना नहीं रह सकता। अमेरिकाके सुप्रसिद्ध विचारक थोरियो वेदों के कुछ भागों के अनुशीलन के पश्चात् इन सुन्दर शब्दों में अपने उद्गार लिखते हैं—

" What extracts I have read from the Vedas fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum-free from particulars, simple, and **Universal,** The Vedas contain a sensible account of God."

वेदों को प्रकाश स्तम्भ के साथ उपमा देते हुए थोरियो महोदय उनकी शिक्षाओं को पवित्र सरल और सार्वभौम बताते हैं और उनके अन्दर वे ईश्वर विषयक युक्ति संगत कल्पना पाते हैं। डा० जेम्स कजिन D. Litt. जैसे यूरोपके सुप्रसिद्ध विचारक " Path to Peace " नामक पुस्तक के उपसंहार में इसी परिणाम पर पहुंचते हैं कि वैदिक आदर्श पर चलने से ही संसार फिर स्वर्ग वा सुखधाम बन सकता है। उनके अपने शब्द यह है :—

"On the Vedic ideal alone..........it is possible to rear a new earth in the image and likeness of the eternal heavens. (" P. 60)

यह हर्ष की बात है कि संसार के बड़े २ विचारक वैदिक धर्मकी सार्वभौमताको स्वीकार करने लगे हैं किन्तु हम आर्यों ने अपने कर्तव्य का कितना थोड़ा पालन किया है यह लज्जा की बात हैं। प्रत्येक आर्य को वेदों के स्वाध्याय का नित्यनियम बनाना चाहिए और आर्य विद्वानों को वेद विषयक उत्तम ग्रन्थ अंग्रेजी तथा अन्य प्रसिद्ध भाषाओं में प्रकाशित करने और सब से अधिक अपने पवित्र जीवनों द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार में तत्पर हो जाना चाहिए।

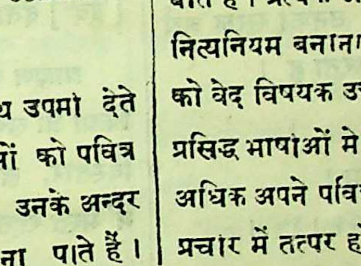

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद में चारों वर्णों का कर्तव्य निर्देश

(ले०—श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ)

—— :o: ——

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्" ऋचा में चारों वर्णों का नामनिर्देश करते हुए परमात्मा ने अनुपम अलंकारिक रीति से उन का कार्य निर्देश भी कर दिया है। परम कृपालु भगवान् ने यजुर्वेद में एक स्थान पर चारों वर्णों के कर्मों का विशद वर्णन किया है। प्रतीत होता है, मानव धर्मशास्त्र के कर्ता ने ब्राह्मणआदि के कर्मों का विधान इस स्थल को सामने रखकर किया है। विशेष न लिखता हुआ केवल मंत्र तथा उनका सरल अर्थ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करता हूं।

ब्राह्मण--

उपह्वरे गिरीणां संगमेचनदीनाम्।
धियाविप्रो अजायत ॥ यजु० २६। १५ ॥

(गिरीणाँ) पर्वतों की (उपह्वरे) गुफाओं में (च) तथा (नदीनां) नदियों के (संगमे) संगम पर रहकर (धिया) बुद्धि द्वारा धारण ध्यान करने से, (विप्रः) ब्राह्मण (अजायत) बनता है।

एकान्त वास करके योगादि के द्वारा बुद्धि की वृद्धि, ज्ञान की वृद्धि से ब्राह्मण बनता है। अर्थात् ब्राह्मण ज्ञान प्रधान होता है। 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति' प्रधान कर्मों के कारण व्यवहार होते हैं, जो मनुष्य जिस कर्मको प्रधानतया करता है, उसी कर्म से उस का निर्देश होगा।

उच्चा ते जातमन्धसो दिविसद्भूम्यादद्दे।
उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ यज० २६। १६ ॥

(ते) तेरा (उग्रं) बहुत बड़ा (शर्म) पर दुःख निवारण स्वभाव तथा (महन्ति) महान् (श्रवः) यश, ज्ञान (अन्धसः) अन्नादि की अपेक्षा (उच्चा) ऊँचा (जातं) प्रसिद्ध है और (दिवि) मानों द्यौलोक में (सत्) होता हुआ [भूम्या] भूमि को उत्तम सुख कल्याणादि [ददे] देता है।

ब्राह्मण को धन धान्य के लोभ से वश नहीं किया जा सकता है। ब्राह्मण अपनी विद्या, उसके विस्तार, लोकोपकार आदि लोक हितकर कार्यों में मस्त रहता है।

शूद्र—

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः।
वरिवो वित्परिस्रव ॥ यजु० २६। १७ ॥

[वरिवोवित्] सेवा धर्म को जानने वाला [सः] वह तू प्रसिद्ध सज्जन [नः] हम [यज्यवे] यजन शील [वरुणाय] श्रेष्ठ मनुष्य, ब्राह्मण, पर [इन्द्राय] ऐश्वर्यशाली क्षत्रिय पर [मरुद्भ्यः] वैश्यों पर [परिस्रव] पसीज, सब ओर से सुख की वृष्टि कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूद्र को हीन समझने वाले इस मन्त्र पर दृष्टि दें।

वैश्य—

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्।
सिषासन्तो वनामहे ॥ यजु०: २६। १८॥

[अर्यः] वैश्य! [एना] इन [विश्वानि] सब प्रकार के [मानुषाणा] मनुष्योंके [द्युम्नानि] धनों को [आ] भली प्रकार चाहता हुआ विभाग करता है, हम भी उसे [सिषासन्तः] चाहते हुए [वनामहे] सादर विभक्त करते हैं।

वैश्य का कार्य है। मनुष्योपयोगी सब प्रकार के धनों का संग्रह करना तथा यथा योग्य रीति से उनका विभाग करना, अपने पास बटोर के रखना नहीं। यदि संसार इस वैदिक आज्ञा का पालन करने लग जाय तो आज मज़दूर अमीरके समस्त कलह शान्त हो जायें।

क्षत्रिय—

अनुवीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्वैरनु सर्वेण पुष्टैः।
अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवाना यज्ञमृतुथा-
नयन्तु ॥ यजु० २६। १९॥

[वयं] हम क्षत्रिय [वीरैः अनु] वीरों के अनुकूल [पुष्यास्म] बढ़े, [गोभिः अनु] गौओं के अनुकूल, [अश्वैः अनु] अश्वादि के अनुकूल तथा [द्विपदा अनु] मनुष्य के अनुकूल तथा (चतुष्पदाअनु) चौपायों के अनुकूल [सर्वेण] सब प्रकार की [पुष्टैः अनु] पुष्टियों के अनुकूल बढ़े। (देवाः) विद्वान्, धार्मिक विजयशील [नः] हमारे [यज्ञं] यज्ञ को [ऋतुथा] ऋतु के अनुकूल [नयन्तु] चलावें।

वही क्षत्रिय सच्चा क्षत्रिय है, जो प्रजा तथा राजा को हितकर सामग्री की वृद्धि से अपनी पुष्टि मानता हैं, प्रजा की हार तथा प्रजा को उपयोगी पदार्थों के नाशसे अपना कल्याण नहीं मानता। परमात्मा की दिव्य शक्तियां ऐसोंके सदा अनुकूल रहकर इन को कार्य सिद्धियों में सहायक होती हैं।

इस प्रकार वेद ने संक्षेप से चारों वर्णों के कर्मों का स्पष्ट निर्देश किया है। मैंने बहुत संक्षेप से अर्थ किये हैं। पाठक! इसका मनन करें और देखें कि यह कितना स्वाभाविक है। साथ ही जन्मवाद का भी ध्वनि से खंडन है। क्योंकि कर्मानुसार नामव्यपदेश का निर्देश है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तारों की शीतलछाया में

---*---

विचार तरङ्ग—

प्रभो ! तुम कैसे हो ? तुम्हारा रूप-रङ्ग कैसा ? तुम को इन आंखों ने अब तक नहीं देखा है। तुम्हारे देखनेके लिए क्या और किसी तरहकी आंखों की ज़रूरत है ? और क्या तुम को किसीने देखा भी है ? तुम कहां रहते हो ? ऊपर-चौथे आसमान पर ? सातवें आसमान ? पर तुम्हारे रहने के लिए कोई विशेष स्थान है ? या यों ही, सब जगह और कहीं भी नहीं ! कहीं भी नहीं ? अरे ! यह क्या ? मैंने क्या कह दिया ? मेरे मुँह से क्या निकल गया ? ऐसा तो शायद कोई नास्तिक भी न कह सकेगा। वे लोग तुम्हें ईश्वर के नाम से भले ही न मानते हों, पर हां तुम्हारी सत्ता को, तुम्हारी अनिवार्य, अपूर्व और अद्वितीय सत्ता को किसी न किसी रूप से स्वीकार ही करते हैं। ईश्वर की सृष्टि ईश्वर की सत्ता से भला कहीं शून्य रह सकती है ! !

* * *

भगवन् ! क्षमा करना। मैं भूल से ही ऐसा कह गया। तुम सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक हो, घर-घर में विराजमान हो। कोई स्थान, कोई जगह तुम्हारी व्यापकता से खाली नहीं है। स्थान से स्थान, लक्ष्य से लक्ष्य पदार्थों में तुम मौजूद हो, ज़र्रे ज़र्रे में तुम समाये हुये हो। रोम रोम में तुम रम रहे हो। मैं अपनी नादानी से, अपनी अज्ञानता से भ्रम में पड़ता हूँ। सर्वज्ञ हो, सर्व व्यापक हो, अच्छा अब मुझे अपनी प्यारी सूरत दिखा दो। दिखा दो, मैं तुम्हारी प्यारी सूरत देखने के लिए तरस रहा हूँ। तरस रहा हूँ, व्याकुल हो रहा हूँ। क्या मैं तुम्हें इन आंखों से नहीं देख पाऊंगा ? क्या यह मनहूस आंखें तुम्हें नहीं देख पावेंगी। तुम इन्द्रिय गोचर हो। इन्द्रियां तुम्हें ग्रहण नहीं कर सकती। तुम इन इन्द्रियों के विषय नहीं। ये इन्द्रियां तुम्हें प्राप्त करने में असमर्थ हैं। ये इतनी निकम्मी हैं। अच्छा ! तो फिर तुमने इनको लगाया ही क्यों ? ऐसी निकम्मी चीज़ोंसे क्या लाभ? मुझे तो वह चीजें चाहिए जिससे तुम्हारे दर्शन हो सकें। जो तुम्हारे दर्शनों में सहायक न हो, मैं उसे एक दम नहीं चाहता। परन्तु क्या तुम्हारी सृष्टि में कोई ऐसी वस्तु भी है जो निकम्मी या निरर्थक है। हां, हां है ! है !! यह अधम काहीर जो अब तक ....आह ! अब तक..........फिर फिर क्या होगा ??

* * *

तो क्या मैं तुम्हें नहीं देख पाऊंगा ? नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं तुम्हें देखूंगा और ज़रूर देखूंगा। यह भी कोई बात हुई। मैं तुम्हें देखना चाहूँ और न देखपाऊं। असंभव! एक दम असम्भव ! हां, मेरी ही इच्छा डमा डोल हो। मैं ही दृढ़ न हूँ। मैं ही स्थिर न हूँ तो और बात, तुम्हें जिस ने देखना चाहा देख ही लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी ने तुम्हें देखा। युधिष्ठर ने तुम्हारे दर्शन किए। रामकृष्णसे तुम्हारा दर्शन हुआ। दयानन्द से तुम्हारा साक्षात् हुआ। फिर क्या मैं ही एक तुम्हारे दर्शन से वंचित रह सकता हूँ? नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता। तुम में यह निठुरता है ही नहीं। तुम भक्तवत्सल हो। भक्तों की लाज, भक्तों का मान रखना खूब आता है। तुम सब कुछ सहन कर सकते हो, परंतु भक्तों का दुःख, भक्तों का अपमान, तुम से नहीं सहा जाता। भक्त तुम को प्यारे हैं तुम भक्तों को। तुम प्रभो भक्तों को कभी निराश नहीं करते। निराश करना कैसा? सच पूछो तो तुम इनकी नाज बरदारी ही करते रहे हो। भक्तोंका व्यङ्ग प्रसिद्ध हैं। भक्त जब अपने तरङ्ग में जाने क्या—क्या कह जाते हैं? परन्तु तुम सब सुनते हो। सुनकर मुस्कराते हो, प्रसन्न होते हो, उन्हें निहाल कर देते हो! बलिहारी!!

* * *

प्रभो तब तो तुम बड़े दयालु हो, दीन बन्धु हो, दीनानाथ हो। तुम दीनों की सहायता करते रहते हो। हां दीनों की रक्षा और सहायता से ही तो दीनबन्धु, दीनानाथ कहलाते हो। यदि तुम ऐसा न करो, तो तुम्हें ऐसा कोई कहता ही क्यों? परन्तु एक बात पूछता हूँ, बतलाओ! कभी कभी तुम इतने निठुर, इतने कठोर, क्यों हो जाते हो। क्या परीक्षा के लिए? जांचने के लिए? आह! सर्वज्ञ होकर भी क्या तुम्हें अपने भक्तों के अन्तरात्मा का ज्ञान नहीं रहता। उनके हृदयगत भावों को नहीं जान पाते या अनजाने उन्हें भरमाते हो! आह! तुम्हारी आंख मिचौली कभी कभी बहुत दुःखदायिनी होती है—बहुत सताती है? बहुत तड़फाती है। पर कुछ ही हो, यह खेल आता है तुम्हें खूब! तुम्हें इस में बहुत अभ्यास है। परन्तु कुछ हो। तुम्हारे भक्त भी तुम से कम नहीं। वह भी तुम्हें खूब पहचान लेते हैं—पकड़ लेते हैं। तुम किसी रङ्ग में हो किसी वेश में उन से छिप नहीं सकते। और छिप सकते भी कैसे हो। जिसने तुम्हारे रूपको, तुम्हारे स्वभाव को जान लिया है उस से तुम कहां जा सकते हो—कैसे बच सकते हो। इस संबन्ध में जैसे तुम सर्वव्यापक हो वैसे ही विवश भी हो। जिसने तुम्हें जान लिया, तुम्हारे गुणों को समझ लिया, उस से तुम्हारी कैसे चल सकती है परम स्वतंत्र होकर भी तुम उसके समीप उसके लिए परतंत्र ही होजाते हो। आह! तुम्हारी लीला कैसी अपरम्पार है? दयानिधि तेरी गति जान न परे।

* * *

लोग कहते हैं हम ईश्वरोपासना करते हैं। भगवद्भजन करते हैं। गीता पाठ करते हैं। उपनिषद का पाठ करते हैं—बड़े प्रेम और श्रद्धा से करते हैं—नित्य करते हैं, दिन में दो दो बार करते है, पन्तु ईश्वर के दर्शन नहीं होते। नहीं होते होंगे! दुनियां बावली नहीं होगी। बावले होंगे तुम! पर जो कुछ भी हो, हमें तो दर्शन होते हैं—खूब होते हैं—धक धक कर होते हैं। पहिले पहले माता के रूप में हुए थे! आह! कैसे सुन्दर दर्शन हुए थे! कितना आनन्द मिला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ! आज भी उस आनन्द की स्मृति में विस्मृति हो जाती है ! भगवन् ! तुम्हारे दर्शन एक बार नहीं—अनेक बार हुए, भिन्न-भिन्न रूप में हुए। जो भाव, जो प्रेम, जो आनन्द माता के रूप में प्राप्त हुआ वह एक दम अनूठा था, निराला था ! माँ ! मां ! फिर रूप दिखादो ! तुम्हारे दिव्य दर्शन में अमृत है ! अमर जीवन की विभूति है।

* * *

ऐ आकाश में चमकने वाले तारो ! तुम बहुत ऊंचाई पर हो ! तुम्हें उस पार की क्या कुछ खबर न होगी ? तुम्हारी दृष्टि में तो सारी दुनियां है, तुम्ही बताओ ! मेरी माता कहां है ? अहा ! तुम कैसे सुन्दर हो। तुम्हें यह सौंदर्य किसने प्रदान किया ? तुम किस ज्योति से चमक रहे हो ? तुम इस सूने आकाश में न होते, तो आज इस दुनियां मे कितना घोर अंधकार छा जाता !! तुम्हारे प्रकाश से कितने भूले—भटके यात्रियों को सुख और शान्ति प्राप्त होती है, तुम हो। तुम में—मेरे प्रभु की—मेरी मां की ज्योति है। तुम मेरे प्रभु के प्रकाश से प्रकाशित हो रहेहो। प्यारो, चमको ! चमको !! खूब चमको !!!

मैं तुम में, तुम्हारे शीतल प्रकाश मे अपने प्रभु के दर्शन चाहता हूँ।

* * *

भगवन ! मैं तुम्हें देख रहा हूँ। देख रहा हूँ सर्वत्र--यहां वहां, ऊपर नीचे। तुम्हारी ज्योति, तुम्हारी प्रकाश, कहीं छिपने वाला है? तुम पत्थर में चिनगारोंकी तरह चमकते हो। काले बादलोंमें बिजली की तरह चमकते हो। तुम्हारा रङ्ग रूप, तुम्हारी चमक दमक ही निराली है। भगवान कृष्ण ने गीता में विभूतियों का वर्णन करते हुए तुम्हारी ज्योति का पता चलाया है। संध्या मंत्रों में दर्शनों की विधि मिलती है। फिर भी हम तुम्हें न देखें ! तुम्हारे दर्शन न करें, तो इस में तुम्हारा दोष नहीं। दोष है हमारा, जो देखते हुए नहीं देखते, सुनते हुए नहीं सुनते और बादलों की तरह इधर—उधर भटकते फिरते हैं। तुम सर्वत्र हो, सब जगह हो, सर्व व्यापक हो, घट-घट में विराजमान हो। जीवों और मनुष्यों का हृदय तो तुम्हारा मुख्य निवास स्थान ही ठहरा। परन्तु हम अपनी मूर्खता से अपने पांडित्य के घमंड से आप के दर्शन नहीं कर पाते।

गोशए दिल में छिपा था, मुझे मालूम न था।
परदा गफलत का पड़ा था, मुझे मालूम न था॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम के प्रति श्रद्धांजलि

(लेखक—श्री भगवानदास जी केला, भारतीय ग्रन्थ माला, वृन्दाबन)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ! आज लाखों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी तुम अनेक बातों में भारतवासियों के और जिज्ञासु, विदेशियों के पथ-प्रदर्शक बने हुए हो ! क्यों न हों ! अपने विविध कार्यों द्वारा, भिन्न भिन्न क्षेत्रों में, गार्हस्थ जीवन में, सार्वजनिक कार्यों में, राज काजमें दुष्ट-दल-दलन में अनेक आपत्तियां सहन कर के भी तुम ने शिक्षाप्रद आदर्श उपस्थित किया है, तुम धन्य हो! और धन्य है भारत भूमि जिसने संसारको तुम्हारे जैसा पुरुषोत्तम प्रदान किया ।

* * *

भगवन् ! तुमने बाल्यावस्थामें ही कैसे उत्तमोत्तम गुण ग्रहण कर लिये थे । माता कौशल्या के संरक्षण में तुमने मृदु भाषण, आज्ञा पालन, स्वच्छता आदि का अभ्यास किया था, तो गुरु वशिष्ठ जी से न्याय, नीति, धर्म और धनुर्वेद की शिक्षा पाई थी । तुमने सदैव सदाचारी और विद्वान् लोगों का सत्सङ्ग किया । तभी तो तुम ने अपने भावी जीवन में अपनी शारीरिक, मानसिक और नैतिक योग्यता का सम्यक् परिचय दिया । विश्वामित्र का यज्ञ दूषित करने वालों को तुमने अपने पराक्रम से दण्ड दिया । सीता के स्वयंबर के समय राजा जनक तथा उपस्थित जनता को जो यह आशंका हो चली थी कि पृथ्वी वीर-विहीन हो गयी है, उसे तुमने तर्क से नहीं, कार्य से—धनुष तोड़कर—निवारण किया । पश्चात् उत्तेजित परशुराम जी को शान्त करने के लिए तुममें विनय और विवेक की मात्रा भी कुछ कम न थी । इस प्रकार जहां जैसी आवश्यकता हुई, तुम उनके लिए यथेष्ठ गुण-सम्पन्न पाये गये । तुम धन्य हो !

* * *

महाराज ! तुम ने उस उच्च कुल में जन्म ग्रहण किया था, जिसके विषय में कहा गया है कि:—

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्राण जांय पर बचन न जाई ॥

इस कुल-मर्यादा को तुमने जिस भांति निभाया उसकी कहां तक प्रशंसा की जाय ? तुम्हारे राज्याभिषेक की तैयारियां हो चुकी थीं, और तुम अपने पिता के ही नहीं, समस्त राज्य भर के नागरिकों और राज्य कर्मचारियोंके प्रस्तावानुसार राजगद्दी को सुशोभित करने वाले थे कि इतने में तुम्हें सूचना मिलती है कि पिता के बचन की रक्षा करने के लिये आवश्यक है कि तुम न केवल राज-त्याग करो, वरन बन में जाकर रहो, सो भी महीने दो महीने नहीं, वर्ष दो वर्ष नहीं, पूरे चौदह वर्ष ! साधारण मनुष्य के लिये यह सूचना वज्रपातके समान होती, उसका हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदीर्ण हो जाता, वह मूर्छित हो जाता। अथवा वह राज-विद्रोह की पताका फहरा कर भयंकर रक्त-पात का दृश्य उपस्थित करने में कुछ आना-कानी न करता। तुमने ऐसी कोई बात न की, अपने त्याग से संसार को चकित कर दिया। अपने मन में तनिक भी मैल न लाकर, तुम बन के लिए वैसे ही हर्ष और उत्साह से रवाना हुए, जैसे कि कोई राज तिलक के लिए जाता हो! तुम धन्य हो! आज भी तुम्हारी यह विलक्षण कर्तव्य-भक्ति, तुम्हारे चरित्र-पाठकों में अद्भुत भावनाओं का संचार करती है।

* * *

महाभाग! तुम्हारे तो भाई बन्धु और सह-धर्मणी सभी का चरित्र बिलक्षण है, मुग्धकारी हैं, लक्ष्मण तुमसे अलग रहना ही नहीं चाहता, तुम्हारी सेवा के लिये यह स्वयं अपने बनवास की याचना करता है। तपस्वी और निर्लोभी भरत तुम्हारी अनुपस्थिति में राज्य को ठुकरा देता है और तुम्हारी पादुकायें राज गद्दी पर रख कर, तुम्हारे एक सेवक और प्रतिनिधि के रूप में राज-काज संभालता है। शत्रुघ्न तुम्हारे वियोग में अलग ही व्याकुल रहता हैं। ओफ! भ्रातृ-प्रेम का यह दृष्टान्त क्या इसी पृथ्वी पर थो? क्या इसी भारत भूमि पर था? भारतवर्ष ने अपनी गोद में सीता देवी को भी धारण किया, जिसने पति-भक्ति की पराकाष्टा ही दिखा दी। उस देवी के लिये राजमहल के सब सुख विद्यमान हैं, पर वह सब को ठुकरा कर बनवास में भी तुम्हारा साथ देनेके लिये व्याकुल है, बेचैन है। किसी के समझाने बुझाने का उस पर कुछ असर नहीं होता। वह अपने कर्तव्य-पथ पर हिमालय की भांति दृढ़ हैं, ध्रुव की तरह स्थिर है। यह क्षुद्र मनुष्यों की कल्पना से परे है, वह अपनी उपमा आप ही है। इस प्रकार के सम्बन्धियों के अतिरिक्त तुम्हारे अनन्य सेवक हनुमान जी भी कैसे गुणवान, जितेन्द्रिय, वल-वान कर्तव्य-परायण थे। तुम इन सब का सह-योग पा सके, तुम भाग्यशाली थे। तुम बन्द-नीय हो!

* * *

महाराज! तुम महान् थे। तुम्हारा हृदय विशाल था। तुम सब को समान समझते थे। उंच-नीच या छूआ-छूत का तुम्हें कैसे विचार हो सकता था? तुम्हारा निषादके यहां आतिथ्य स्वीकार करना, उसे अपना बन्धु समझना, प्रेम-पूर्वक दिये हुये शबरी के भी बेरों को प्रसन्नता-पूर्वक ग्रहण करना, आदि तुम्हारे जीवन की घट-नायें कितनी विचारणीय हैं। हिन्दू जाति इनका ठीक ठीक अर्थ समझे, और इनसे समुचित शिक्षा ग्रहण करे तो यहां संगठन और राष्ट्र—निर्माण का कार्य कितना सुगम हो जाय।

* * *

महाराज! तुम्हारे बनवास के समय भी जब जैसा कर्तव्य उपस्थित हुआ तुम उस के लिए सदैव तैयार पाये गये। ऋषि मुनिकी रक्षा करना साधु महात्माओं की सेवा करना, दीनों का दुःख दूर करना तो तुम्हारा नित्यका कार्य ही था। स्त्री जाति का अनादर तुम कैसे सहन कर सकते थे!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीता जी को हरण करने वाले रावण को दण्ड देकर अन्य आततायियों को शिक्षा देना तुम्हारे लिए अनिवार्य था। वह लङ्कापति है और बहुत पराक्रमी है तो क्या? तुमने वहां अपने, राज्य की सहायता से वञ्चित होने पर भी, कुछ थोड़े से वानरों (नर-विशेषों) के आसरे उस पर धावा बोल दिया। भारत से सहायता की याचना करना तुमने अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझा, और स्वयं ही रावण आदि को यमपुर पहुँचा दिया। तुम धन्य हो!

* * *

हे आदर्शशासक! तुम्हारा लोकमत के अनुसार किया हुआ शासन इतना उत्तम रहा कि अच्छा राज्य अब भी राम राज्य कहा जाता है। न्याय तुमने निष्पक्ष भाव से किया, स्वराज्य-प्राप्ति में तुमने सदैव इस बात का ध्यान रक्खा कि प्रजा को कोई कष्ट या असुविधा न हो और तुमने प्राप्त धनका व्यय भी जनता की सुख—समृद्धि के लिये किया, अपने स्वार्थ या देशार्थ के लिये नहीं? प्रत्येक पद पर तुमने सुयोग्य कर्मचारी की नियुक्ति ध्यान रक्खा। तुमने अपने कायदे कानूनों से नहीं, स्वयं अपने उदाहरणों से प्रजा को सदाचारी, संयमी और गुणग्राही बनाने का यत्न किया। जुआ, मद्य-पान, परस्त्री-प्रसंग विलासता, आदि के विषयों में तुमने जनता को खूब सावधान किया। अहा! तुम्हारा शासन इतना सुन्दर था कि प्रजा में चोरी ठगी, बदमाशी, छल, कपट आदि के अपराधी नहीं थे और दण्ड देने की आवश्यकता नहीं रही थी। किसी को कोई रोग शोक नहीं था, खाने पीने की तो बात ही क्या, अन्य भी किसी सात्विक सुख का अभाव नहीं था। तुम प्रजा को अपने पुत्र के समान स्नेह करते और सदैव उसकी उन्नति के लिये दत्त-चित्त रहते, फिर प्रजा में राज भक्ति, प्रसन्नता और सन्तोष की कमी क्यों होती? तभी तो आज भी तुम श्रद्धा और भक्ति पूर्व स्मरण किये जाते हो, तुम धन्य हो। तुम्हें सादर नमस्कार!

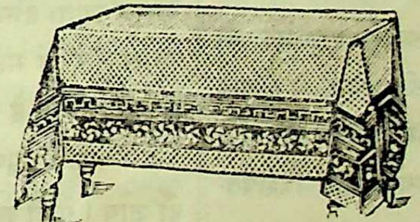

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य्य समाज में परिवर्तन

(लेखकः— भिषगा चार्य्य वैद्य ईश्वरदत्त मेधार्थी अजमेर)

आर्यसमाज की आयु क्षीण हो रही है? या यों कहें कि आर्य समाज यौवन को पास कर रहा है। अथवा कहीं कहीं तो वार्धक्य की ओर भी कदम बढ़ा रहा है। प्रमाण के लिये गुरुकुल काङ्गड़ी अपनी प्रथम पचीसी पूरी करके द्वितीय में विराजमान है गुरुकुल बृन्दाबन बड़े धूम धाम से प्रथम-पचीसी को पूर्ण करके रजत जयंती महोत्सव की तैयारियों में संलग्न है और भी छोटे मोटे गुरुकुल रजत जयन्ती के लिये विज्ञापन कुछ वर्षों बाद निकालेंगे ही। आर्य समाजों के तो अर्ध-शताब्दि की महोत्सव भी उसी घिसी पिसी विधि से होने आरम्भ हो गये हैं इनके यौवन काल की समाप्ति का लक्षण अभिव्यक्त हो चुका है। आर्य पुरुषो! किस बिचार में हो—महर्षि दयानन्द जी की भी निर्वाण अर्धशताब्दि ठीक चार वर्ष बाद सिर पर आने को है। वह समय होगा जब कि समस्त आर्यसमाज के सदस्यों और विशेषतः आर्य सभासदों को अजमेर में ही जो महर्षि दयानन्द की निर्वाण भूमि है, सम्मिलित होकर गम्भीरता पूर्वक आर्यसमाज के उज्वल भविष्य के लिए नवीन परिवर्तन करने होंगे। महर्षि का मिशन पूरा करते करते लगभग ५० वर्ष होने को आए हैं परन्तु सच्चे हृदय से यदि हम आत्म परीक्षा करें तो कहना पड़ेगा कि अभी आर्यसमाज ने केवल शंख बजाया है। क्रियात्मक कार्य न के बराबर ही किया है। आर्यसमाज सबसे अधिक "वेद प्रचार" पर जोर देता है और देना भी चाहिये क्योंकि आर्यसमाजों के लिये परम धर्म सिर्फ एक ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम द्वारा प्रतिपादित किया है। आप जरा आर्यसंसार के "वैदिक स्वाध्याय" की ओर तो दृष्टिपात कीजिये। वेद तो रहे सहे ही ठीक है आर्यसमाज के बड़े बड़े पदाधिकारी सत्यार्थ प्रकाश के पन्ने तक उलटना अनावश्यक समझते हैं। "आर्याभिविनय" को तो शायद ही कोई विरला पढ़ता होगा जो कि आर्यपुरुषों के लिये खास तौर पर महर्षि दयानन्द ने वेदों में से विशेषार्थ संगृहीत किया है। यदि आर्य पुरुष "आर्याभिविनय" को ही पूर्ण तया हृदयङ्गम करलें तो उद्धार हो जाय। ऐसी अधकचरी दशा में कर्त्तव्य क्या? आर्यसमाज में भी हिन्दुओं की तरह नगरकीर्तन वार्षिकोत्सव, साप्ताहिकदर्शन और वार्षिक निर्वाचन, रूढ़ियों के रूप में प्रचलित हो गये हैं। इन्हीं में परिवर्तन करना है। यह परिवर्तन की आवाज आज के युग में क्रांति द्वारा ध्वनित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है। शायद क्रांति से भय का संचार होजाय इस लिए हमने ज़रा नरम संज्ञा का प्रयोग किया है। परिवर्तन किस रूप में, कब और कैसे हों? इन सब का सन्तोष जनक उत्तर यही है कि एक दम परिवर्तन की घोषणा कर दी जावे। इस कार्य के लिए "सार्वदेशिक,, सभा की अध्यक्षता में एक नियामक उप-सभा शीघ्रातिशीघ्र बनाई जावे। यही आर्यसमाज के उलटे बहते हुए प्रवाह को नियमन करके सुमार्ग पर चलावे। वैदिक स्वाध्याय का प्रचार करने के लिए "आर्यावर्तीय वैदिक स्वाध्याय परिशद,, अजमेरने आर्यसभासद आर्याविशारद, सिद्धांतरत्न और वेदविशारद यह चार परीक्षायें प्रचलित की हैं। आर्य समासदों का कर्तव्य है कि वे नियम पूर्वक स्वाध्याय में प्रवृत हो जावें और प्रतिवर्ष श्रावणी के अवसर पर परीक्षाओं में सम्मिलित होकर आर्यसमाज का आदर्श संगठन करें। वार्षिक निर्वाचनों में भी एक दम परिवर्तन की आवश्यकता है। आर्यसभासदों के लिये अनिवार्य गुण कर्मों का भी निर्णय शीघ्र होना चाहिए, परिवर्तन का भी श्री गणेश होगा। हमने इन्ही विचारों के अनुसार आन्दोलन करने के लिए गुरुकुल बृन्दावन की रजत जयन्ती के अवसर पर होने वाले "आर्यसम्मेलन,, में निम्नलिखित प्रस्ताव प्रस्तुत किया है। आशा है आशानुरुप कार्य होगा।

आवश्यक प्रस्ताव

यह हमारा समस्त आर्यों का सम्मेलन आर्य समाज की वर्तमान अवनत दशा को दृष्टि में रखते हुए प्रस्ताव करता है कि :—

(क) आर्यसभासदों के लिए अनिवार्य गुण कर्मों को निश्चय कर दिया जावे—जिन को धारण किये बिना कोई भी आर्य आर्यसभासद की उच्च संज्ञा को प्राप्त न कर सके।

(ख) आर्यसभासदों के लिए अनिवार्य गुण कर्मों का स्पष्टीकरण इस प्रकार हो जावे। जो आर्यसमाज का सदस्य नियम पूर्वक सन्ध्या और और स्वाध्याय एवं वैदिक संस्कार और वैदिक वर्णव्यवस्था को अमल में न लाता हो वह "आर्यसभासद,, न बनाया जावे और उस को आर्यसमाजके निर्वाचन, प्रवन्ध एवं संस्था संचालन आदि मुख्य कार्यों में सम्मति देने का अधिकार प्राप्त न होवे।

(ग) इस प्रस्ताव को स्वीकृत करके "आर्य-सार्वदेशिकसभा,, के पास शीघ्रातिशीघ्र चालू करने के लिए भेज दिया जावे।

आर्यपुरुषो? अब अधिक विलम्ब करने का समय नहीं रहा है। आर्यसमाजों को करवट बदलनी होगी। आत्म परिक्षण का कार्य करना होगा। आत्म-सुधार की भगीरथ प्रयत्न करना होगा। आर्यसभासदों का आदर्श संगठन करना होगा। तभी आर्यसमाज अपना अस्तित्व बनायेरख सकेगा, नहीं तो नाना समाजोंकी तरह राजपथ से च्युत होकर किनारे पर ही आकर रह जायगा। आर्यसभासदों! अब देर न करो। गुरुकुल बृन्दावन की रजत जयंती पर कुछ परिवर्तन कर डालो। तभी भविष्य चमकेगा। किमिधिकम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सँसार में सब से अधिक अपराधी देश !

मार्डनरिव्यू के गताङ्क में डाक्टर सुधीन्द्र बोसने सभ्यता कीडींग हांकने वाले अमेरिका देश में होने वाले अपराधों का जो चित्र खींचा है उनको पढ़कर रोंगटे खड़े होजाते हैं और आधुनिक सभ्यता की ओर से उदासीनता उत्पन्न होने लगती है। यूरोप तथा अमेरिका वाले अपने को स्वर्गीय प्राणी समझते हैं। एशिया वासियों को तो वे नितान्त जङ्गली और असभ्य मानते हैं। उनके स्पर्श से ही अपवित्र होने का उन्हें डर लगता रहता है। अमेरिका जितना सभ्य देश है पाप करने के उतने ही नीच ढङ्ग उसने ढूंढ़ निकाले हैं। डा० बोस के लिखे कुछ अपराधों की सूची यहां पर देते हैं।

१—एकस्त्रीके पतिका ३००००) बीमा कंपनी में जमा था। उसमें शर्त लगी हुई थी कि यदि यह शांति पूर्वक मर जाय तो उसकी स्त्री को केवल १०००) मिले, परंतु यदि किसी दुर्घटना से मृत्यु होने की दशा में स्त्री ३००००) पाने की अधिकारिणी थी। स्त्री ने अपने पति को विष देकर मार डाला और ३००००) पा लिये।

अन्त में हम पुनः वैदिक पंच संस्कारों के (संध्या, स्वाध्याय, संस्कार स्वदंबर और स्वराज्य) प्रचार के लिए सहस्रशः निवेदन करते हैं।

२—एक स्त्री का १५ दिन का बच्चा बहुत चिल्लाता और रोता था। मांने उस्तरे से गला और हाथ काट कर उसके रोने से पीछा छुड़ा लिया।

३—एक बड़े शहर में सभा होने वाली थी। विरोधियों ने उसको जबरदस्ती बन्द करना चाहा, ईंट, पत्थर और डंडों आदिकी खूब वर्षा हुई। थानेदार की हथकड़ियां, रिवालवर और डंडे आदि छीन लिये और उसको खूब पीटा।

४—शिकागो के दो धनी विद्यार्थियों को पूर्ण अपराध करने की सूझी। एक छोटे बच्चे को बातों में लगाकर अपनी मोटर में बैठा कर शहर के बाहर ले गये और हथोड़े से उसके मस्तिष्क को कुचल कर लाश को फेंक दिया।

५—ओहियो निवासिनी महिला ने अपने डेढ़ मास के बच्चे को डेग में चढ़ाकर नीचे आग जला दी। कई घंटे बाद उसके पति ने आकर देखा कि बच्चा उबल गया है।

६—इलीनौइ निवासी एक नवयुवक जब यूरोप के स्वतंत्रता के युद्ध से लौटकर घर आया तो अपने बूढ़े बाप की सूरत उसे न सुहाई और उसके गले में भाला भौंक कर, उसे यमपुर पहुंचा अपने क्रोध को शांत किया।

७—दक्षिणी डकोटा के बैंक में दो सशस्त्र महिलायें घुस गई। एक तो खजांन्ची के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरी पिस्तौल लेकर खड़ी हो कहने लगी कि मुझे दूसरों की जान लेने में दुख होता है, कर्तव्य पालन के समय मुझे इसकी जरा परवाह नहीं होगी। यदि तुम जरा भी हिले तो यहीं पर काम तमाम कर दूंगी। इतने में दूसरी ने सारा रुपया हथिया लिया और दोनों मोटरों में बैठकर चलती बनीं।

८—एक न्यूयार्क निवासी किसी स्त्री पर आसक्त था। उसके बहुत कहने सुनने पर भी वह अपने पति को छोड़कर उसके साथ भाग जाने पर सहमत नहीं हुई। उस स्त्री के सिर को हथोड़े से कुचला यहां तक कि वह बेहोश होकर गिर पड़ी। वह पिशाच टांग पकड़ कर उस अबला को नीचे घसीट लाया और भट्टी में डाल कर बाहर से किवाड़ बन्द कर दिये। बेचारी जल भुन कर राख होगई।

इन उदाहरणों से पाठकों को मालूम हो जावेगा कि सभ्यताभिमानी अमेरिका की आंतरिक क्या अवस्था है। आबादी के लिहाज से जितने अधिक पाप यहां पर होते हैं उतने शायद ही किसी अन्य सभ्य देश में होते हों। चोर, ठग और गुण्डों तथा लुटेरों की देश में भर मार है। अमेरिकन घरों में हुक्के के समान ही बंदूक भी एक साधारण चीज होगई है। लुटेरों के डर से लोगों को प्रति समय सशस्त्र रहना पड़ता है।

आबादी के लिहाज से शिकागो का संसार में तीसरा नम्बर है, परन्तु वहां पर कतलों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जाती है। ऐसे अपराधों का औसत एक प्रति दिन से भी अधिक है। उस को अमेरिका ही नहीं सारे ईसाई देशों में अपराधों की राजधानी कहना अत्युक्ति न होगी।

अमेरिका में अपराधों की लहर ही नहीं एक प्रकार का तूफान आया हुआ है। गत २४ वर्षों में यहां पर कत्लों की संख्या दूनी होगई है। गत योरोपियन महायुद्ध में ४०००० अमेरिकन हताहत हुये थे, परन्तु उस महायुद्ध के बाद कत्ल हुओं की संख्या इससे कहीं बढ़कर है। अतः ५ वर्षों में इनकी संख्या का औसत ८० से १०० प्रति सहस्र रही है, परन्तु जापान, ग्रेट ब्रिटेन आयरलैन्ड, स्वीटजरलैंड और नारवे में एक लाख पीछे केवल ३ से ९ तक कत्ल होते हैं।

अमेरिका में मोटर गाड़ियां भी नरसिंहार में किसी से पीछे नहीं है। इनसे दबकर होने वाली मृत्यु संख्या का औसत प्रति घन्टे दो तक पहुँच गया है। इस बात में भी अमेरिका संसार के सभ्य देशों से आगे बढ़ा हुआ है। लोग अपने आनन्द के सामने मनुष्य जीवन की कुछ भी परवाह नहीं करते। अकेले न्यूयार्क नगर में प्रतिवर्ष ३०० बच्चे मोटरों की भेंट चढ़ जाते हैं। शिकागो में प्रतिवर्ष २५० का औसत है। इस हिसाब से ७००८ बच्चे सारे देश में मोटरों के शिकार होजाते हैं।

डकैतियां और दिन दहाड़े, लूट भी खूब बढ रही हैं। डाकगाड़ियों पर सशस्त्र पहिरेदारों की आवश्यकता रहती है। डाकखाने के क्लरकों के पास भरी बन्दूक रक्खी रहती है। केवल रेल व जहाज़ आदि से ही तीन करोड़ रुपये का माल प्रतिवर्ष चुराया जाता है। प्रायः प्रति दिन ही किसी न किसी बैंक के लुट जाने के समाचार आते हैं।

इन सब अपराधों से भी घृणित जीवित मनुष्यों को जलाने की प्रथा है। पहिले इसका बहुत प्रचार था परन्तु नीग्रो लोगों के आन्दोलन से इनकी संख्या दिन पर दिन कम होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जारही है इस घृणित कर्म को अङ्गरेजी भाषा में (Lynching) लिनचिंग कहते हैं। इसका वर्णन इस प्रकार है? दस बारह नकाबपोश मनुष्यों ने किसी नीग्रो को पकड़ लिया। रेलवे स्टेशन से एक फर्लाङ्ग के फ़ासले पर एक वृत्त से जञ्जीरों द्वारा कसकर बांध दिया। दो जगह आग जलाई गई। एक में लोहे की बड़ी सलाख गरम करने को लगा दी। वह जब लाल होगई तो उनमें से एक आदमी उसे निकाल कर नीग्रो के पास लेगया। बेचारे ने डर के मारे उसे हाथ में पकड़ लिया और उसका मांस और चमड़ा जल गया। फिर उसके शरीर को चहकाया गया। नीग्रो रोता चिल्लाता था। दर्शक लोग मुंह बनाकर उसे चिढ़ाते थे।

इस प्रकार उसको सताने के बाद उनमें से एक मनुष्य ने उसके कपड़ों पर तेल डाल कर आग लगादी। बेचारा छटपटा कर दर्शकों से प्रार्थना करता था कि मुझे गोली मार दी जाय परन्तु इसका उत्तर दर्शक लोग मुंह बना कर देते थे। इस प्रकार सता, सता कर उसके प्राण हरण किये गये।

यह संसार में सब से अधिक सभ्य देश की बात है। माना कि प्रकृति पर आधिपत्य जमा कर अमेरिका ने बहुत उन्नति की है। आज वह संसार में सबसे अधिक धनी देश है। परन्तु धार्मिकता, उदारता और सहनशीलता की दृष्टि से तो उसका देवाला ही निकल चुका है। विचारशील पुरुष पापों की इस बढ़ती हुई लहर का निदान सोच रहे हैं, परन्तु मर्ज अभी बढ़ता ही जाता है। शायद भारत की आध्यात्मिकता इसको दूर करने में कभी सफल हो सकें।

—आनन्द भिक्षु सरस्वती

— —o— —

वैदिक-प्रचार

———

हमारे पास देश-विदेश सभी स्थानों से वैदिकप्रचार के सम्बन्ध में पत्र आते रहते हैं। स्थानाभाव के कारण हम सभी पत्रों को प्रकाशित नहीं कर सकते, न उनकी यथातथ्य लिपि दे सकते हैं। बहुत से पत्रों में से कुछ का सारांश आर्यजगत के सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है:—

आ० स० लन्डन

श्रीमान् महोदय !

आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियमानुसार हो रहे हैं। शिवरात्रि महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। वैदिक प्रचार के समाचार खूब फैल रहे हैं, साथ ही प्रचार की कठिनाइयां बढ़ रही हैं मुझे चार भिन्न भिन्न सोसाइटियों से व्याख्यान देने के लिये निमन्त्रण आए हुए हैं... ....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने उनके निमन्त्रणों को स्वीकार भी कर लिया है। परमात्मा हमें सहायता दे। आपकी शुभाकाङ्क्षायें हमारे साथ हों।

आपका आर्य भाई,
—भगतराम सहगल

ता० १३ मार्च का प्रेषित पत्र

श्रीमान्!

गत रविवार को मेरा व्हाइट फील्ड मिशन के गिरजे में सफल व्याख्यान हुआ। लोगों की काफी संख्या उपस्थित थी। गत रात्रि को एक ग्रेजुएट लेडी तथा गिरजे की स्त्री का मुझसे १० बजे रात तक धर्म सम्बन्धी विवाद होता रहा। अन्त को उन्हें वैदिक धर्म पर पूर्ण सन्तोष हो गया।

......कल को हम ताजमहल होटल में होली का उत्सव मनाने जा रहे हैं सम्भवतः बड़े बड़े लोग निमन्त्रण में पधारेंगे। धर्म प्रचार का खूब जोर है और हम आनन्द से हैं।

आपका
—भगतराम सहगल

आर्यसमाज निकेरो (डचगायना)

श्री मान्यवर सादर नमस्ते!

सेवा में निवेदन है कि मैं एक स्वतंत्र और अवैतनिक आर्य उपदेशक हूँ। संयोगवश सन् १६०६ में शर्त बन्द होकर इस देश डच गायना सौथ अमरीका में चला आया। पांच साल शर्त बन्दी की अवधि समाप्त होने के बाद अपनी योग्यतानुसार वैदिक धर्म का सन्देश अपने भारतीय औपनिवेशिक भाइयों में सुनाता रहा १५ दिसम्बर सन १६२० ई० को को मेरे सभापतित्व में नकेरी में आर्यसमाज की स्थापना हुई। नियमावली, आर्यसमाज रजिस्टरी कराने के लिए डच सरकार की सेवा में पेश है जिस पर विचार हो रहा है आशा है कि शीघ्र कार्य हो जावेगा। अब तक ढाई साल में लग भग ६० आर्यसभासदों की संख्या पहुँची है अबतक १० नाम करण संस्कार व २ ब्याह व ३ मृतक संस्कार २५ शुद्धियां एक वेदोक्त महायज्ञ हुआ है। इस समय आर्यमन्दिर की रचना के साथ ही पाठशाला व एक बृहत् पुस्तकालय भी चलरहा है जो शीघ्र ही समाप्त होने वाले हैं उसकी लागत लगभग ५,००० हजार रुपया की होगी। आर्यसमाज मन्दिर की रचना समाप्त होने पर दानवीरों की सूची तथा साथ ही चुनाव आर्यसमाज १६३० की सूची भेजी जावेगी जिस के लिए आशा है कि आप सार्वदेशिक अथवा प्रतिनिधि के मुख्य पत्रों में जगह देंगे। और आप चिट्ठी के अनुसार औपनिवेशिक आर्यसमाज चालू रखने के लिए मार्ग बतायेंगे जिसके अनुसार हम लोग अपना कार्य स्थायी रूप से कर सकें।

आशा थी कि महता जैमिनि जी के प्रचार से इन उपनिवेशों की आर्य समाजों का पुनः संगठन हो जायगा किन्तु ऐसा न हो सका, इधर एक ऐसे उपदेशक की ज़रूरत है कि जो आकर इन छितरे हुए आर्यसमाजियों को एक धागे में बांध दे, कार्य क्षेत्र बहुत बड़ा है किन्तु धन व योग्य उपदेशकों की आवश्यकता है।

जो महाशय आना चाहें वह नीचे लिखे पते से पत्र व्यवहार करें:—

पं० गिरजादयाल शर्मा
६ बुर्म स्ट्रीट, निकेरी (डचगायना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आर्य समाज रंगून" (बरमा)

श्रीमान्,

बरमा जैसे बड़े प्रांत में रंगून शहर सामाजिक राजनैतिक तथा धार्मिक दृष्टियों से अपना स्थान बहुत ऊंचा रखता है। इसलिये यह स्वाभाविक है कि आर्य समाज जैसे मिशन को रंगून के अन्दर अच्छा स्थान प्राप्त करना चाहिये था इसलिये हमने गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारी वर्ग से यह प्रार्थना की कि वे हमारे पास एक सुयोग्य स्नातक को उनकी धर्मपत्नी सहित भेजें। तदनुसार उन्होंने हमारे पास श्री पं० सुखदेव जी वेदालङ्कार विद्या वाचस्पति को उनकी सुयोग्य धर्मपत्नी श्री प्रभावती देवी जी सहित भेजा इसके लिये हम विशेष कर श्री पं० विश्वनाथ जी विद्यालङ्कार मुख्याचार्य गुरुकुल के आभारी हैं। वे १३ जनवरी १९३० को रंगून पहुंच गये। उन्होंने आते ही अपनी योग्यता तथा कार्यतत्परता से आर्य जनता को मुग्ध कर दिया। उनके व्याख्यानों की गम्भीर तथ रोचक शैली को सभी नेताओं ने पसन्द किया।

Insain में होने वाले 'क्षत्रिय नवयुवक' संघ के वार्षिकोत्सव में स्नातक जी को प्रचारार्थ भेजा गया। उनके व्याख्यानों से प्रभावित हो कर मिलिटरी के कार्यकर्ताओं ने उन्हें अपने यहां निमंत्रित किया। वहां सिपाहियों तथा उन के अफसरों ने एक बड़े हवन यज्ञ की आयोजना की।

तत्पश्चात् "हवन के लाभ" इस विषय पर उनका व्याख्यान हुआ। स्नातक जी की धर्मपत्नी प्रभावती जी के उत्साह से रंगून में पुनः आर्यकन्या पाठशाला की स्थापना हो गई है। अभी से ही कन्यायें काफी प्रविष्ट हो रही हैं। हमें विश्वास है कि यदि इसी उत्साह से निरंतर कार्य्य होता रहा तो सफलता हमारे हाथ में रहेगी!

—जगतराम ओवरसियर मन्त्री,
आर्यसमाज रंगून।

—ता० २६ २७ व २८ फरवरी को उदगीर आर्यसमाज तीसरा (महाशिवरात्रि उत्सव) बड़े समारोह पूर्वक धूम धाम से मनाया गया, इस उत्सव के साथ साथ आर्यसम्मेलन भी हुये। हज़ारों स्त्री और पुरुषों की भीड़ हर समय पिंडाल में दीखती थी। लोग वैदिक धर्म का संदेश बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ सुनते थे। श्री अमृतराव जी सेटकारके गोदाम में भव्य और बिशाल पिंडाल बनाया गया था जिस में हज़ारों स्त्री पुरुष बैठते थे। उस उत्सब पर अनेक आ० उपदेशक पधारे। नेताओं के ज़ोरदार व्याख्यान हुए ? जनता पर खूब प्रभाव पड़ा। आर्यभानुजी के भजनों ने तो जनता को मुग्ध बना दिया, जनता को पूर्वजों का (नारद और साभलषडील का) दृश्य दिखाई देरहा था, जनता आर्यभानु जी के भजन सुनने के लिये लालायित रहती थी। करतलध्वनि से समर्थन करती थी। इसी तरह आरती शान्ति पाठ से उत्सव समाप्त हुआ और १००) दान में भी मिला।

—रामचन्द्र, आर्य समाज, उदगीर।

—✲—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य्य सार्वदेशिक सभा

का

❀ बाईसवाँ वार्षिक वृत्तान्त ❀

ईश—वन्दन

—:o:—

"ओं इन्द्र वर्धन्तु अप्तुरः कृण्वन्तो,,
विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः ॥ ऋ०

"परब्रह्म, हम तुम्हें वन्दन करते हैं। हमारा प्रणाम स्वीकार करो। हमें बल दो-ऐसा बल दो कि, हम अपने को आर्य बना सकें, और तमाम विश्व को आर्य बना सकें। तुम्हारी आस्था स्थापित करें और तुम्हारी निष्ठा विश्व में प्रतिष्ठित करें। नास्तिकता का जो फैशन और व्यसन चला है, उसी के मध्य में तुम्हारा महात्म्य जागृत करें! तुम्हारी अस्वीकृति Negation के आधार पर जो विभूति-वाद की लहर चलाई गई है; हे ज्ञान-रूप, हमें ज्ञान दो, हे आदि-शक्ति रूप, हमें शक्ति दो कि हम उस लहर में न बहें, प्रत्युत उसको पलट दें। हम तुम्हारे निर्मल शिशु होकर रहें, तुम्हारे सार्वभौम पितृत्व के साये में सार्वदेशिक भ्रातृत्व का प्रचार करें। हम सुखी हों, तुम्हें पाएँ, और संसार को तुम्हारे निकट लेजाएं।,,

॥ शमित्योश्म् ॥

प्रारम्भिक-शब्द

—:o:—

सार्वदेशिक सभा का बाइसवां वार्षिक वृतान्त उपस्थित किया जा रहा है। उससे पता चलेगा कि, काम यद्यपि भरसक उद्योग से किया जा रहा है, फिर भी आवश्यकता के मुक़ाबले में कितना परिमित है। आवश्यकता विराट है, काम धीमे-ही-धीमे होता है। साधन सार्वदेशिक सभा के पास जितने हैं, उनसे भरपूर काम लिया जाता है, फिर भी साधन कम हैं, और इस निवेदन की आवश्यकता ही रहती है कि, वे प्रचुर और पर्य्याप्त किए जाएं!

निस्सन्देह इस वर्ष सभा के कार्य का विस्तार बढ़ा है और उस काम में ठोसपन भी ज्यादा आ गया है। यह परमात्मा की ही कृपा का फल है। कठिनाइयाँ और अड़चने आती ही रहीं, लेकिन उनसे प्रचार के काम में ढील नहीं होने दी गई। परन्तु इतने पर ही सन्तोष कैसे मान लिया जा सकता है? जब विमुख संसार को परमात्मा के सम्मुख करने का उद्देश्य सभा का है, तब अभी थोड़े से प्रचार के काम से ही सभा को सन्तोष नहीं हो सकता। उद्देश्य की पूर्ति में अभी न जाने कितनी देर है। अभी तक आर्य्यावर्त्त में भी ५०० में ४९९ की ऐसी संख्या है, जिन तक हमारे प्रचार की ध्वनि अभी तक नहीं पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जो एक से नहीं होता, वह सब के मिल जाने से सहज हो जाता है; और जो एक दिन में नहीं होता, वह अनवरत उद्योग से होकर ही रहता है। इसी आशा और विश्वास पर हम तेईसवें साल में बढ़ते हैं और बढ़ने में आपका सहयोग माँगते हैं।

हर्ष है कि आर्य-संसार में सार्वदेशिक सभा के अस्तित्व और उद्योग के कारण एक प्रकार की एकीयता आ गई है। लोगों की मनोवृत्तियों की परिधि विस्तृत हो गई है और वे प्रान्तीय की अपेक्षा सार्वदेशिक दृष्टि-विन्दु से समाज-समस्याओं को देखने और समझने में समर्थ हो रहे हैं!

निर्माण-व्यवस्था

इस सभा की स्थापना १९०८ ई० में हुई थी और जो नियम उस समय बनाये गये थे, उनकी धारा १० में वर्णित है कि निम्न प्राँतिक सभायें सभा में प्रविष्ट समझी जावें।

नाम सभा			प्रतिनिधियों की संख्या
(१) आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब			७
(२)	"	" संयुक्तप्रांत	७
(३)	"	" राजस्थान	२
(४)	"	" बिहार बङ्गाल	३
(५)	"	" मध्यप्रदेश व बरार	२
(६)	"	" मुम्बई	५
			२६

निर्माण काल में यह सभा इन्हीं प्रान्तिक सभाओं के प्रतिनिधियों का समुदाय थी इसके बाद आर्य्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध का इस सभा में प्रवेश हुआ। जिसके २ प्रतिनिधि स्वीकृत हुये बाद को नेटाल व फ़ीजी की सभाएं सम्मिलित हुईं। इसके सिवाय संशोधित नियमोंके अनुसार जिनके अनुकूल कोई आर्य्य समाज जिसके आर्य सभासदों की संख्या १०० या अधिक हो सभा में प्रविष्ट हो सकता है, निम्न आर्य्य समाजें इस सभा में प्रविष्ट रहीं उनके प्रतिनिधि सभासदों की संख्या भी प्रत्येक के सामने दी गई है।

नाम सभा			प्रतिनिधि सं०
(१) आर्य्य समाज चावड़ी बाजार देहली			१
(२)	"	" गाजियाबाद	१
(३)	"	" खुर्जा	१
(४)	"	" मथुरा	१

इस वर्ष सभा के निम्न सज्जन प्रतिष्ठित व दानी सभासद रहे।

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
(२) " प्रो. इन्द्र "
(३) ,, स्वामी ब्रह्मानन्द ,,
(४) ,, ,, स्वतन्त्रानन्द ,,
(५) ,, म० वेद मित्र जी जिज्ञासु (दानी)

इस वर्ष के अन्त में यह सभा ९ प्रांतिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा ४ आर्य समाजों के ३४ प्रतिनिधि सभासदों ४ प्रतिष्ठित और १ दानी सभासद कुल ३९ सभासदों का समुदाय थी।

श्री पं० शंकरनाथ जी की मृत्यु के कारण सभासद का स्थान रिक्त होगया था इसकी पूर्ति के लिये बिहार बङ्गाल की सभा को लिखा गया परन्तु वर्षान्त तक वहां से किसी प्रतिनिधि सभासद का नाम न आने के कारण इस स्थान की पूर्ति न हो सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के अधिकारी तथा अन्तरङ्ग सभासद् !

गत वर्ष की अपेक्षा कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में अधिकारी तथा अन्तरङ्गः सदस्यों में क्या अन्तर हुआ था पर प्रकट हो जाय इसलिये दोनों वर्षों के अधिकारी तथा अन्तरङ्ग सदस्यों के नाम नीचे दिये जाते हैं:—

गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी प्रधान
(२) ,, प्रो. रामदेव ,, उप ,,
(३) ,, बा. श्रीराम ,, ,, ,,
(४) ,, प्रो. इन्द्र ,, मन्त्री
(५) ,, स्वामी रामानन्द ,, सहायक मंत्री
(६) , ला० नारायण दत्त ,, कोषाध्यक्ष
(७) ,, ला० ज्ञानचन्द ,, पुस्तकाध्यक्ष

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष के अधिकारी

(१) श्री नारायण स्वामी जी प्रधान
(२) ,, प्रो. रामदेव ,, उप प्रधान
(३) ,, बा० श्रीराम ,, ,,
(४) ,, स्वामी आनन्दभिक्षु ,, सरस्वती मन्त्री
(५) ,, ,, रामानन्द ,, सहायक ,,
(६) ., ला० नारायण दत्त ,, कोषाध्यक्ष
(७) ,, ला० ज्ञानचन्द ,, पुस्तकाध्यक्ष

गत वर्ष के अन्तरङ्ग सभासद

(१) श्री म. कृष्ण जी बी. ए. लाहौर
(२) ,, राय साहेब लाला गङ्गाराम जी गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया आफिस देहली
(३) ,, ला० ठाकुर दास जी हल्दौर (बिजनौर)
(४) ,, प्रो. धर्म्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री मेरठ
(५) ,, पं० शंकरनाथ जो शम्भुनाथ स्ट्रीट कलकत्ता।
(६) ,, कुंवर चान्द करण जी शारदा अजमेर
(७) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लाहौर
(८) ,, बा. गङ्गाधर प्रसाद जी

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष

(१) श्री म० कृष्ण जी लाहौर
(२) ,, राय साहेब लाला गङ्गाराम जी लाहौर
(३) ,, प्रो. धर्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री मेरठ
(४) ,, बाबू गङ्गाधर प्रसाद जी
(५) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लाहौर
(६) ,, प्रो. ताराचन्द्र जी गाजरा शिकारपुर
(७) ,, बाबू ज्वाला प्रसाद जी वकील कानपुर
(८) ,, प्रो. इन्द्र जी देहली।

नोट—सभा के योग्य सभासद श्री पं० शङ्कर नाथ जी कलकत्ता का जो कि निरंतर कई वर्ष सभा की अन्तरङ्ग सभा के सदस्य रह चुके हैं गत १४-११-२९ को देहांत हो गये। सभा ने अपनी २५-१-३० की बैठक में निम्न शोक प्रस्ताव पास किया।

"यह सभा श्री पं० शङ्कर नाथ जी की मृत्यु पर दुःख प्रकट करती हुई उनके सम्बन्धियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है।

उपदेशक विद्यालय

इस वर्ष निम्न प्रांतों के निम्न ३ विद्यार्थी मास जब से सभा की ओर से छात्र वृति पाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपदेशक विद्यालय लाहौर में पढ़ते रहे । इसके पश्चात् गोपदेव नाम का विद्यार्थी छुट्टी पर घर जाकर वापस न आया और विश्वभानु विद्यालय से भाग गया । वर्षांत पर नारायण नाम का एक विद्यार्थी विद्यालय में सभा की ओर से पढ़ता रहा है । श्री आचार्य जी दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर की रिपोर्ट से पता लगता है कि उक्त विद्यार्थी पढ़ने में अच्छा है और स्वस्थ्य भी है ।

नाम विद्यार्थी	मद्रास के किस प्रांत का रहने वाला है वा था	किस श्रेणी में है वा था
(१) गोपदेव	आंध्र	सिद्धांत भूषण द्वितीय खण्ड
(२) विश्वभानु	साउथकनारा	सिद्धांत भूषण प्रथम खण्ड
(३) नारायण	ट्रावन्कोर	"

इस वर्ष इन तीनों विद्यार्थियों की पढ़ाई आदि में सभा का २८७॥) व्यय हुआ है:—

यह व्यय मद्रास प्रचार फण्ड से दिया जाता रहा है ।

देश देशान्तर प्रचार

मदरास प्रचार

इस वर्ष सभा की ओर से मदरास प्रान्त के कर्नाटक, और आन्ध्र प्रान्तों तथा बंगलौर (मैसूर) में प्रचार कार्य सफलता पूर्वक होता रहा है । सभा के आधीन निम्न प्रचारक कार्य्य करते रहे हैं:—

(१) श्री पं० धर्म्मदेव जी विद्या वाचस्पति (२) श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी (३) श्री म० मोहनप्पा थिगलाय (१८ मार्च सन १९२९ तक) (४) श्री म० रामचन्द्र जी सिद्धान्त विशारद (२२ मार्च से वर्षान्त तक)

मंगलौर (कर्नाटक प्रचार)

(क) गत वर्ष की भांति कर्नाटक प्रचार का केन्द्र 'कर्नाटक एर्यनमिशन' के नाम से मंगलौर (साउथ कनारा) में रहा । यह केन्द्र पं० धर्म्मदेव जी के अधीन रहा ।

मौखिक प्रचार

समाज के साप्ताहिक अधिवेशन नियम पूर्वक रविवार को होते रहे हैं । श्रीमती विद्यावती देवी (धर्म्म पत्नी पं० धर्म्मदेव जी) अवैतनिक प्रचारिका की देख रेख में प्रति गुरुवार को 'स्त्री समाज' के अधिवेशन नियम से होते रहे हैं । देवी जी आर्य्य समाज मंगलौर के अधीनस्थ आश्रम--बालिकाओं तथा नगर की अन्य देवियों को हिन्दी व सीना पिरोना सिखाती रहीं । और, पं० धर्म्मदेव जी के साथ बाहर प्रचार कार्य्य में भी योग देती रहीं । अमृताबाई द्वारा स्थापित भगिनी समाज मंगलौर में भी महिलाओं में जागृति उत्पन्न करने का यत्न करती रहीं ।

पर्व्व

इस वर्ष निम्न पर्व्व बड़े उत्साह के साथ मनाए गए । ये पर्व्व प्रचार में बड़े सहायक हुए:—

श्रावणी २० अगस्त २९, विजयादशमी १३ अक्टूबर सन २९, ऋष्युत्सव ३१ अक्टूबर २९, श्रद्धानन्द दिवस २० दिसम्बर २९ को ।

मंगलौर और उसके निकट वर्ती स्थानों के अतिरिक्त निम्न स्थानों पर मिशन की ओर से प्रचार कार्य्य हुआ ।

हैदराबाद दकन, सिकन्दराबाद, मूड़ाभद्री कुन्दापुर, मैसूर, बंगलोर सिर्टी, कंगेरी, कुन्दापुर कल्लबल्ला, सीरा, वक्कर, मर्कैरा, उल्लाल ग्राम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुत्तुर, मुल्की, कड़म्बार्ड, मुंडाजे, बलंत गढ़ी, तीर्थहल्ली, कार्कल, कोल्हापुर—

मेला प्रचार

कुम्बाला गांव में मंगला देवी का स्थान है। यहां प्रति वर्ष एक मेला होता है। मंगलौर आर्य्यन मिशन की ओर से प्रचार किया गया। इस मेले में ईसाई भी अपना प्रचार खूब अच्छी तरह से करते हैं। वे अपने प्रचार में सफल भी होते हैं। लगभग १००० आदमियों की भीड़ में प्रचार हुआ। ईसाइयों ने बाधायें उपस्थित कीं, परन्तु वे असफल रहे। इस अवसर पर कई एक ईसाई पादरियों से शंका समाधान भी हुआ।

कान्फ्रेन्स

इस वर्ष २१-८-२९ को एक बड़ी कान्फ्रेन्स के अवसर पर जो कोलम्बल्ला नामक स्थान पर ब्राह्मणेतरों की ओर से हुई थी प्रचार कार्य्य किया गया। लोगों को वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न करने का भरसक यत्न किया गया। लगभग २००० व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री पं० धर्म्मदेव जी का व्याख्यान हुआ।

लिखित प्रचार

मिशन की ओर से इस वर्ष भी कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ तथापि लेख बद्ध प्रचार कनारी भाषा के 'वेद--संदेश' द्वारा किया जाता रहा। यह पत्र श्री पं० धरमदेव जी के सम्पादकत्व में प्रति मास मंगलौर से प्रकाशित होता रहा है। इस पत्र के १३०० ग्रा0 हैं तथा इस वर्ष १३४०॥≈ की आय और १२११॥≡)॥ का व्यय हुआ। बचत १२८॥≈)॥ हुई इस पत्र के सम्पादन आदि में श्री पं० धरमदेव जी को उनके सहायक म० रामचंद्र जी मास में १५ दिन सहायता देते रहे हैं। इस लेख बद्ध प्रचार से बड़ा लाभ हुआ है। जनता की सहानुभूति वैदिक धर्म के प्रति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। बंगलौर के एक सज्जन नारायण राव जी सत्यार्थ प्रकाश का 'कर्नाटक, भाषा में अनुवाद भी कर रहे हैं। इस अनुवाद कार्य्य में मिशन के प्रचारक समय समय पर सहायता करते रहे हैं। यह अनुवाद वैदिक धर्म प्रचार में बड़ी सहायता पहुँचायेगा, ऐसी आशा की जा रही है।

प्रचारक समय समय पर उस प्रांत के तथा उत्तरीय भारत के समाचार पत्रों में वैदिक धर्म्म और समाज सुधार के सम्बन्ध में अनेक लेख लिखते और प्रकाशित करते रहे हैं।

दलितोद्धार व शुद्धि

सभा के उपनिवेश वेनूर, कोडियाबैल, कुन्दापुर, केगेरी अत्तावर और अन्य अनेक समीप वर्त्ती स्थानों में दलित जातियों के घरों में निरन्तर जा जा कर प्रचार किया जाता रहा, उन्हें मद्यपानादि तथा मांस भक्षण का परित्याग करने तथा सफ़ाई रखने का उपदेश किया जाता रहा। शिक्षा व प्रचारार्थ निरन्तर प्रचारक उनके यहां जाते रहे हैं। हिन्दी--संस्कृत पढ़ाते रहे। मंगलौर आर्य्य समाज में श्रीमती बसन्तीदेवी की अध्यक्षता में एक दलितोद्धार सम्मेलन, किया गया। उसमें २५० दलितों का शुद्धिसंस्कार किया गया और उन्हें धर्म--दीक्षा दी गई। कन्गेरी नामक स्थान पर जो बंगलौर के समीप है। गुरुकुल स्थापना का विशेष प्रयत्न किया जा रहा है। इस समय तक इस संस्था में दलित जाति के बालक हैं। पास के गावों में भी दलित भाइयों की अधिक संख्या है। सभा का १ प्रचारक लगभग २ मास तक स्थिर रूप से वहां काम करता रहा है। और दूसरे प्रचारक भी समय समय पर वहां उपदेशार्थ जाते रहे हैं। दलित भाइयों को सन्ध्या, हवन, प्रार्थनादि तथा हिन्दी सिखलाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। सामाजिक कार्यों में भी वृद्धि हुई । कैंगेरी में 'आर्यकुमार सभा, की स्थापना हुई। कुन्दनपुर में 'कोटगार नाम की नीच जाति के अछूतों के लिए एक पाठशाला भी खुलवाई गई है। इसके अतिरिक्त मुंडाजे में श्रद्धानन्द मिशन तथा दलितों के लिए धर्मार्थ औषधालय भी खुलवा दिए गए। श्री भानुजी नामक १ अति सुशिक्षित मालाबारी संस्कृत ईसाई सज्जन की शुद्धि--९१--१--३० को मंगलौर में की गई—

संस्कार

इस वर्ष मिशन की ओर से तीर्थहल्ली में १ अंतर्जातीय विधवा विवाह कराया गया। ५ शाला। कर्म्म प्रवेश (गृह प्रवेश) संस्कार कराये गये।

शास्त्रार्थ

अनेक शंका समाधान के साथ साथ निम्न विषयों पर निम्न सज्जनों के साथ शास्त्रार्थ किये गये।

(१) पाश्चात्य सभ्यता और शिक्षा	श्री पं० रामचंद्र जी बंगलौर
(२) कृष्ण--लीला	,, सेठ रणछोड़दास जी ,,
(३) आर्य संस्कृति	,, पशुपति पेयर ,,
(४) बाल विवाह	,, गोपाल स्वामी ,,
(५) पुनर्जन्म	,, मौलाना अब्दुल रहीम ,,
(६) वेद का अनादित्व	,, सुब्बानरसिंह ,,
(७) आर्य समाजियों की असहिष्णुता तथा परमत समीक्षा	,, जमुनादास श्री-वास्तव
(८) अद्वैत और मूर्त्ति पूजा अवतार	,, उपेन्द्र भाई (मुल्की)
(९) वर्ण व्यवस्था तथा बाल विवाह	,, सीतारामाचार्य पत्तर
(१०) एकेश्वर वाद, बाल विवाह	,, नारायण शास्त्री पालघाट वासी (ओल्वाकोट)
(११) ईसाई मत तथा वेद	,, मैथिपस (कुम्बल)
(१२) विधवा--विवाह	,, नृसिंह शास्त्री तीर्थहल्ली

समाजों व संस्थाओं की स्थापना

इस वर्ष १७--१२--२९ को पुत्तुर में आर्य्य समाज की स्थापना की गई। इससे पूर्व मिशन की ओर से (१) मंगलौर (२) कासर गोड (३) कुंदापुर (४) तीर्थ हल्ली [५] पड़मिद्री में आर्य समाज स्थापित किये जा चुके हैं। सभा के प्रचारक समय समय पर इन समाजों के निरीक्षण आदि के लिये जाते रहते हैं। इस वर्ष १३५ आर्य समाजों के सभासद व सहायक बनाये गये। १३-१-२९ को आर्य्य भाषा के प्रचारार्थ मंगलौर में 'हिंदी प्रेमी मण्डल, की स्थापना की गई। हिंदू धर्म संरक्षिणी सभा के जिसकी स्थापना गतवर्ष में हिंदू हितों की रक्षा करने तथा हिंदुओं को विधर्मी विशेषतया ईसाई बनने से बचाने के लिये हुई थी अधिवेशन नियम पूर्वक होते रहे हैं और यह सभा अपना कार्य्य बड़ी उत्तम रीति से कर रही है।

मैसूर—बंगलौर प्रचार

इस वर्ष सभा के प्रचारकों को मैसूर और बंगलौर तथा निकट वर्त्ती स्थानों में लगभग २ मास प्रचार करने का अवसर मिला है। बंगलौर में समाज के अधीन 'वेदपाठशाला, और ब्रह्मचर्याश्रम में रहने, विद्यार्थियों को उपदेशादि देने का भी अवसर मिला इस आश्रम में गत अगस्त मास में ईशोपनिषद की कथा हुई जिसमें काफ़ी तादाद में लोग इकट्ठे होते थे समाज मन्दिर में भी कथाओं का सिलसिला १५ दिन तक रक्खा गया। बंगलौर समाज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर से शहर के अनेक स्थानों पर व्याख्यान कराये गये जिन्हें लोगों ने बड़ा पसन्द किया- बंगलौर के गण्य-मान्य, अधिकारी आदि व्याख्यानों में आते और वैदिक धर्म की ओर आकर्षित होते थे! व्याख्यान इङ्गलिश, संस्कृत और कनाड़ी भाषाओं में समयानुरूप होते रहे। मैसूर के 'वनुमाया, आदि हाई स्कूलों और कालेजों में विद्यार्थियों के मध्य प्रचार कार्य्य किया गया। वंगलार के कग्गेरी नामक ग्राम में गुरुकुल स्थापना का यत्न जारी है। इसका सम्बन्ध बंगलौर समाज से है। विस्तृत वर्णन उपर्युक्त दलितोद्धार के कार्य्य में किया गया है। आर्य्य कुमारों में जीवन संचारार्थ आर्य्यकुमार सभा की भी स्थापना की गई है।

मैसूर सिटी में वैदिक धर्म्म के प्रचार में अधिकारियों ने अनुचित हस्तक्षेप किया। श्री० पं० धर्मदेव जी विद्या वाचस्पति प्रचारक सभा को सिटी मैजिस्ट्रेट ने २०) जुर्माना और जुर्माना अदा न करने पर दस दिन की सादी कैद की सज़ा दी। अपराध बिना लाइसेन्स लिए व्याख्यान देना था। पं० धर्म्मदेव जी ने कैद में जाना स्वीकार किया। वे प्रसन्नता पूर्वक जेल में चले गए। मैसूर समाज के कार्य्यकर्ताओं ने २०) जुर्माना अदा कर दिया और वे मुक्त कर दिए गए।

स्थानीय गणपति, कनारा, नेशनल गर्ल स्कूल में दोनों प्रचारक अध्यापन कार्य्य करते रहे हैं। बंगलौर समाज के 'आश्रम, में ६ लड़के व ४ लड़कियाँ हैं। इस आश्रम के छात्रों को भी शिक्षा दी जाती रही हैं।

मिशन का कार्य्य अच्छा हो रहा है। मिशन के कार्य्य-कर्त्ता लगन और उत्साह से काम करते है।

(ख) आन्ध्र-एर्यन मिशन

इस वर्ष श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी केवल ४ मास प्रचार कार्य कर सके। गृह-सम्बंधी कार्यों तथा रोगादि के कारण वे ६ मास तक अवैतनिक छुट्टी पर रहे।

इस वर्ष निम्न १२ मुख्य स्थानों पर प्रचार का काम किया—

करनाटक, वैज़गापटम, मसूलीपटम, बिजय नगरम, पुरी, चौवोल, गन्टूर, मालपत्री वेजवाड़ा, पीपलीपटाम, गुडीवाड़ा, मद्रास सिटी, शिव समुद्रम आदि आदि।

शुद्धि

ग्राम	तालुक	संख्या व्यक्ति	सं० परिवार
१ नराइ पालिम	अग्निगडा	६४	
२ वैकिलि	कैकलूर	४८	
३ नीरू कोन्डा	गुन्टूर	३०	
४ बलन्दे पालम	वन्दर	११	
५ वेयवरम	गुडीवाड़ा	११	
६ कैकलूर	मरगड वल्लि	२०	
७ चौव्रोल			१०
८ गुडी वाड़ा			२
९ काकानी			१२
		१८४	२४

इस प्रकार इस वर्ष १८४ व्यक्तियों और २४ ईसाई परिवारों की शुद्धि हुई।

शास्त्रार्थ

मिशन की ओर से केवल १ शास्त्रार्थ 'मूर्ति पूजा' पर श्री पं० सूर्य नारायण शास्त्री जी से संस्कृत भाषा में २२ जून को गुन्टूर में हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज स्थापना

इस वर्ष कोई नवीन समाज स्थापित न हो सका। मोपली पटम में समाज स्थापना का उद्योग किया गया और आशा है वहां शीघ्र ही समाज की स्थापना हो जायगी।

बिजगापटम समाज गत वर्ष स्थापित हुआ था इस वर्ष ६५००) की लागत की जाय दाद दान में मिली। उद्योग प्रचारक का था। समाज की नियमानुसार रजिस्ट्री हो गई।

संस्कार

मद्रास सिटी में केवल १ नाम करण संस्कार तथा ५ यज्ञ कराये गये।

मौखिक व लेखबद्ध प्रचार

मिशन की ओर से शुद्धि सम्बन्धी प्रचार व व्याख्यानों के अतिरिक्त वैदिक सिद्धांतों पर लगभग ३० व्याख्यान हिंदी इङ्गलिश आदि भाषा में दिये गये। गुन्टूर से ८ मील दूर चौबोल स्थान पर थियो सोफिकल लौज में अनेक व्याख्यान इङ्गलिश में हुए जिनका प्रभाव थियोसोफिस्टस पर बड़ा अच्छा पड़ा। विविध पत्रों में शुद्धि तथा वैदिक धर्म सिद्धांतों पर लेख प्रकाशित होते रहे हैं समाज के साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश क्लास व पबलिक संभाषण जारी रहे।

आर्य्य वाचनालय

इस वर्ष भी इसमें ६ मासिक ८ साप्ताहिक तथा ३ दैनिक पत्र आते रहे हैं। जनता इनसे काफी लाभ उठाती है।

यहां पर यह भी बताना आवश्यक होगा कि—

आवश्यक नोट

मद्रास प्रचार का व्यय श्री सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला की २५० रु० मासिक की सहायता तथा देश देशान्तर प्रचार के रिजर्व फन्ड के सूद से दिया जाता रहा है परन्तु इस वर्ष श्री बिड़ला जी ने अपनी यह सहायता देने से इन्कार कर दिया। उनसे प्रार्थना की गई कि इस वर्ष के बजट के पूर्त्यर्थ वे अपनी सहायता पूर्ववत देने की कृपा करें। उन्होंने यह प्रार्थना स्वीकार करते हुए यह सहायता जारी रक्खी इसके लिये श्री बिड़ला जी सभा के धन्यवाद के पात्र हैं। सभा को इस सहायता के बन्द हो जाने पर केवल स्थिर निधि के सूद से यह प्रचार कार्य चलाना मुश्किल होगा इसी विचार को दृष्टि में रखते हुए सभा ने १८-८-२९ की अन्तरङ्ग में निश्चय किया कि मद्रास के प्रचारक आगामी वर्ष से व्यय का ⅕ भाग वहां ही पर एकत्र करने का यत्न करें और उससे आगामी वर्ष ⅖ भाग और इस प्रकार ⅕ भाग प्रति वर्ष बढ़ाते हुए ५ वर्ष के भीतर आर्थिक दृष्टि से सभा के धन की अपेक्षा न करें।

सभा के प्रचारकों को ऐसा करने के लिये प्रेरित कर दिया गया है।

बङ्गाल प्रचार

गत वर्षों से श्री प्रोफेसर रमेशचन्द्र जी बनर्जी सभा के अवैतनिक प्रचारक के रूप में बङ्गाल प्रांत में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे हैं। इस वर्ष उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं रहा इसलिये वे प्रचार कार्य के लिये बाहर भ्रमण न कर सके। ग्रीष्मावकाश में आसाम टीहू) और पूर्वीय बङ्गाल (ढाका) इत्यादि स्थानों पर वे प्रचारार्थ जाने वाले थे परन्तु श्री हरि प्रसाद जी के यह लिखने पर कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसम्बर का मास वहां के लिये उपयुक्त होता है वे वहां प्रचारार्थ न जा सके। म० हरिप्रसाद जी अपने अन्य ३८० साथियों के साथ आर्य्य समाज की दीक्षा लेना चाहते थे। दिसम्बर मास में प्रो० बनर्जी का स्वास्थ्य खराब होगया सभा की ओर से सन्ध्या व हवन की पुस्तकें वितीर्णार्थ शीघ्र में भेजी गई।

बीमारी की दशा में घर बैठे हुये श्री प्रो० रमेशचन्द्र जी लेख-बद्ध और कुछ सामान्य प्रचार करते रहे। राम कृष्ण मिशन के मुख-पत्र 'उद्बोधन' (मासिक पत्र) में गो हत्या विशेष कर यज्ञ में, गो और अन्य पशुवध। और वैदिक धर्म्म के सम्बन्ध में लेख लिखते रहे। इन लेखों का शिक्षित बंगालियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। बंगाल के साहित्य में 'यज्ञ में गो हत्या और अन्य पशुवध होना धर्म्म है, जैसे बुरे भाव व मिथ्या विश्वास भरे चले आते हैं। बड़े दिन की छुट्टियों में आर्य समाज 'हावड़ा' के वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रचार कार्य्य किया। प्रो० जी All Bengal Professor Association All Bengal Seachers, Association Hindu Sabha. आदिकों में पब्लिकालेक्चरों लेखों और व्यक्तिगत मिलने जुलने से समय समय पर वैदिक धर्म्म का कुछ न कुछ प्रचार करते रहे हैं।

प्रो० रमेशचन्द्र जी ने रुग्णावस्था में भी वैदिक धर्म्म के प्रचार के लिये जो कुछ भी किया है वह प्रशंसनीय है। सभा उन्हें हार्दिक धन्य-वाद देती है। आशा है आगामि वर्ष वे सुविधा-नुसार वैदिक धर्म्म के प्रचार में योग देंगे।

द्वीप द्वीपान्तर प्रचार

इस वर्ष श्री स्वामी भवानी दयाल जी संन्यासी बड़ी लगन और तत्परता के साथ दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म्म का प्रचार कार्य्य करते रहे।

श्री स्वामी जी ने निम्न स्थानों पर वैदिक धर्म्म का प्रचार कार्य्य किया।

स्प्रिङ्ग, जोहान्सबर्ग, न्यूकासल, लेडलाउसर, वैलेंगिज़, डंडी, ग्लंको, लेडीस्मिथ, डरबन, मेरित्सबर्ग, आदि आदि,

शुद्धि

इस वर्ष २ कलर्ड महिलाओं की शुद्धि की गई। पहली शुद्धि २-५-२८ को जोहान्सबर्ग में फ्रान्सिस बुईसन की तथा दूसरी २७-७-२८ को डरबन में मिस लूसी की की गई।

समाज स्थापना

लेडहाउसर में आर्य समाज की स्थापना हुई जोहान्सबर्ग में 'सर्वोपरि संस्था' तथा ट्रांसवाल में हिन्दुओं की धार्मिक, सामाजिक और नैतिक उन्नति के लिये 'हिन्दू सर्विस लीग' की स्थापना की गई।

संस्कार

इस वर्ष ११ यज्ञ, ५ नाम करण तथा ६ उपनयन संस्कार कराये।

आपने उपरोक्त कार्य्यों के अतिरिक्त लेख-बद्ध प्रचार गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी अधिक किया।

श्री स्वामी जी ने अपनी दो वर्ष की सेवामें दक्षिण अफ्रिका में वैदिक धर्म्म के प्रचार के लिये अर्पित की थी। आपने ६-१०-२९ को २ वर्ष समाप्त हो जाने पर भारत के लिये प्रस्थान कर दिया और वे मुम्बई, कलकत्ता, वैद्यनाथ धाम आदि स्थानों पर वैदिक धर्म्म का प्रचार करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए प्रवासी भवन बड्डु आरा में पहुंच गए हैं। आशा है कि भारत में रहते हुए भी आप वैदिक धर्म्म के प्रचार में योग देते रहेंगे।

श्री० डाक्टर भगतराम जी सहगल ने अवैतनिक प्रचारक के रूप में दक्षिण अफ्रीका, ईस्ट अफ्रीका और लंदन में वैदिक धर्म्म का प्रचार किया। दरबन में प्रशंसित डाक्टर जी ७-२-२९ को पहुँचे थे। लोगों ने उनका काफ़ी स्वागत किया। स्थान-स्थान पर प्रचार कार्य्य किया। आर्य्य समाज दरबन का पुनः संगठन करने के बाद उन्होंने निम्न समाजों की स्थापना की।

(१) काटो मैंनर, (२) हाविक (३) रूदरलैण्ड, (४) मैरिटस वर्ग, (५) न्यूकैसिल आदि–श्री० डाकृर भगतराम जी नैटाल (द० अफ्रीका) में ५ महीने रहे। इस अर्से में उन्होंने इङ्गलिश और हिन्दी में लगभग १०० लैक्चर दिये। इस प्रान्त में उनका समय बड़ा घिरा रहा। बहुत से युरोपियन पुरूष और स्त्रियों के हृदयों में वैदिक धर्म के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ। स्त्रियों में श्री० डाकृर जी की धर्मपत्नी जी के कारण काफ़ी जागृति पैदा हुई। प्रचार कार्य्य भी खूब हुआ। दरबन में १ स्त्री समाज की स्थापना हुई ! आर्य प्रतिनिधि सभा नैटाल के अधीन जो आर्य्य समाज से भिन्न सभायें थीं उनको पृथक करके उसे पूर्ण आर्य्य सामाजिक प्रतिनिधि सभा का रूप दिलाया ! आर्य्य प्रतिनिधि सभा का नियमानुकूल निर्वाचन किया गया और उन्हीं के उद्योग से सभा का कार्यालय दरबन से पीटरमार्टिज़बर्ग ले जाया गया !

इसके बाद ट्रान्सवाल में जाने की सरकार द्वारा उन्हें आज्ञा दे दी गई परन्तु उस स्थान पर लैक्चर देने की मनाही की गई ! विरोध स्वरुप उन्होंने उस प्रान्त में जहाँ प्रचारक को बोलने तक की आज्ञा न दी जाय जाने से इन्कार कर दिया।

दक्षिण अफ्रीका के दौरे में डाकृर साहब ने १४ यज्ञोपवीत, ६ नाम करण, ३ शुद्धि, और २ अन्त्येष्टि कुल २५ संस्कार कराये !

अफ्रीका से चलकर श्री० डाकृर जी २२-८-२९ को इग्लैण्ड पहुँचे। जैसा कि पत्रों में पहले प्रकाशित हो चुका था कि लंडन में आर्य्य समाज स्थित है, डाकृर जी ने वहाँ कोई समाज न पाया। हाँ 'आर्य्य-भवन, नाम का एक भवन बिड़ला ब्रादर्स का मिला। श्री० डाकृर जी ने बड़े उत्साह से लंडन में वैदिक धर्म्म का प्रचार करना शुरु किया। अनेक भाषण दिये। वैदिक धर्म्म की महत्ता का वहाँ के लोगों को परिचय कराया। लोगों की रुचि व प्रेम वैदिक धर्म्म के प्रति होने लगी। प्रचार को स्थिर रुप देने के उद्देश्य से लंडन के आर्य्यों की ९-१० २९ को एक सभा की और उसमें आर्य्य समाज की स्थापना का निश्चय हुआ। तदनुकूल आर्य्य समाज स्थापित किया गया। आर्य्य समाज के साप्ताहिक सत्संग बड़े समारोह से होते रहे हैं! समाज के ४० सभासद हैं आर्य्य संस्कृति और वैदिक धर्म्म के प्रचार के लिये श्री० डाकृर जी ने Voice of Arya Varta नाम का एक अंग्रेजी अख़बार लंडन से निकालने का एक सज्जन के आर्थिक सहायता देने के आश्वासन पर निश्चय किया। पत्रों में घोषणा भी की गई ग्राहक श्रेणी में नाम भी लिखाये गये परन्तु सहायता प्राप्त न होने के कारण पत्र को सम्प्रति न निकालने के लिये बाधित होना पड़ा। लंडन में ईसाइयों का तो कहना ही क्या मुसलमानों के ३ अख़बार निकल रहे हैं! और वे इन्ही पत्रों द्वारा अपना प्रचार कार्य्य कर रहे हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानों की लंडन में ३ मिशन और २ मस्जिदें और हैं। वे लोग अपना प्रचार बड़ी तेज़ी के साथ कर रहे हैं। प्रचार ही इस पत्र के निकालने का मुख्य उद्देश्य था।

शुद्धि कार्य्य

डाक्टर जी को जहाँ अपने प्रचार कार्य्य में सफलता मिली वा मिलरही है, वहाँ शुद्धि कार्य भी कम महत्त्व पूर्ण नहीं समझा जा सक्ता है। ४-६-२६ को प्रचारार्थ डाक्टर जी मैनचेस्टर गये। उनके प्रचार कार्य्य और वैदिक धर्म्म के सिद्धान्तों पर मुग्ध हो मिस Edith Constance watson ने शुद्धि के निमित्त डाक्टर जी से निम्न प्रार्थना की।

"गत कुछेक दिनों से आपके साथ वैदिक धर्म्म के सम्बन्ध में बात चीत करने से, मेरे ऊपर उस धर्म्म की कुछेक बातों ने बड़ा प्रभाव डाला है। मैं कृतज्ञ हूंगी यदि आप मुझे हिन्दू (आर्य्य) धर्म्म की दीक्षा दें।„ तदनुकूल उनकी प्रार्थना स्वीकार की गई और उनकी शुद्धि बड़े समारोह के साथ ६ सितम्बर को हुई। उस देवी का नाम 'सुशीला, रक्खा गया। इस शुद्धि संस्कार में देवी के माता पिता की सम्मति थी और उन्हों ने भी इसमें भाग लिया था। इसके बाद देवी की इच्छा-नुसार उनका विवाह श्री० डा० मूलराज जी के साथ करा दिया गया।

(२) २-६-२६ को मिलहिल में श्री० W. Sougor की शुद्धि की गई!

(३) १६-२-३० रविवार को मिसओलिव ऐटकिन्सन की शुद्धि की गई और उनका नाम उन्हीं की इच्छानुसार शीला देवी रक्खा गया। उनकी प्रार्थना का भाव यह था: —

यह लिखते बड़ी प्रसन्नता होती है कि मैंने हिन्दू (आर्य्य) धर्म्म की दीक्षा लेनेका निश्चय कर लिया है। बहुत दिनों से हिन्दू धर्म्म और हिन्दू शास्त्रों में दिलचस्पी ले रही हूँ। मैं अपनी इच्छा से उस धर्म्म को स्वीकार करना चाहती हूँ। मुझे अभी तक नियमानुकूल दीक्षा देने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। आपके इङ्गलैण्ड में प्रचार कार्य्य को देखकर मैं अपने उस संकल्प को पूर्ण कर देना चाहती हूँ। मुझे आशा है कि आप मुझे निराश न करेंगे और वैदिक धर्म्मका दरवाजा मेरे लिये खुला रहेगा।

लोगों की रुचि वैदिक धर्म्म की ओर प्रवृत्त हो रही है। भिन्न भिन्न संस्थाएं अपने यहाँ बुला कर लैक्चर करा रहे हैं। ईसाई पादरी वैदिक धर्म्म के प्रचारक को अपने गिरजाघरों में आमंत्रित कर रहे हैं। इस समय तक डाक्टरजी ने क्लैवैटस्की हाल, थ्री फील्ड मूवमेण्ट, ह्यु मैनिस्टा क्लब Old Irish Apostle Trinity Hall British Isles Womens place आदि मुख्य स्थानों में अनेक भाषण और उपदेश दिये हैं। जनता में काफ़ी जागृति और उत्साह है।

जहाँ शुद्धि का ठोस कार्य हुआ वहां डाक्टर जी को अनेक व्यक्तिगत कठिनाइयां झेलनी पड़ी और पड़ रही हैं। पहले लन्डन वालों ने उन्हें मकान तक किराये पर न दिया। अब एक १४ पौं० (लगभग १८६) मासिक) पर मकान किराये ले रक्खा है। उसी के एक भाग में वे स्वयं रहते हैं और उस भाग में समाज के अधिवेशन होते हैं! इस अन्तिम शुद्धि के कारण वहाँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग उनका विरोध करने लग गये हैं। जो लड़की डाक्टर जी के घर में काम काज किया करती थी उसने काम करना छोड़ दिया। धोबी ने कपड़े साफ करने तक छोड़ दिये। और भी बहुत सी पारिवारिक कठिनाइयों को झेलते हुए डाक्टर जो बड़ी लग्न से प्रचार कार्य कर रहे हैं हम उनके उत्साह की प्रशंसा करते हैं- और प्रचार कार्य के लिये धन्यवाद देते हैं।

सार्वदेशिक पुस्तकालय

गत वर्ष

	पुस्तक संख्या	कच्चा मूल्य
गत वर्ष का शेष	३६३५४	२६५६२॥)
आय	११३०	५१२॥)
योग	३७३८४	२८०७५)
विक्री	१९९६	१५६५।)॥
शेष	३५४८८	२६५०९॥≡)॥

कार्य विवरणान्तर्गत· वर्ष

	पुस्तक संख्या	कच्ची कीमत
गत वर्ष का शेष	३५४८८	२६५०९॥≡)॥
आय	२७३०	५७३॥।)॥
योग	३८२१८	२७०८३॥)
विक्री	२९५८	१५२७॥।-)
शेष	३५२६०	२५५५५॥≡)

सभा के स्थिर पुस्तकालय का विवरण

	पुस्तक संख्या	मूल्य
गत वर्ष का शेष	१०४	४९=)॥
आय	४७	२०-)
योग	१५१	६९=)॥

सार्वदेशिक पत्रिका

आय

ग्राहकों से	७४३।=)
विज्ञापनों से	१२)
आय	७५५।=)

व्यय

कागज	२८७॥।-)११
छपाई	९८७॥)
टिकट डाक व स्टेशनरी	१६०॥।)॥
लेखक	१८२॥-)
	१६१८॥≡)५
घाटा	८६३।-)५

गत वर्ष पत्रिका में ९५२।=)४½ का इस वर्ष ८६३।-)५ का घाटा रहा गत वर्ष इस पत्रिका के ३५५ पेड ग्राहक थे। वर्ष के अन्त पर ३५१ ग्राहक थे। यत्न किया जा रहा है कि अधिक से अधिक ग्राहक बनाये जावें अप्रैल सन् २९ से वर्ष के अन्त तक यह पत्र श्री स्वामी आनन्द भिक्षु जी सरस्वती मन्त्री सभा के सम्पादकत्व में रहा। श्री सम्पादकजी के निरन्तर ३-४ मास रोगग्रस्त रहने तथा लेखक का सुप्रबन्ध न रहने के कारण इस कार्य में जैसा चाहते थे वैसी उन्नति न हो सकी।

दी लिबरेटर

अङ्गरेजी साप्ताहिक पत्र 'दी लिबरेटर' के एक कम्पनी द्वारा जारी होने की सूचना गत वर्ष की रिपोर्ट में दी गई थी। लिबरेटर कुछ महिनों तक जारी रहा परन्तु अब कई मास से बन्द है। इस पत्र के सम्बन्ध में विस्तृत समाचार उसी पत्र के मैनेजिङ्ग डायरेक्टर के कार्यालय से ज्ञात हो सकता है। इस सभा से उसका कुछ सम्बन्ध नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म्मार्थ सभा

इस सभा का प्रथम अधिवेशन २५-४-२९ को देहली में बुलाया गया। कौरम १५ का था परन्तु कौरम पर्य्याप्त न होने के कारण दुःख है यह अधिवेशन न हो सका।

सभा की १४-४-२९ की अन्तरङ्ग सभा के निश्चय सं० ३ के अनुसार यह कौरम १५ के स्थान में १० का कर दिया गया है।

इस वर्ष भी इस सभा का संगठन निम्न प्रकार से रहा।

नाम प्रान्त	प्रतिनिधि संख्या
(क) पञ्जाब	७
(ख) संयुक्तप्रान्त	७
(ग) राजस्थान	५
(घ) विहार बँगाल	५
(च) मुम्बई	३
(छ) सिन्ध	३
(ज) मध्य प्रदेश	२
(झ) आर्य समाज हैदराबाद दक्खन	१
(ट) " " बैंकौक	१
(ठ) " " बग़दाद	१
(ड) विदुषी देवियाँ	२
(ढ) संन्यासी	५
	४२

दुःख है कि इस सभा के सदस्य श्री पं० बालकृष्ण जी शास्त्री तथा श्री कुंवर सूर्य्यकरण जी शारदा का देहान्त हो गया। ये दोनों सज्जन क्रमशः मुम्बई व राजस्थान की सभा के प्रतिनिधि सदस्य थे। इन की स्थान पूर्त्ति के लिये प्रशंसित सभाओं को लिखा जा चुका है।

इस सभा का प्रथम अधिवेशन २९-३-३० के लिये बलिदान भवन देहली में बुलाया गया है। इस अधिवेशन में अन्य विषयों के अतिरिक्त अधिकारियों व कार्य्य कारिणी का निर्वाचन तथा भविष्य की कार्य्य प्रणाली के सम्बन्ध में विचार किया जायगा।

कार्यालय व पत्र व्यवहार विवरण

कार्य्यालय में जो पत्र-व्यवहार हुआ उसका विवरण नीचे के चित्र से ज्ञात होगाः—

	कार्य्य विवर- गतवर्ष	णान्तर्गतवर्ष
आनेवाले पत्रोंकी संख्या	१०९८	२५५६
जाने " " " "	३९९०	३७३२

इन पत्रों के सिवाय ४ पत्रिकायें समस्त समाजों में भेजी गईं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:—

पहली पत्रिका

यह पत्रिका १६-६-२९ को समस्त समाजों को आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की १९-५-२९ को अन्तरङ्ग के इस निश्चय की सूचना देने, भेजी गई कि इस सभा की दृष्टि में सत्याग्रह के लिये मुरादाबाद उपयुक्त स्थान है।

दूसरी पत्रिका

इसी पत्रिका के सिलसिले में समस्त समाजों को सूचित किया गया था कि संयुक्त प्रान्त के गवर्नर महोदय से उस सभा के प्रधान १३-७-२९ को नगर कीर्तनों की बन्दिश के सम्बन्ध में भेंट करेंगे इस लिये समस्त समाजें इस भेंट के सम्बन्ध में ७-७-२९ को प्रस्ताव पास करके यू० पी० की सरकार के पास भेजें ताकि श्री प्रधान जी को नैतिक सहायता मिल जावे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी पत्रिका

यह पत्रिका १५-११-२८ को सभा के कार्यालय से जारी की गई और इसके द्वारा समस्त समाजों को प्रेरित किया गया कि वेः—

(१) पत्रिका में दी हुई सूची व तिथि के अनुसार ही त्यौहार मनाया करें—

(२) दयानन्द ग्रन्थ संग्रह जिन आर्य्यों के पास व आर्य्य समाजों में नहीं हैं वे इस सभा से मोल ले लेवें।

(३) २०-१२-२८ को श्रद्धानन्द चतुर्थी मनायें और अधिक से अधिक संख्या में अन्यमतावलम्बियों की शुद्धि की जाय।

(४) युरोप व अमेरिका में दो उपदेशक स्थिर रीति से भेजने के लिये १ लाख रुपये की अपील इस प्रकार कि १०० धनी पुरुष ५००) ५००) देकर इस सभा के आजन्म सभासद बन जावें भेजी गई।

(५) जिन आर्य्य समाजों में सार्वदेशिक नहीं जाता है वे इसके ग्राहक बनें और अन्य लोगों को ग्राहक बनाने के लिये प्रेरित भी करें।

(६) सभा के शामियाने के ग्राहक बनावें ताकि शीघ्र ही बेच दिया जाय।

चौथी पत्रिका

वह पत्रिका 'आर्य मैरेजबिल का आन्दोलन करने के लिये ८ फरवरी को जारी की गई।

(७) इस वर्ष भी सार्वदेशिक सभा, 'रक्षा समिति' और सार्वदेशिक पत्रिका का सम्मिलित कार्यालय रहा। कार्यालय में दो लेखक और एक चपरासी काम करते रहे। इनका कुल व्यय १००) मासिक रहा वह तीनों विभागों में इस प्रकार विभक्त रहा।

सार्वदेशिक सभा	५५)
आर्य्य रक्षा समिति	३०)
सार्वदेशिक पत्रिका	१५)
	१००)

इस सम्बन्ध में यहाँ श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक, हैड क्लार्क सभा, के काम की प्रशंसा कर देना आवश्यक है। उन्होंने बड़े योग से काम किया। दुःख है कि, उनके एक सहायक श्री महेशानन्द जी का असमय वियोग सभा को सहना पड़ा वे अपना काम जिम्मेदारी से करते थे। उनके स्थान में श्री गणेशदत्त जोशी काम कर रहे हैं। वह भी कुशल और योग्य सहायक हैं।

अधिवेशनों का विवरण सभासदों की उपस्थिति सहित

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष में इस सभा के २ साधारण और नैमित्तिकाधिवेशन हुए और ८ अधिवेशन अन्तरङ्ग सभा के हुए जिनमें सभासदों की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है—

सं०	नाम सभासद	उपस्थिति सं०
१.	श्री पूज्य म० नारायण स्वामी जी	२
२.	" ला. ज्ञानचन्द जी	२
३.	" म. कृष्ण जी बी. ए.	२
४.	" पं० विशम्भरनाथ जी	०
५.	" बा. मोहनलाल जी	...
६.	" ला. नारायण दत्त जी	२
७.	" राय० गंगाराम "	२
८.	" प्रो० रामदेव "	२
९.	" बा. घासीराम "	२
१०.	" प्रो० धर्मेन्द्रनाथ "	२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११. „ बा. श्रीराम „ २
१२. „ „ गजाधर प्रसाद „ २
१३. „ ला. ठाकुर दास „ १
१४. „ बा. ज्वाला प्रसाद „ २
१५. „ बा. पूर्णचन्द „ २
१६. „ पं. चन्द्रगोपाल जी मिश्र हरदा ...
१७. „ बा० घनश्याम सिंह जी गुप्त ...
१८. „ कुंवर चान्दकरण जी शारदा ..
१९. „ प्रो सुधाकर जी एम. ए. २
२०. „ स्वामी रामानन्द जी २
२१. „ बा. हरशरण दास „ २
२२. „ पं० शंकरनाथ „ ...
२३, „ बा. देवधारीसिंह जी ...
२४. „ पं. रामदत्त „ उपाध्याय ....
२५. „ प्रो. ताराचन्द जी गाजरा २
२६. „ „ इन्द्र जी २
२७. „ स्वामी ब्रह्मानन्द जी २
२८. „ भानु जी भाई राजकोट ....
२९. „ डा. कल्याणदास जी देसाई ...
३०. „ बा. विजयशंकर मूलशंकर ...
३१. „ बा. कालिदास कुबेरदास पटेल ...
३२. „ „ फूलचन्द बापू जी शाह ...
३३. „ म० वेद मित्र जी जिज्ञासू ...
३४. „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी २
३५. „ पं० गोपेन्द्र नारायण जी पथिक (फौजी) ...
३६. „ पं. तोताराम जी सनाढ्य (फीजी) ...
३७. „ म० सत्यदेव जी नैटाल ...
३८. „ स्वा० आनन्दभिक्षु जी सरस्वती २

अन्तरङ्ग सभा के अधिवेशनों में

सं०	नाम सदस्य	उपस्थिति
१.	श्री म० नारायण स्वामी जी	८
२.	„ बा. श्रीराम „	४
३.	„ स्वामी रामानन्द „	६
४.	„ प्रो० इन्द्र „	१
५.	„ „ धर्मेन्द्र नाथ „	४
६.	„ बा. गजाधर प्रसाद „	२
७.	„ स्वामी स्वतन्त्रानन्द „	७
८.	„ राय० गंगाराम „	३
९.	„ ला० ज्ञानचन्द „	६
१०.	„ प्रो. रामदेव „	३
११.	„ ला. नारायणदत्त „	५
१२.	„ म० कृष्ण „	२
१३.	„ स्वा० आनन्दभिक्षु जी सरस्वती	५
१४.	„ प्रो० ताराचन्द जी गाजरा	३
१५.	„ बा. ज्वाला प्रसाद जी	...

आर्य्य रक्षा समिति

कार्य्य विवरणान्तर्गत आर्य्य रक्षा समिति निम्न सभासदों द्वारा निर्मित रही :—

(सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि)

१. श्री नारायण स्वामी जी
२. „ प्रो० रामदेव जी
३. „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
४. „ म० कृष्ण जी
५. „ कुँवर चान्दकरण शारदा जी
६. „ बा० श्रीराम जी
७. „ स्वामी रामानन्द जी
८. „ प्रो० इन्द्र जी
९. „ लाल नारायणदत्त जी
१०. „ लाल ज्ञानचन्द जी
११. „ प्रो० ताराचन्द जी

(आर्य्य वीरदल की ओर से सदस्य)

१२. „ म० आतमाराम जी
१३. „ पं० शंकरदत्त जी
१४. „ म० सेवाराम जी
१५. „ म० रामचन्द्र जी
१६. „ लाला देशबन्धु जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(नामज़द किये गये सदस्य)

१७. „ स्वामी ब्रह्मानन्द जी
१८. „ म० विजयशंकर जी
१९. „ बा० आनन्द प्रिय जी
२०. „ स्वामी चिदानन्द जी
२१. „ पं० नन्दकिशोर विद्यालङ्कार जी

अधिकारी

५-९-२९ तक इस समिति के श्री० महात्मा-नारायण स्वामी जी, प्रो० इन्द्र जी, श्री० ला० नारायणदत्त जी, क्रमशः प्रधान-मन्त्री व कोषाध्यक्ष रहे।

५-९-२९ के चुनाव के पश्चात् वर्ष के अन्ततक निम्न प्रकार से अधिकारी रहे :—

१. श्री महात्मा नारायण स्वामी जी (प्रधान) पदाधिकार से
२. „ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उप प्रधान
३. „ स्वामी रामानन्द जी संन्यासी मन्त्री व प्रधान दलपति
४. „ लाला नारायणदत्त जी (कोषाध्यक्ष पदाधिकार से)

आर्य्य वीरों की संख्या व धन का विवरण

प्रान्त	लगाये	संख्या
पंजाब	४०००	४६८०
संयुक्तप्रान्त	५०००	५४०८
राजस्थान	५००	१४८
मध्यप्रदेश	२५०	३८९
बिहार बंगाल	५००	१०३
मुम्बई	५००	२००
ब्रह्मादि	२५०	३६
	११०००	१०८८४

इस संख्या को देखने से विदित होगा कि इस वर्ष वीरों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई।

प्राप्त धन का विवरण आदि

प्रान्त	लगाया	प्राप्त
पंजाब	१००००	६८५९≡)॥
पंजाब कालेज विभाग	५०००	१००
संयुक्तप्रान्त	१००००	११४९६=)॥
मध्यप्रदेश	२५००	५८८।)
राजस्थान	५०००	१९८७॥।)
बिहारबंगाल	१००००	२३८५)॥
मुम्बई	१००००	७२८)
सिन्ध	२५००	५००)
ब्रह्मादि	२५००	७१३।=)
विविध	...	१[illegible]७॥)
	५७५००	२५१७५।)॥।

स्वागत कारिणी से ६७०८॥≡)॥
सूद दो वर्ष का २४५०)
स्वा० की पेशगियाँ ४२०१=)॥
९५७९=) ९५७९=)

सर्व योग ३४७५४।=)॥।

सार्वदेशिक आर्य्य सम्मेलन की गतवर्ष की पेशगियों में से श्री ला. देशबन्धु जी, श्री स्वा० रामानन्द जी, श्री पं. जानकी नाथ जी के नाम जो २५०, १३१।-)॥ व ६०५) की क्रमशः पेशगियां थीं वह वसूल हुईं और उनका धन रक्षा निधि में जमा किया गया। अब निम्न पेशगियां शेष प्राप्तव्य हैं उनके वसूल करने का यत्न किया जा रहा है:—

१. श्री बा. मिलखासिंह जी ११५)
२. „ डा. तुलसीराम जी ५९-)॥।
३. „ बा. अमीरचन्द जी खोसला (भूमि की जमानत मद्धे) १००)

७२४-)॥।

इनका धन प्राप्त होने पर रक्षा निधि में जमा किया जायगा।

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की सूची

१ शताब्दी वृतान्त	१।)
२ बायस आव आर्यावर्त	॥)
३ सत्यार्थ प्रकाश संस्कृत सजिल्द	२॥)
४ सत्यार्थ प्रकास अ०	२।)
५ पर्व पद्धति	॥।)
६ आर्य समाज	॥)
७ दश नियम व्याख्या	।)
८ भजन भास्कर	॥)
९ ओं प्रत्यक्ष	॥।)
१० टू्थ वेदाज	॥)
११ टू्थ	॥=)
१२ क्रूसिफिक्शन	।=)
१३ वैदिक टीचिंग	१॥)
१४ वैदिक सिद्धान्त	१।)
१५ वैदिक सिद्धान्त सजिल्द	१॥)
१६ विरजानन्द विजय	।)
१७ दयानन्द लहरी	-)॥
१८ प्राणायाम विधि	-)
१९ टार्चबेयरर	१॥)
२० दयानन्द ग्रन्थमाला	५)
२१ महर्षि जीवन चरित्र	।)
२२ व्यवहारभानु	=)॥
२३ भ्रमोच्छेदन	-)
२४ भ्रान्ति निवारणम	=)
२५ शिक्षा पत्री	=)
२६ गोकरुणा.निधि	=)
२७ वेद विरुद्धमत खण्डन	-)॥
२८ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१)
२९ संस्कार विधि	॥)
३० स्वीकार पत्रम	)॥
३१ पंचयज्ञ महाविधि	=)॥
३२ सत्य धर्म विचार	-)॥
३३ काशी शास्त्रार्थ	-)
३४ आर्य्याभिविनय	।-)
३५ आर्योद्देश्य रत्नमाला	)॥

३६ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी	१)
३७ सृष्टि विज्ञान	२)
३८ नीति विवेचन	१॥)
३९ आरोग्यता	॥)
४० हिन्दी कुरान प्र० भाग	॥।)
४१ हिंदी कुरान द्वि० भाग	॥।=)
४२ वैदिक जीवन	॥)
४३ तुलनात्मक विचार	॥)
४४ भारतमाता का सन्देश	॥)
४५ वैदिक संध्या रहस्य	-)॥
४६ बंगला अनुवाद आर्य समाज	।)
४७ आनन्द संग्रह	१)
४८ पथ प्रदीप	१)
४९ गृहिणी सुधार	॥।=)
५० वैदिक विवाहादर्श	१।)
५१ शुद्धबाल मनुस्मृति	।-)
५२ दृष्टान्त समुच्चय	१॥)
५३ वर्ण व्यवस्था	-)
५४ धर्म शिक्षा प्र० भाग	=)
५५ धर्म शिक्षा द्वि० भाग	।)
५६ सांख्यदर्शन	१)
५७ अष्टो पनिषद	२)
५८ Arya Samaj & Theosophical Society	=)
५९ वेदगोमेध	=)
६० चित्रमय दयानन्द	१।)
६१ शिक्षा प्रणाली	१)
६२ आरोग्य दिग्दर्शन	।=)
६३ भगवद्गीता	१)
६४ हिंदु मुसलिम इतिहाद	।)
६५ कृष्ण सुदामा	॥)
६६ शुद्ध नामावली	॥)
६७ भावना	॥।=)
६८ बाल ब्रह्मचारिणी कुन्तीदेवी सादी	१॥)
,, ,, सजिल्द	१॥।)
,, ,, राजसंस्करण	३)
६९ इज़हारे हक़ीक़त	१)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य जगत को नवीन सन्देश

त्याग ! तप !! बलिदान !!!

सार्वदेशिक मासिक-पत्र

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, विविध—बिषय विभूषित सचित्र—मासिक पत्रः—

सम्पादक—श्री० स्वामी आनन्दभिक्षु सरस्वती

य दि आ प

(१) वैदिक सभ्यता के मर्मज्ञ, कर्मनिष्ट, सात्विक प्रेम के उपासक प्रतिष्ठित आर्य महानुभावों के सात्विक, प्रौढ़ और जीवनप्रद लेख पढ़ना चाहते हैं।

(२) देश के भिन्न—भिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं के मार्मिक समयानुकूल परिस्थिति द्योतक बिचारों से लाभ उठाना चाहते हैं।

(३) भूमण्डल की धार्मिक, सामाजिक घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन जानना चाहते हैं।

(४) देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तरों में वैदिक पुण्य-पीयूष प्रवाहित कर देने वाले आर्य समाज की शिक्षा सम्बन्धिनी सामाजिक, शुद्धि, सङ्गठन, दलितोद्धार विषयक उथल-पुथल मचा देने वाली क्रान्तिकारी संस्थाओं का परिचय प्राप्त करना चाहते हैं।

तो

आज ही, हां ? आज ही एक पत्र डालकर सचित्र "सार्वदेशिक" के ग्राहक बन जाइये।

प्रबन्धकर्ता—"सार्वदेशिक" देहली।

ताज़ा सब्ज़ी का बीज मगाओ

पता—मेहता डी० सी० वर्मा आर्य टोला बेगमपुर, पटना।

---

५००) इनाम लीजिये

महात्मा प्रदत्त श्वेत कुष्ट (सफेदी) जो अद्भुत बनौषधि है एक दिन में आधा और तीन दिन में पूर्ण आरोग्य। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा कर थक गये हों तो इसे लगावें। बे फायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो ‒) का टिकट लगाकर प्रतिज्ञा पत्र लिखा लें। मूल्य २)

अखिल किशोर राम,
नं० ७ पो० कतरी सराय (गया)

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये श्रद्धानन्द प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार, देहली से छप कर प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

मार्गशीर्ष
१९८७ वि०
नवम्बर
१९३० ई०

सार्वदेशिक

LIBRARY

भूमण्डल

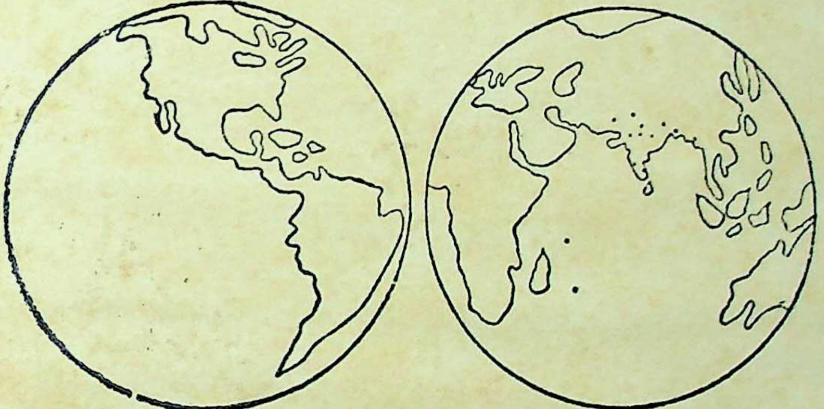

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥ वेद ॥

वार्षिक मूल्य २) रु०

सम्पादक—स्वामी आनन्दभिक्षु सरस्वती

एकप्रति ≈) आना

विदेश से ५ शिलिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri के नियम

आर्य जगत को नवीन सन्देश

त्याग ! तप !! बलि

सार्वदेशिक मासिक-

३. संन्यासी-कर्तव्य दर्पण—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ... ६
४. कई विचारणीय बातें—श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी ... ८
५. सनातनी और वही नियोग—श्री स्वामी मङ्गलानन्दपुरी ११
६. हम कौन थे? क्या होगये हैं—श्री पं० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार एम. ए. १३
७. समय का दुरुपयोग—श्री रघुनाथ जी पाठक १६
८. हृदय की पुकार—श्री चुन्नीलाल शर्मा १९
९. यं.रुप के दयानन्द—श्री भगवानदास जी केला भारतीय ग्रन्थ माला वृन्दाबन २२
१० आर्य समाज का अछूतों में कार्य—श्रीयुत देवेन्द्र कमल जी एम० ए० ... २५
११. भारतीय महिलाओं ने परदा उठा दिया २७
१२ वैज्ञानिक करामात ... ... २.
१३. साहित्य समालोचना ... ३१
१४. वेद और पशुवध—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ... ३३
१५. दुर्घटना—श्री हरिश्चन्द्र ... ३५
१६. सम्पादकीय ३७

निवेदन:—

...अंग्रेजी मास की १५ ... है।

२ इसका वार्षिक मूल्य भारत के लिये दो रुपया, विदेश के लिए पांच शिलिंग है। वी० पी० से मंगाने वालों को ≡) इस से अधिक देने पड़ेंगे।

३ सार्वदेशिक का वर्ष मार्च मास से आरम्भ होता है, किंतु वर्ष के किसी भी मास से कोई ग्राहक बन सकता है।

४ पत्रादि लिखते समय ग्राहकों को अपना नाम और पूरा पता तथा ग्राहक संख्या खूब साफ लिखना चाहिये।

५ प्रत्येक ग्राहक के पास "सार्वदेशिक बड़ी सावधानी से भेजा जाता है। यदि इस पर भी किसी के पास कोई संख्या महीने के अन्त तक न पहुंचे, तो उन्हें पहले अपने डाकघर से पूछ लेना चाहिए, फिर हमें लिखना चाहिये। वह संख्या उनके पास भेज दी जायगी।

सम्पादक:—"सार्वदेशिक" देहली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख–पत्र

वर्ष ४	मार्गशीर्ष १ सम्वत् १९८७ वि०		अङ्क ९
	नवम्बर १९३० ई०]	[दयानन्दाब्द १०६	

❋ पाप का स्वरूप ❋

(लेखक—श्री महामना बा० बालोराम जी एम० ए० एल० एल० बी०)

अग्ने नय सुपथा राये ऽस्मान् विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ।

पाप क्या है ? यह प्रश्न विकट है, अत्यन्त विकट है। पाप के स्वरूप का निदर्शन अति दुस्तर कार्य्य है। इसके सम्बन्ध में भिन्न भिन्न धर्म्मों (मतों) की भिन्न २ सम्मति हैं। जो काम एक मत के अनुसार पाप है वही दूसरे मत के अनुसार पुण्य है। पशुवध एक वैष्णव की दृष्टि में पाप है परन्तु एक मुसलमान की दृष्टि में पाप नहीं है। वह पशुवध भी अल्लाह के नाम पर बिस्मिल्लाह कह कर करता है मानों पशु का मारना भी उसके बनाने वाले अल्लाह को प्रिय है, पशु की बलि से अल्लाह प्रसन्न होता है। मुसलमानों के सब से बड़े त्यौहार पर किसी न किसी पशु की बलि देना एक धर्मिष्ठ मुसलमान का परम कर्तव्य है। बकरईद जब आती है तो असंख्य पशुओं की मृत्यु का संदेसा साथ लाती है, भारतवर्ष में तो यह त्यौहार सहस्रों गौओं के गले पर छुरी चलवाकर हिंदुओं के हृदयों को दुःसह दुःख देता है और कतिपय स्थानों पर हिंदू मुसलमानों में उपद्रव खड़ाकर देता है। मदिरापान मुसलमानों के मत के अनुसार पाप है परन्तु एक ईसाई उसे पाप नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनता । पादरी तक मद्य पान करते हैं । ईसाइयों में किसी की स्वास्थ्यरक्षा की मंगल कामना के लिये मद्य पीना सर्व-व्यापी रिवाज है। अस्तु।

इसी से संम्बधित दूसरा प्रश्न यह है कि संसार में पाप कहां से आया? ईश्वर तो निष्पाप निष्कलंक है, उसकी रची हुई सृष्टि में तो पाप के लिए कोई स्थान होना ही नहीं चाहिये था। यह प्रश्न ईसाई, मुसलमान, तथा पारसियों के लिए अति दुर्मीमांस्य सिद्ध हुआ है, इसका कोई अन्य उत्तर न दे सकने पर उन्होंने एक पाप के स्रष्टा का अस्तित्व मानना अनिवार्य समझा। पारसियों ने इस पाप के अधीश्वर को अहरमन का और ईसाई, मुसलमानों ने शैतान का नाम दिया। ईसाई मुसलमानों ने तो परमेश्वर और शैतान में युद्ध तक करा डाला जिसका क्षेत्र स्वर्ग को बनाया। इस युद्ध में शैतान हारा और स्वर्ग से निकाला गया परन्तु वास्तव में उसका विजय ही हुआ क्योंकि स्वर्ग से निकलते समय उसने यह शपथ खाई कि वह परमेश्वरकी मानुषिक सृष्टि को बहकाता और परमेश्वर की आज्ञाओं का उससे भंग कराता रहेगा और इस वीर ने अपने प्रण को प्राणपण से निबाहा और अब तक वह उसे निबाहता आ रहा है। परमेश्वर ने आदम और हव्वा मनुष्य-जाति के आदिम पिता माता को यह आज्ञा दी थी कि अदन के उद्यान में जहाँ उन्हें विहार करने के लिये रक्खा गया था गेहूँ के पेड़ के फल को न चखे। शैतान ने सांप के रूप में हवा को बहकाया और हव्वा ने आदम को फुसलाया और अन्त में दोनों ने गेहूँ का फल खाया। इस आज्ञा भंग रूपी पाप का उन्हें यह दण्ड मिला कि अमरत्व खोकर मरण धर्मी बनना पड़ा और अदन के उद्यान से निकाले गये। तभी से पाप संसार में आया।

यदि पाप ने वास्तव में इसी प्रकार पृथ्वी पर पदार्पण किया हो, तोभी समझमें नहीं आता कि पाप तो किया आदम व हव्वा ने, और उनके साथ दण्ड दिया गया उनकी प्रलयकाल पर्यन्त होने वाली सन्तान को जैसा कि अंजीलमें लिखा है। कोई भी ईसाई या मुसलमान पाप की सम्यक् मीमांसा नहीं कर सकता और इस प्रश्न का कि संसार में कैसे आया सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सकता इस प्रश्न का उत्तर यदि कहीं मिल सकता है तो वह वेदों में ही मिल सकता है।

जो वेद मंत्र इस लेख के शीर्षक के नीचे दिया गया है वह पाप के स्वरूप का ऐसी उत्तमता और सुन्दरता से निदर्शन करता है कि मानव हृदयसन्तुष्ट हो जाता है और मानव बुद्धि उसे ग्रहण कर लेती है और फिर उसमें कोई सन्देह वा तर्क वितर्क उत्पन्न नहीं होता।

उक्त मंत्र केवल एक शब्द में पाप के स्वरूप को वर्णन कर देता है। वह बतलाता है कि एनः (पाप) जुहराणम् (कुटिल, टेढ़ा, वक्र, तिर्छा) है उस में सीधा, सच्चापन, ऋजुता, हेर फेर का अभाव नहीं है। गणितज्ञ कहते हैं कि सब से छोटी रेखा जो दो बिंदुओं के बीच में खींची जा सकती है सीधी रेखा (Straight line) है। यत्न करके देख भी लीजिये, सीधी रेखा सबसे छोटी रेखा सिद्ध होगी, शेष सब रेखायें उससे बड़ी और वक्र होंगी। पाप कहां है जहां सत्य नहीं, सीधापन नहीं। जहां भय नहीं, शंका नहीं, लज्जा नहीं, जहां दुःख वा छिपाव नहीं, संकोच नहीं सन्देह नहीं जहां आत्मग्लानि नहीं पश्चाताप नहीं, वहां पाप भी नहीं। यह सब बातें कहां होती हैं-वहां ही जहां मनुष्य सुपथ, सीधे मार्ग से हट जाता है, सरलता को छोड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर कुटिलता का आश्रय लेता है। पाप और अ-पाप के जानने की कसौटी केवल यही है कि प्रत्येक काम करने से पहले मनुष्य यह सोचे कि वह सीधे मार्ग पर जा रहा है वा टेढ़े पर। उस से उसकी आत्मा में ग्लानि उत्पन्न होती है वा सन्तुष्टि, उससे परमेश्वर की आज्ञा का भंग होता है वा पालन, उससे किसी को दुःख पहुंचेगा वा सुख, किसी के स्वत्व का अपहरण होगा वा उसकी रक्षा, इत्यादि ऐसा करने से मनुष्य को तत्काल ज्ञात हो जायगा कि जो काम वह करने चला है पापकर्म है या पुण्यकर्म

सत्य एक है--असत्य अनेक। दस विद्यार्थी एक काम को करते हैं जो उनके अध्यापक की आज्ञा के विरुद्ध है, मान लो कि वह अध्ययन--काल में विद्यालय से अनुपस्थित होकर गिल्ली-डंडा खेलते हैं, अध्यापक उनसे पूछता है कहां गये थे। वह अपने अपराध को छिपाना चाहते हैं, कोई कहता है वह लघुशङ्का को गया था, एक कहता है शोच को गया था, एक कहता है वह पुस्तक घर भूल आया था उसे लेने गया था इत्यादि। हरएक विद्यार्थी का उत्तर भिन्न होगा सत्य सीधी और असत्य टेढ़ी रेखा है। स्वास्थ्य का स्वरूप एक और अस्वास्थ्य के अनगिनत।

मनुष्य जब पाप करता है वह किसी शैतान वा अंहरमन के बहकाने से नहीं करता प्रत्युत स्वयं ही करता है, अपने ही दुष्ट भावों की प्रबलता से जिन्हें उस ने ही प्रबल बनने का अवसर दिया है, अपनी ही कुटेवों के कारण से करता है जिन्हें उसने ही बनाया है और इसी लिये वह पाप की सज़ा भी भुगतता है और उसे भुगतनी भी चाहिये। यदि वह पाप वस्तु तः शैतान के बहकाने से करता है तो वह स्वतंत्र कर्ता नहीं रहता और न्याय के अनुसार उसे दण्ड नहीं मिलना चाहिये। जहां परतन्त्रता है वहां उत्तरदायित्व भी नहीं।

मंत्र में न केवल पाप का स्वरूप ही बतलाया गया है प्रत्युत उससे बचने का उपाय भी वर्णन कर दिया गया है। वह उपाय है परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना। हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन् (अग्ने) हमें सुपथ या अच्छेमार्ग पर ले चल! हम तेरी बहुत २ स्तुति करते हैं। तू हमारे सारे कर्मों का जानता है। हमें कुटिल पाप से दूर रख सुपथ पर चला कर हमें सुख समृद्धि का भागी बना।

मार्ग प्रदर्शक कौन हो सकता है? वह जो मार्ग को जानता है। मार्ग कौन दिखा सकता है? जिसके हाथ में प्रकाश है परमेश्वर से अधिक ज्ञानी और प्रकाशवान कौन हो सकता है इसलिये वही सब से श्रेष्ठ नेता है। वह मनुष्यों के हृदय के सब भावों को मनुष्य की निर्बलताओं को जानता है, उसको पूर्णज्ञान है कि किस को सुपथ पर चलाने के लिये किस बात की आवश्यकता है।

मंत्र ने थोड़े से शब्दों में कितनी महत्वपूर्ण शिक्षा दी है, इसे पाठकगण विचार कर देखें। पाप क्या? पाप से कैसे बचा जा सकता है? पाप से बचने का फल क्या है? इन सब प्रश्नों का जो सदा मनुष्य को चक्कर में डाले रहते हैं उत्तर मंत्र दे देता है और उत्तर भी ऐसा जो बड़े २ तार्किकों को निरुत्तर कर देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या--उपनयन

(लेखक—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

वैदिक धर्म में उपनयन संस्कार १६ संस्कारों में से एक संस्कार है और जिसका यह संस्कार न हुआ हो वह द्विज नहीं माना जाता है। यह संस्कार विद्यारंभ के समय में होता है आर्य समाज के प्रचार के पूर्व कई स्थानों पर यह संस्कार विवाह के समय पर होता था। जो सर्वथा ही अयुक्त था। आर्य्य समाज के प्रचार से वह प्रथा प्रायः बन्द होगई है।

सनातन धर्म में यह संस्कार केवल बालकों का ही होता है। कन्याओं का नहीं होता वह कन्याओं का केवल विवाह ही मंत्रक मानते हैं। और आर्य समाज में यह संस्कार बालक और बालिकाओं का समही होता है। इसी कारण इस विषय पर आर्य समाज और सनातन-धर्म सभा में शास्त्रार्थ भी हुए हैं, आर्य समाज में इस बिषय पर लेख भी लिखे गए हैं। आर्य समाज के पूर्व समय में सद्धर्म्म प्रचारक में भी इस विषय पर चर्चा चली थी और आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी स्वर्गीय स्वामी नित्यानन्द जी विशेश्वरानन्द जो, ने 'पुरुषार्थ प्रकाश, नामी पुस्तक में इस बिषय को गृह्यसूत्रो और स्मृतीयों के प्रमाण सहित लिखा है। उनके पश्चात् पं० महाराणीशंकर जी ने इसी विषय पर एक लघु पुस्तक भी लिखी थी। इस भांति इस विषय पर कई बार प्रकाश डालागया है। इसी प्रकार पंजाब में कन्या गुरुकुल और कन्या महाविद्यालय में यह संस्कार कराया जाता है। और श्रीमती द्रोपदीदेवी (उपदेशिका आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) द्वारा इसका प्रचार हुआ है। इतना होने पर भी कुछ सज्जन आर्य समाज में अभी हैं जिनका सन्देह निवृत नहीं हुआ है, वह अब भी कभी २ सन्देह प्रगट करते रहते हैं। उन्हीं के सन्देह निवारणार्थ यह लेख लिखा जाता है।

इस लेख में किसी सूत्र या स्मृति का प्रमाण न होगा जिन्होंने वह प्रमाण देखने हों वह ऊपर लिखित पुस्तकों को पढ़ लें इस लेख में केवल आचार्य दयानन्द जी का पक्ष ही दिखाया जायगा और वह सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर ही होगा। आचार्य ने स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार दिया है, और इस विषय पर अब सनातन धर्मी भी सहमत हैं। आचार्य के शब्द यह हैं—

प्रश्न—'क्या स्त्री और शूद्र भी वेद पढें ?... और इनके पढ़ने में प्रमाण भी नहीं है जैसा यह निषेध है।

स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतेः।
स्त्री और शूद्र न पढें यह श्रुति है॥

उत्तर—सब स्त्री और पुरुष आर्थात् मनुष्य मात्र को पढ़ने का अधिकार है ···· यह श्रुति तुम्हारी कपोल कल्पना से हुई है। किसी प्रामाणिक ग्रन्थ की नहीं। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ७३

प्रश्न—क्या स्त्री लोग भी वेदों को पढ़ें।

उत्तर—अवश्य देखो श्रौत सूत्रादि में।

इमं मंत्रं पत्नी पठेत॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थात् स्त्री यज्ञ में इस मन्त्र को पढ़े। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ७५ यह दोनो प्रमाण स्त्री को वेद पढ़ने का अधिकार देते हैं। और वेद पाठ उपनयन रहित के लिए नहीं है, अतः अर्थापत्ति से सिद्ध होता है स्त्री को उपनयन का भी अधिकार है।

प्रश्न—आपने भी अर्थापत्ति से ही कहा क्या आचार्य ने कहीं साफ भी लिखा है कि कन्या उपनयन पहने। जब तक साफ लिखा हुआ न हो, उस समय तक केवल अर्थापत्ति से प्रयोजन सिद्ध नहीं होता है।

उत्तर—आचार्य ने साफ शब्दों में भी लिखा है जैसा कि—

"इसी प्रकार से कृतोपनयन ब्रह्मचारी कुमार और ब्रह्मचारिणी कन्या धीरे २ वेदार्थ के ज्ञान रूप उत्तम तप को बढ़ाते चले जायें। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ४०

इस लेख में कृतोपनयन विशेषण कुमार और कन्या दोनों का ही है। जिसके अर्थ हैं 'उपनयन किया गया, इस लेख से आचार्य ने कुमार वत् कन्यायों के उपनयन का भी विधान किया है।

प्रश्न—आचार्य ने अन्य स्थान पर केवल कुमार का ही उपनयन लिखा है। कन्यायों का नहीं लिखा है जैसा कि—

"द्विज अपने घर में लड़कों का यज्ञोपवीत और और कन्यायों का भी यथायोग्य संस्कार करके यथोक्त आचार्य कुल अर्थात् अपनी २ पाठशाला में भेजदें। सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ३३

उत्तर—इसमें तो कन्यायों का भी उपनयन लिखा है। किन्तु आपको शब्द से भ्रम होगया है इस वाक्य में कन्यायों का यथायोग्य जो लिखा है इसका भाव यह है। उपनयन संस्कार में कई क्रियाएं हैं उनमें से कुछ क्रियाएं तो कुमार तथा कन्या की सम है और कुछ क्रियाएं कुमारों की तो होती हैं और कन्यायों की नहीं होती हैं। यथा—कन्यायों के उपनयन संस्कार में कन्यायों का वालक वत् मुंडन नहीं है। और कन्यायों के लिए कौपीन का विधान नहीं है। इसी कारण आचार्य ने कन्यायों को यथा-योग्य शब्द के साथ लिखा है। अतः कन्यायों का उपनयन अवश्य होना चाहिये।

इन चार प्रमाणों में, से, दो प्रमाण तो कन्यायों का उपनयन संस्कार होना चाहिए, यही सिद्ध करते हैं और दो प्रमाणों में उपनयन का बिधान तो बेशक नहीं है परन्तु वेद पढ़ने का अधिकार उनको भी है। और वेद पढ़ने में उपनयन का पूर्व होना आवश्यक है अतः अर्था-पत्ति से उपनयन सिद्ध होता है। और आचार्य की सम्मति यही है कि—

कन्याओं का उपनयन भी उसी भांति होना चाहिये जैसा कि कुमारों का होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❁ संन्यासी-कर्तव्य-दर्पण ❁

(लेखक—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज)

गताङ्क से आगे

साधुओं की वर्तमान दशा

(१) साधुओं में बहु संख्या में ऐसे साधु मिलेंगे, जिनका निर्वाह चरस, गांजा, भंग आदि नशों के विना नहीं हो सकता। तम्बाकू पीना तो मानों उनकी घुट्टी में मिला हुआ है।

(२) ऐसे भी साधु मौजूद हैं, जो खुले तौर से उचित और अनुचित रीति से स्त्रियों के सम्पर्क में रहते हैं।

(३) साधुओं में अनेक नर-नारी ऐसे आकर मिल जाते हैं, और अब भी मिले हुए हैं,—जो अपराधों को कर के मफरूर (भागे हुए) हैं और जिनको गिरफ़ारी के वारण्ट जारी हैं। वे साधु केवल गिरफ़्तारी से बचने के लिये बने हुए हैं।

(४) अनेक गृहस्थ जीवन व्यतीत करते और स्त्री बच्चों को रखते हुए भी अपने को ब्रह्मचारी और वैरागी कहते और दुनिया को ठगा करते हैं।

(५) कुछेक लोग धन कमाने का खुला व्यवसाय करते हैं। कोई किसी कम्पनी के एजेण्ट हैं, कोई वैद्यकादि पेशा करके नियम से रोगियों से फीस लेते हैं। इत्यादि। परन्तु इस पर भी वे लोग अपने को साधू ही कहते हैं और काषाय वस्त्र ही धारण करते हैं।

(६) अनेक अयोग्य व्यक्ति जिनकी मूर्खता पर ध्यान देकर कोई उन्हें कौड़ियों के मोल भी न पूछे मूंड विडापन करके गृहस्थों के सर होते रहते हैं, और 'येन, केन, प्रकारेण,, कुछ न कुछ ऐंठते ही रहते हैं।

(७) कुछेक साधु हैं, जो निर्लज्जता के साथ बिल्कुल नङ्गा रहने ही में अपना साधुत्व समझते हैं। निदान वर्तमान साधु-समुदाय में, इन और इस प्रकार के अनेक व्यक्ति भी दुराचार करते हुए सम्मिलित हैं। और किसी की मजाल नहीं कि उन्हें साधुओं की श्रेणी से बहिष्कृत कर सकें।

यह दुरवस्था है, जिसमें वर्तमान साधू-समुदाय का अधिक भाग है।

इसका सुधार कैसे हो ?

यदि इष्ट यह हो कि साधु-समुदाय की गाड़ी इसी प्रकार चूं-चूं करती हुई चली जाय, जैसी अब चल रही है तो मेरी सम्मति यह है कि सारे हिंदू समाज को मिलाकर साधु बनना अपराध ठहरा देना चाहिये। और इसी प्रकार का आईन भी बनवा देना चाहिये कि ठग बनने की भांति साधु बनना भी अपराध है। और जो बने उसे भी अपराधी ठहराना चाहिये। परन्तु यदि इष्ट यह हो जैसा कि होना चाहिये. कि साधु-समुदाय का सुधार होकर सन्यस्थाश्रम का मकी स ध्यावन जाय तो उसके लिये आवश्यक है कि, शिक्षित और समझदार साधुओं को साधु-समुदाय के सुधार के लिये समुद्यत हो जाना चाहिये।

अब,—सुधार किस प्रकार से हो, इसके लिए भी कुछेक बात नीचे लिखी जाती हैं'—

सुधार के लिये कुछेक बातें

शिक्षित और समझदार साधुओं को एक साधु (सन्यासी) मण्डल बनाना चाहिये। अथवा जो वर्तमान संन्यासी मण्डल है, उसी में सम्मिलित होना चाहिये। जिससे उनमें आर मूर्ख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुराचारी साधुओं के मध्य में एक विभेदक रेखा खिंच जावे और यत्न किया जावे कि इस मण्डल में कोई उपर्युक्त त्रुटियां रखने वाला साधु न आ सके वह मण्डल सार्वदेशिक होना चाहिये। और नगर नगर में इसकी शाखायें स्थापित होनी चाहियें।

नोट—नगर-नगर से अभिप्राय बड़े नगर अथवा ज़िलों से है सार्वदेशिक मण्डल और उसकी समस्त शाखाओं के द्वारा उन सन्यासियों से जो मण्डल या उसकी किसी शाखा में दाखिल हुए हों, प्रतिज्ञा करानी चाहिये कि वे उन समस्त कर्तव्यों के पालन करने का यथा सम्भव पूरा पूरा यत्न करेंगे कि जो उनके व्यक्तित्व को श्रेष्ठ बनाने के लिये वेदादि सच्छास्त्रों में वर्णित हैं और जिनका विवरण आगे के पृष्ठों में अङ्कित है और उन कर्तव्यों का भी उसी प्रकार से पालन करेंगे कि जो उनका समाज (जाति) के सम्बन्ध में है और जिनको मण्डल समय समय पर नियत और स्थिर किया करेगा और दिग्दर्शन के तौर पर जिनका संक्षिप्त विवरण यहां दिया जाता है।

जाति के सम्बन्ध में संन्यासी का कर्तव्य

(१) वह जाति सदैव उन्नति के पथ पर रहती है जो समय-समय पर अपने दोषों को देखकर उनके दूर करने के लिए प्रयत्नवान रहती है। सन्यासी का समाज के सम्बन्ध में पहला कर्तव्य यही है कि वह देखे कि समाज की प्रवृत्ति अपनी त्रुटियों को देखने और उनके दूर करने की ओर है या नहीं? यदि न हो तो प्रयत्न-पूर्वक इस प्रवृत्ति को उत्पन्न और वृद्धि करना चाहिये।

(२) जाति में बाल-विवाह, धन का अपव्यय, नशों का प्रचार, आदि अनेक दोष आजाया करते हैं जिनसे उनका अधःपतन हो जाया करता है। इस लिये जाति के सदस्यों का कर्तव्य है कि इस प्रकार की जो भी त्रुटियां उनके भीतर आगई हों या आ रही हों उनके सुधारने के लिये सदैव चेष्टा करते रहें। सन्यासी का दूसरा कर्तव्य यह भी है कि वह उपर्युक्त सुधारों का प्रेम जाति के सदस्यों में पैदा करके उसे बढ़ाने की प्रेरणा करता रहे।

(३) जाति जाति और समाज समाज नहीं रहा करता, जब तक उनके भीतर पारस्परिक प्रेम और मेल नहीं। भारतवर्ष में मुगल बादशाहों के पतन का कारण महाराजा शिवाजी और उनके अनुयायी ही थे। अन्त में दिल्ली के मुगल बादशाह मरहठों के एक प्रकार से पेंशन ख्वार हो गये थे। अंगरेजों को अधिकतर युद्ध मरहठों और सिक्खों से ही करने पड़े थे। अन्त में मरहठों की तीन बड़ी शक्तियां इस देश में थीं, जिनसे अंगरेजों को युद्ध करना पड़ा था!—१, पेशवा, २. हुलकर, और ३. सिंधिया। यदि यह तीनों मिलकर लड़ते, तो अङ्गरेजों को पराजित कर अपनी स्वतन्त्रता सुरक्षित रख सकते थे। परन्तु पारस्परिक फूट के कारण एक दूसरे के सहायक नहीं बन सके। फल यह हुआ कि अङ्गरेजों ने एक-एक से युद्ध कर तीनों को पराजित करके उन्हें परतन्त्रता की बेड़ी पहना दी।

इसपर एक अंगरेज विद्वान ने लिखा हैः—"The Hindus from the days of Prathvi Raj and Jai Chandra forgot nothing and learnt nothing."

अर्थात्—पृथ्वीराज और जयचन्द के समय सेलेकर अबतक जो भुलाना चाहिये था और जो सीखना चाहिये था हिंदुओं ने न उसे भुलाया और न सीखा। ,,भावार्थ यह है कि उन्हें फूट दूर करके एकता के सूत्र में बंधना चाहिये था। परन्तु उन्होंने यह नहीं किया, अस्तु संन्यासी का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई विचारणीय बातें

(लेखक—श्री मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी)

[गताङ्क से आगे]

विदित हो कि स्वामी हरिप्रसाद जी ने ऋ० ६-३३-३ पर मन्त्र देकर अर्थ किया है कि "(इन्द्र) हे महा पराक्रमी ! तू उन दोनो शत्रुओं को जो पापात्मा रुकावटें डालने वाले दस्यु और आर्य हैं मार और हे नेताओं में श्रेष्ठ नेता बन जैसे कुल्हाड़ों से काटे जाते हैं वैसे तू उनको सुधारे हुये, तेज किये हुये शस्त्रों से युद्धों में अच्छी तरह काट"।

इस ऊपर निर्दिष्ट अर्थ कल्पना से उक्त स्वामी जी यह सिद्ध करना चाहते हैं कि आर्य्य पापात्मा मनुष्यों को कहते हैं और उनको मारना चाहिये; इस बात पर बहुत विचार हमने किया किन्तु व्याकरण शास्त्रानुसार उदासीजी के अर्थों में तीन दोष दिखलाई पड़े जो कि निम्न प्रकार हैं:—

१—आपने 'दासा' और 'आर्या-मन्त्रगत' दोनों शब्दों का विशेषण वृत्राणि किया है यह अत्यन्त अनुचित है। क्योंकि दासा और आर्या-शब्द दोनों पुलिङ्ग हैं और वृ--त्राणि शब्द नपुंसक लिंग में हैं। यह बात व्याकरण शास्त्र के पंडित भली प्रकार जानते हैं कि विशेष्य के अनुसार विशेषण के लिंग और बचन हुवा करते हैं। इस बात का आपने जरा भी ध्यान नहीं किया। कदाचित् आप यह कहें कि बृत्र शब्द नपुंसक लिंग है हम इसके उत्तर में यह कहेंगे कि जिन अर्थों में आप बृत्र शब्द को ले रहे हैं उन अर्थों में निरुक्त कोष वा ब्राह्मण ग्रन्थों में पुलिङ्ग रखा है नपुंसक नहीं। प्रमाण के लिये देखिये निम्न वचन—

पाप्मावै बृत्रः (शतपथ ११-१-५-७ तथा १३-४-१-१३)

इस से सिद्ध हुआ कि पापात्मा के अर्थ में शतपथ ब्राह्मण में बृत्र शब्द पुलिंग माना है नपुंसक नहीं। निरुक्त में भी बृत्र शब्द का प्रयोग पुलिंग ही आता है जैसे—

तत्को बृत्रः? मेघ इति नैरुक्ताः। [निरुक्त अ० २ खं० १६]

स्मरण हो कि इस उपस्थित मन्त्र में बृत्र शब्द नपुंसक लिंग है जिसका अर्थ पापात्मा कदापि नहीं किया जा सक्ता।

प्रत्युत नपुंसकलिङ्ग बृत्र शब्द को निघन्टु और निरुक्त में धन का वाचक लिखा है प्रमाण

तीसरा कर्तव्य यह है कि वह जाति के भीतर परस्पर प्रेम और एकता की मात्रा की बृद्धि कराता रहे।

(४) जाति के अभ्युदय के लिये आवश्यक है कि उसमें विद्याओं की बृद्धि हो जिससे जाति के व्यक्तियों के मस्तिष्क अच्छे बनें और वे अनेक विषयों में अनेक प्रकार की खोज करे और अच्छे अच्छे आविष्कार करके अनेक उपयोगी काम और धन्धे देश में प्रचलित कर सकें और कलाकौशल की भी वृद्धि हो जिससे जाति का कोई भी व्यक्ति बेकार न रह सके और प्रत्येक व्यक्ति जाति की सम्पत्ति बढाने का हेतु बने। इस लिये संन्यासी का चौथा कर्त्तव्य यह है कि वह जाति म विद्या और शिल्प के लिए यत्नवान रहे, कर्तव्य यह है कि वह खे कि जाति अपनी जरूरतें पूरा करने मे स र्थ है। (क्रमशः)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये निम्न वचन देखिये—

अथ धन नामानि

मध्यम्…… ……वृत्रम् । वृत्रमित्यष्टा विंशति रेव धन नामानि । (निरु० अ० ३ खं० ९)

इससे सिद्ध हुआ कि नपुंसकलिंग वृत्र शब्द धन का ही वाचक होता है इसी लिये इस सर्वमान्य निरुक्त प्रमाण के अनुसार ही महर्षि दयानन्द जी ने अपने वेदभाष्य में (वृत्राणि) 'धनानि अर्थात् धन अर्थ किया है जो अत्यन्त सत्य है।

२—वेद में अन्यत्र मनुष्यमात्र आर्य्य बनाने के लिये स्पष्ट उपदेश मिलता है (कृण्वन्तो विश्वमार्यम्) किन्तु आप अपना एक विलक्षण अर्थ करके आर्यों को भी दस्यु के समान मरवाना चाहते हैं क्या खूब ! वेद तो आर्यों की वृद्धि चाहता है किन्तु आप बध करवाना चाहते हैं ऐसा असंगत अर्थ करने से वेद में एक विरोध भी खड़ा करते हैं जिसको कोई भी पंडित स्वीकार नहीं कर सकता ऋषि दयानन्द ने इस स्थल पर केवल एक विभज्य पद का उचित अध्याहार करके सुसंगत अर्थ किया है।

३—वेद में अन्यत्र भी आर्य शब्द धार्मिक श्रेष्ठ मनुष्य के लिये प्रयुक्त हुवा है प्रमाण के लिये निम्न मन्त्र देखिये—

इन्द्रः समत्सु यजमानमार्य्यं प्रावद् ऋ० १-१३०-८

अर्थः—राजा संग्रामों के बीच आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य की रक्षा करता है।

"अहं भूमिमद दामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय" (ऋ० ४-२६-२)

इस मन्त्र में भूमि आदि उत्तम वस्तुओं को प्रदान करने की चर्चा दानी आदि विशेषण युक्त मनुष्य के लिये हैं अस्तु। यह तीन दोष उदासी जी के अर्थों में दिखलाये हैं जिनको विद्वान् अवश्य स्वीकार करेंगे। अब हम इस मन्त्र के अर्थ रखते हैं जो निम्न प्रकार है—

(त्वं) तू (इन्द्र) हे राजन् (तान उभयान्) उन दोनों प्रकार के (अमित्रान्) शत्रुओं को जो कि (दासाः) दस्यु दुख देने वाले और (वृत्राणि) विघ्नकारी उपकरण हैं " यह अर्थ धातु पर से लिया गया है " उनको (आर्या) हे आर्य "यह आर्य शब्द से संबोधन एक वचन में—

सुपां सुलुक्पूर्व सवर्णाच्छेया डाड्या याजालः (अष्टाध्यायी अ० ७ । पा० १ सू० ३९ से आकारादेश हुआ है। "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया के समान„ (च०)—और, (शूर) हे शूर। विदित हो कि यह शूर आर्य शब्द का विशेषण है, जो कि अत्यन्त उचित है। क्योंकि वेदों में भी अन्यत्र अपने आपको स्वतन्त्र और शूर बनाने का आदेश हैं। अदीनाः स्याम शरदःशतम्। गीता में भी यही भाव निम्न शब्दों में भी दर्शाया है—

कुतस्त्वा कश्मल मिदं, विषमे समुपस्थितम्।
अनार्य जुष्टम स्वर्ग्यम कीर्ति करमर्जुन॥

गीता अ० २ श्लोक० २

अर्थ—हे अर्जुन इस विपत्समय में यह पापमय दुरभाव कहां से प्राप्त हुआ। जो कि आर्यों के अयोग्य दुःख-रूप और अपयश का कारण है।

विदित हो कि यहां कायरपने को प्राप्त हुये अर्जुन की वृत्ति को आर्यों के अयोग्य कहा है। इससे सिद्ध हुआ—कि गीता में शूरबीर का नाम आर्य है। (वनाइव) वनों को जैसे अग्नि अथवा कुल्हाड़े नष्ट करते हैं, वैसे (सुधितेभिःअत्कैः) अच्छे घोड़े या शस्त्रादि सैन्य बलों से (पृत्सु) संग्रामों में (बधीः) मार तथा (नृणां नृतम) हे नेताओं के नेता उन दो प्रकार के शत्रुओं को (आ-दर्षि) छिन्न भिन्न करदे अस्तु। इस उक्त मन्त्र भाष्य का भावार्थ यह है कि राजा को चाहिये कि वह अत्यन्त शूरता को धारण करता हुआ, तथा अपने आपको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ जगन्नाथ पुरी ❋

[लेखक—श्रीयुत ज्ञानी जी]

(गतांक से आगे)

हमारे समीप के ही मकान में कुछ गुजराती वैष्णव ठहरे हुए हैं। उनका घर पर तो यह हाल है कि सिवाय अपने हाथ का पका नहीं खाते। किसी का हाथ लगना तो दूर रहा, यदि कोई उनके चौके के साथ होकर भी गुजर जावे तो फिर से चौका धोते और सारे बरतन मांजते हैं, परन्तु यहां पुरी में आकर हर एक के हाथ का लगा, जूठा और चाटा हुआ भी खाते हैं। लेखक भी चौके और छूआ-छूत को मानने वाला नहीं। परन्तु कम से कम सफ़ाई तो होनी चाहिये। हमने अपनी आंखों से कई कोढ़ी और अन्य रोग-ग्रस्त आकर आनन्द-बाजार में दाल-भात चाटते देखे। पढ़े लिखे लोग भलीभांति जानते हैं कि किस तरह स्पर्श से और विशेषतया श्वास तथा थूक से बहुत सी बीमारियां फैलती हैं, और हमारा विश्वास है कि उड़ीसा देश में जो त्वचा-रोग की अधिकता है उसका एक कारण जगन्नाथ का झूठा भात भी है। परन्तु कौन किसे समझावे? हिंदुओं का सब कुछ तो अन्ध-विश्वास पर आश्रित है। उनके धर्म में बुद्धि का काम नहीं।

राजा—-

कहते हैं पुरी-मन्दिर का जो अधिपति है, उसी के पूर्वज उड़ीसा के राजा हुआ करते थे। जब ब्रिटिश सरकार ने उड़ीसा अपने हाथ में लिया तभी से राजा की पेन्शन निश्चित कर दी है, जिसके अनुसार २२३३।-)। दो हजार दो सौ तेतीस रुपया पांच आने और तीन पाई प्रतिमास उस मिलत हैं। इसके अतिरिक्त उसकी ज़मीनें, मकान इत्यादि हैं, जिनसे एक लाख रुपये की लगभग सालाना आमदनी होगी।

सरकार ने मन्दिर के इन्तजाम के लिये एक दफ्तर खोल रखा है जिसका सुपरिन्टेन्डेन्ट स्वयं राजा रामचन्द्र देव हैं। इनके अधीन १०,१५ लेखक इत्यादि कार्य करते हैं। मन्दिर की वार्षिक आय चार लाख के करीब है, जिसका बहुत सा भाग पण्डों के पेट-पालन और शेष छोटी मोटी मरम्मतों में जाता है। हमें यह जान कर अत्यन्त दुःख हुआ कि इस बृहद्-राशि का कोई सद्व्यय नहीं किया जाता।

परम नेता और आर्य समझना हुआ, संग्रामों में जो आक्रमण करने वाले और विघ्न डालने वाले शत्रुओं तथा उपकरणों को अग्नि जैसे जंगलों को जलाकर नष्ट करदेता है, वैसे घोड़चढ़े योद्धाओं अन्य शस्त्र अस्त्र आदि से मारे और छिन्न भिन्न करदे।

महर्षि दयानन्द जी ने वेद भाष्य में व्याकरण शास्त्रानुसार अत्यन्त उत्तम सुसंगत अर्थ अपने वेद भाष्य में किया है। उसके पुष्टि में हमारा यह तुच्छ लेख है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र रीति से जो युक्ति और व्याकरण निरुक्तादि के आधार पर ऊपर दूसरा अर्थ किया गया है। उससे भी उदासीजी जी कि कपोल कल्पना का खण्डन सज्जन जन देख सक्ते हैं। स्थाली पुलाक न्याय की रीति से हमने यह सिद्ध कर दिया कि उदासी जी के अर्थ अशुद्ध और असंगत तथा हास्यप्रद हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज—

अभी तक भारतवर्ष में कई ऐसे प्रान्त हैं जहां आर्य-समाज का नाम तक भी नहीं पहुँचा। उड़ीसा भी उनमें से एक है। यदि बंगालप्रतिनिधि सभा चाहे तो सार्वदेशिक-सभा की सहायता से, उड़ीसा में आर्यसमाज का प्रचार कर सकती है। हम उत्तर-हिंदुस्तानियों के लिये मुश्किल यह है कि उड़िया-भाषा हमें नहीं आती। बंगाली और उड़िया में बहुत कुछ समानता है। फिर दोनों का वेश, आचार इत्यादि भी लगभग मिलता है।

कुछ समय पूर्व पञ्जाब की प्रादेशिक सभा ने यहां प्रचार--प्रारम्भ किया था, और कटक के डाक्टर के० पी० ब्रह्मचारी कुछ करते भी रहे। परन्तु, न जाने फिर क्यों बन्द कर दिया।

ताम्रारार्डा नामक ग्रामके वयोवृद्ध श्री श्रीवत्स पण्डा जी में आर्य-समाज के लिये अगाध प्रेम है, उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश का उड़िया अनुवाद भी किया है 'आर्य' नामक एक पत्र भी निकालते हैं। परन्तु उनकी शारीरिक अवस्था उन्हें आज्ञा नहीं देती कि वे घूम घूम कर प्रचार करें। आवश्यकता है एक नवयुवक की, जो अपनी आयु का एक बड़ा भाग उड़ीसा-प्रचार में लगा दे। देखें कौन आगे बढ़ता है?

सनातनी और वही नियोग

[लेखक—श्री स्वामी मङ्गलानन्द पुरी]

हाल में एक पुस्तक "स्वामी दयानन्द सरस्वती का निज मत" प्रकाशित हुई है! इस के लेखक एक सनातनी पण्डित श्री गङ्गाप्रसाद जी शास्त्री हैं मूल्य दस आना, श्री गौरी शङ्कर विद्यालय मैदान पैरेड दिल्ली से प्राप्तव्य है:—

इन सनातनी महाशय को स्वामी दयानन्द के निज मत का ऊहापोह करने की चिन्ता क्यों हुई? यही जानने के लिये मैंने इस पुस्तक को मोल लिया और आद्योपान्त ध्यान से पढ़ा इस १७३ पृष्ठों की पुस्तक को पूरा २ पढ़ लेने पर हकीकत का पता लग गया कि वस्तुतः सनातनी पण्डित जी को स्वामी दयानन्द के निज मत से तो कोई वास्ता मतलब सरोकार न था अलबत्ता इसी बहाने कुछ आर्यसमाज पर आक्षेप करना तथा अपने मनमाने ढंग से सनातन-धर्म की रक्षा करना अभीष्ट था।

हमारे पं० गङ्गाप्रसाद जी शास्त्री ने यह दर्शाना चाहा कि श्री स्वामी जी महाराज सनातन-धर्मी थे। परन्तु आपकी पुस्तक के सारे पन्ने उलट डालने पर भी कहीं सनातन धर्म की कोई परिभाषा नहीं मिलती। बड़े आश्चर्य की बात है कि साधारण या मूर्ख सनातनियों की तो बात जाने दीजिये, हमारे दर्शनों के विद्वान् और शास्त्री पंडितों तक में इतनी समझ नहीं है कि किसी दावे को साबित करने के लिये प्रथम उसकी परिभाषा तो निर्धारित करनी ही चाहिये। अगर इन सनातनी पंडित जी ने स्वामी दयानन्द को सनातन-धर्मी सिद्ध करना चाहा था तो आप का उचित था कि प्रथम यह बतलाते कि "मैं सनातन-धर्म को इस इसप्रकार का मानता हूं" यह देखने का अवसर मिलता कि क्या उनके मन्तव्यानुसार स्वामी जी सनातनी सिद्ध हुये या नहीं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे सनातनी पण्डित जी को यह शायद ज्ञात नहीं है कि हम लोग भी स्वामी दयानन्द को सनातन-धर्मी और समस्त आर्य-समाजियों को पक्का सनातन-धर्मी मानते और कहा करते हैं (कम से कम मैंने तो अनेकों व्याख्यानों में कहा है) परन्तु हम लोगों का तो यह अभिप्राय होता है कि यतः सनातन (सबसे पुराना) धर्म वेदों का है (न कि पुराणों का) इस कारण हम सब वैदिक धर्मी ही वस्तुतः सनातनधर्मावलम्बी हैं और हमारे जो भाई अपने को सनातनी कहने लगे हैं वे वस्तुतः पौराणिक आधुनिक धर्मी हैं, सनातन-धर्मी कदापि नहीं हैं। यह नाम उन का ऐसा ही है कोई अंधा जैसे अपना नाम नयनसुख रखा लेवे।

अस्तु जो हो, हमें यह देखना है कि हमारे सनातनी पण्डित ने इस पुस्तक में लिखा क्या है? आपने इसमें नियोग का भी वर्णन किया है शायद इसके बिना सनातनी पण्डितों के पेट में पानी भी पचना मुश्किल हो जाता। क्योंकि प्रायः देखा गया है कि चाहे जिस विषय पर आर्य समाजी सनातनी से बातचीत या शास्त्रार्थ होवे, घुमाफिरा कर वे नियोग की बातों को जरूर ला पटकेंगे।

पाठकों को ज्ञात हो कि दूसरे सनातनी तो नियोग पर केवल स्वामी दयानन्द के कुछ शब्दों पर कटाक्ष किया करते हैं पर इससे इनकारी नहीं बनते कि पूर्वकाल में नियोग हुआ था परंतु हमारे पंडित गङ्गाप्रसाद जी बड़े विचित्र शास्त्री हैं कि आप ने कहीं शास्त्रों में नियोग पाया ही नहीं, इसको सर्वथा दयानन्दी गढ़न्त प्रकट कर रहे हैं। अतः हमें ख्याल हुआ कि महाभारत को फिर से एक बार खोल कर पढ़ डालें कि शायद हमारा ही भ्रम हो और चिरकाल पूर्व का पढ़ा होने से विस्मरण हो गया हो। हमने बड़े परिश्रम से प्रयाग की भारती-भवन पुस्तकालय में बैठ कर मूल महाभारत से इस सम्बन्ध में काफी आवश्यक श्लोकों को नकल कर लिया है, जिन्हें पाठकों को भेंट किये देते हैं। अच्छा प्रथम पूर्व पक्ष सुनिये श्री सनातनी पंडित गङ्गाप्रसाद जी अपनी पुस्तक के पृष्ठ १०७ पर नियोग से सर्वथा इनकार कर रहे हैं आप फरमाते हैं:—आक्षेप करने वालों का खयाल है कि जब विचित्रवीर्य का देहान्त होगया तब उसकी माता सत्यवती ने वेदव्यास को बुला, कर उससे विचित्र वीर्य की स्त्रीअम्बिका, अम्बालिका और दासी में धृतराष्ट्र पाण्डु तथा बिदुर को उत्पन्न किया। और ऐसा करना व्यभिचार अतएव अनुचित है। परन्तु स्वामी जी का कहना है कि जब कुल नष्ट हो रहा हो तब नियोग द्वारा सन्तान उत्पन्न करा लेना कोई अनुचित बात नहीं प्रत्युत वेद सम्मत है। परन्तु महाभारत का सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर बिदित होता है कि धृतराष्ट्र, पाण्डु तथा युधिष्ठिरादि पांडवों की उत्पति आक्षेप योग्य हीं नहीं है। फिर वहां नियोग द्वारा समाधान करने की आवश्यकता ही क्या है। महाभारत में लिखा है, कि विचित्रवीर्य एक भोग-बिलासी राजा थे। और अपनी नववधू अम्बिका अम्बालिका से अहर्निश संभोग में प्रवृत्त रहा करते। इसी कारण उन्हें "क्षयरोग" रोग हो गया।

> ताभ्यां सह समाः सप्त विहरन् पृथिवीपति
> विचित्रवीर्यस्तरुणो यक्ष्मणा समगृह्यत
> (मा० आदि० अ० १२० श्लो० ७०)

अर्थात्—उन दोनों रानियों के साथ सात बर्ष तक रमण करते हुए तरुण राजा विचित्रवीर्य को यक्ष्मा रोग ने पकड़ लिया, और वे अकाल में ही चल बसे। उनकी माता सत्यवती को यह देख कर बड़ा दुःख हुआ कि विचित्रवीर्य की मृत्यु हो चुकी, और उसके कोई पुत्र नहीं है। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि वेदव्यास को बुलाकर यह दुःख निवेदन किया। और भगवान वेदव्यास ने अम्बिका अम्बालिका तथा दासी में धृतराष्ट्र पांडु तथा विदुर को उत्पन्न किया। (आगे महाभारत आदि अ० ९६ ग० ५२-५६ देकर फिर यह लिखा है कि) धृतराष्ट्र के गाँधारी में बरदान से व्यासजी ने शत (अनेक) पुत्र उत्पन्न किया। इस उत्पति का कोई यह अर्थ करता है, कि भगवान वेदव्यास ने उन रानियों में अपने योगबल से गर्भ स्थापन किया और दूसरा पक्ष कहता है कि इस प्रकार गर्भ रहना असम्भव तथा सृष्टि क्रम विरुद्ध है। अतएव व्यास ने नियुक्त होकर सभाग द्वारा ही सन्तान उत्पन्न की। परन्तु यह दोनों समाधान अपूर्ण अतएव त्याज्य है।

पाठक वृन्द ! आपने देख लिया कि इन सनातनी पंडित जी का सनातन-धर्म कैसा है ? आप नियोग को उड़ाने के धुन में ऐसे मग्न हैं कि धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों की उत्पत्ति को भी वेदव्यास जी द्वारा बतला रहे हैं जो बात हमने आज तक कभी नहीं सुनी थी न किसी भी सनातनी पंडित ने ऐसा कभी स्वप्न में भी कहा है क्योंकि महाभारत में यहीं लिखा है, कि भगवान् वेदव्यास ने गांधारी में भी शत (अनेक) पुत्र उत्पन्न किये।

जब यहां धृतराष्ट्र जीवित रहने के कारण यह कोई नहीं कहता कि व्यास जी ने गांधारी में नियोग द्वारा अनेक पुत्र उत्पन्न किये तब उसी प्रकार की उत्पत्ति से कैसे कहा जा सकता है कि अम्बिका तथा अम्बालिका में वेदव्यास ने नियोग द्वारा संतान की।

हम कौन थे ? क्या होगए हैं ?

[लेखक—श्री पं० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार एम० ए०]

आधुनिक समय में स्वामी दयानन्द पहले नेता थे जिन्होंने हिन्दू जाति को जीवित करने के लिये शुद्धि का महामन्त्र बतलाया यद्यपि लोगों ने पहले उनका विरोध किया लेकिन सत्य की सर्वदा विजय होती है। आर्यसमाज ने बलिदान पर बलिदान देकर हिन्दू जाति की रक्षा की और शुद्धि का प्रचार किया। हर्ष की बात है कि आज हिन्दू जाति आर्य समाज की सेवाओं का अनुभव करने लगी है और ऋषि दयानन्द के सारे प्रोग्राम पर कार्य करने के लिये जाग्रत हो उठी है। ऐसी दशा में हमारे विरोधी ईसाई और मुसलमानों का क्षुब्ध हो उठना साधारण बात थी क्यों कि अब वह लोग हिन्दू जाति पर अपना हाथ साफ नहीं कर सकते। इस लिये उनकी सारी शक्तियां आज आर्यसमाज का नाम मिटाने में लगी हुई हैं। दुनिया के ५४½ करोड़ ईसाई और २३ करोड़ मुसलमान अगर किसी को अपना बाधक समझते हैं तो आर्यसमाज को। यदि ईसाइयों की मुक्ति सेना जनरल बोथा की कमांड में इङ्गलैण्ड से चलती है तो आर्यसमाज से युद्ध करने के लिये; यदि अमेरिका में सन् १९२७ में भारत में ईसाइयत के प्रचार के लिये ५६९२ नये मिशन और ७० करोड़ रुपया इकट्ठा किया जाता है तो आर्यों से सांमुख्य करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये। आज यदि मुसलमानों में कोई खलबली और जोश है तो सिर्फ आर्यसमाज को कुचलने के लिये। आज यदि हसन निजामी, जफरअली, मुहम्मदअली आदि मुसलिम नेताओं के लेख और व्याख्यान हो रहे हैं तो आर्यसमाज को बदनाम करने और सत्यार्थप्रकाश को ज़ब्त करने के लिये। आज यदि सरहदी अफगान महात्मा गांधी को पत्र द्वारा धमकी देते हैं तो हमारे सिद्धान्त शुद्धि को रोकने के लिए। सारांश यह कि आज इस्लाम की सारी ताकत ही आर्यों को मिटा देने में लगी हुई है।

लेकिन धन्य हैं आर्यवीर! धन्य है भारत माता के सपूत!! धन्य है हिन्दू जाति के पहरेदार!?! कि आज ५ लाख भी न होते हुये दुनियां के ७७ करोड़ इसाई मुसलमानों का मुकाबिला अदम्य उत्साह से किये जा रहे हैं। आर्यसमाजी ही हैं जो हिन्दू जाति पर आपत्ति आने पर संगीनों के सामने अपनी छाती अड़ा देते हैं। आर्य समाजी ही हैं जो मालाबार में जबरन मुसलमान बनाए गए दीन हिन्दुओं को सान्त्वना देकर पुनः हिन्दूधर्म में सम्मिलित करते हैं।

आर्यसमाजी ही हैं जो विपक्षियों द्वारा हिन्दू देवताओं पर किए गए आक्षेपों के मुंह तोड़ उत्तर देते हैं। आर्यसमाजी ही हैं जो हिन्दू जाति की रक्षा के लिये जेल भोगते और हंसते २ धर्म की वेदी पर बलिदान हो जाते हैं। मुस्लिम मतान्धों द्वारा छुरी और गोली के शिकार बनते हैं आज यदि देश में हिन्दू जाति के सुधार, अछूतोद्धार, विधवाविवाह प्रचार, शुद्धिसंगठनादि की आवाज उठती है तो आर्यसमाजी वीर ही हैं जो प्रत्येक क्षेत्र में निर्भय होकर आगे खड़े हुए दिखलाई पड़ते हैं।

आज इस महान् भीषण धर्म युद्ध में आर्यसमाज अपने हिन्दू भाइयों से जिनके लिये आर्यसमाजी अपनी आहुतियां दे रहे हैं, केवल शुभ आशीर्वाद चाहता है। हिन्दू हमारे बड़े भाई हैं, हम उनके छोटे भाई और सेवक हैं बड़े भाई सर्वदा अपनी कृपा का हाथ हमारी पीठ पर रखे हुए हमें प्रोत्साहन देते रहें शुद्धि और संगठन के कार्य में सर्वदा हमारी सहायता करते रहें। यही हम उनसे आशा रखते हैं। तभी हम इस विशाल आर्य जाति के शत्रुओं को नीचा दिखा सकेंगे। विरोधी देखेंगे कि आर्यवीर किस विक्रम और उत्साह से धर्म के इस युद्ध में उतरते हैं। और जब तक उनके दम में दम है संसार की कोई ताक़त भी हिन्दू जाति का एक बाल भी बांका नहीं कर सकती—

ज़िन्दा हैं अगर आर्य, दुनियां को हिला देंगे।
मग़रब का सिरा लेकर, मशरक से मिला देंगे॥
हमें देखना है दुश्मन, अब कैसे दग़ा देंगे।
हम बहते हुये पानी में, आग लगा देंगे॥
हम सोती हुई क़ौमों को, दम में जगा देंगे।
ग़फ़लत व बुजदिलों को, हर दिल से भगादेंगे॥
दुनियां की हिस्ट्री में, होंगे बड़े करश्मे।
जब वेद अमृत से हम, मुरदों को जिला देंगे॥
फट जायगी ज़मी ये, कांपेगा आंसमां भी।
गर आह भी करेंगे पत्थर को रुला देंगे॥
छाये हुये जो हरसू मजहब के अब्र काले।
सब को मिटा के वैदिक "सूरज" को खिला देंगे॥

इस धर्म युद्ध में इन आर्य वीरों की प्रतिज्ञा को एक कवि के वीर रसपूर्ण ओजस्वी शब्दों में सुनिये और आप भी आज से वैदिक धर्म और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य जाति की रक्षा के लिये यही प्रतिज्ञा कीजियेः—

[१]

"सूर्य" उदय पश्चिम में होवे,
हिमकर ज्वलदङ्गार बने ।
अनल बने, जगतीतल शीतल,
गरल सुधारस—धार बने ॥
अचल हिमाचल चले भले ही,
सीमा सिन्धु अगाध तजे ।
आर्य वीर बलिदान प्रतिज्ञा,
की न किन्तु मर्याद तजे ॥

[२]

तन मन जीवन धन साधन सब,
वेद धर्म पर वारेंगे ।
प्राणों की अन्तिम आहुति से,
भी हम उसे उबारेंगे ॥
अङ्ग अङ्ग कट जाय हमारा,
रोम रोम का छेदन हो ।
वेद सहित "सत्यार्थ" साथ हो,
भद्र भाव में भेद न हो ॥

[३]

धर्म हेतु सर्वस्व समर्पण,
कर हम स्वर्ग को सिधायेंगे ।
पुण्य प्रतापी आर्य जाति का,
मुख उज्वल कर जायेंगे ॥
भावी जन इन अमर शहीदों,
की गुण गाथा गायेंगे ।
विश्व विजेता वेद धर्म की,
धवल ध्वजा फहरायेंगे ॥

[४]

हो वैदिक "सत्यार्थ" प्रकाशित,
मतवादी तम तोम मिटे ।
"सूर्य„ सोम ही नभ में सोहें,
नतरु विश्व से व्योम मिटे ॥
"दया„ और "आनन्द„ सहित सब,
धर्म हेतु सुख मान मरें ।
हँसते हंसते बलि वेदी पर,
हम अपना बलिदान करें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय का दुरुपयोग

(लेखक श्री० रघुनाथ जी पाठक)

सचमुच निठल्ला बैठे रहना बुरा और पतन की ओर ले जाने वाला है। निठल्ले और निश्चेष्ट बैठे रहना दुष्कर्म माना जाता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने आप को इन दोनों दशाओं के विनाशकारी प्रभाव से बचाए रक्खें। मानव जीवन की सफलता के लिए दोनों बातों का दूर करना जरूरी है। जीवन में सफल बनने के लिए कर्म और चेष्टा की जरुरत पड़ती है। जिस जीवन में ये दोनों बातें पाई जाती हैं, वह जीवन सफल होगा, ऐसी आशा करना ठीक ही है। किसी व्यक्ति के नाना प्रकार के कार्यों की सफलता का रहस्य उसके व्यक्तित्व के साथ मिला होता है। व्यक्तित्व-साधन का काम देता है कर्म और चेष्टा वे साधन हैं, जिनके द्वारा व्यक्तित्व बना करते हैं। गीता की समस्त शिक्षाओं का सार यदि एक शब्द में रख दिया जाय तो वह यह है कि हमारे जीवन कर्म्म-मय जीवन हों तथा हमारे कार्य निष्काम कर्म हों। इससे बढ़कर मानव-जीवन की सफलता का साधन और क्या हो सकता है और इससे बढ़कर और कौन शिक्षा कर्म्म के सम्बन्धमें हो सकती है कोई आदेश उपदेश और शिक्षा काम नहीं दे सकती यदि मनुष्य स्वयं उसे काम में परिणित न करें।

जिस आदमी का जीवन कर्म्म-मय होता है उसमें आत्म विश्वास पाया और उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। आत्म-विश्वास से स्वावलम्बन के भाव की उत्पति होती है। किसी भी काम में असफल रहने का विचार तक मनमें नहीं उठता। वह सदैव सहायकों की सहायता पर ही अवलम्बित नहीं रहता। उसकी मनोवृत्ति स्वतः इस प्रकार की बनने लगती है कि उसे निठल्ला बैठे रहना अखरता है। आलस्य प्रमाद और आरामतलबी दूर भागते हैं समय का उससे सदुपयोग होता रहता है। सभी कामों में सफलता का मिलना सम्भव नहीं, परन्तु सफलता के लिए यत्नवान रहना प्रत्येकका कर्तव्य है। कार्य कैसे हों? इसका उत्तर शुभ में है। कर्म की व्याख्या करके लेख को बढ़ा देना इष्ट नहीं। निठल्ले व्यक्ति का जीवन अन्धकार-मय, आलस्यमय तथा निकम्मा बन जाता है। समय को बरबाद करना हो तो निठल्ले बैठे रहो। निठल्ले मनुष्य का दिमाग़ विकसित नहीं हो पाता। हर समय कुविचार और दुर्भावनाए उसके मन को घेरे रहते हैं। कुविचारों के लिये उसे समय मिलता है। जिस व्यक्ति का जीवन शुभ कर्म-मय होता है वह इसी लिए बहुत सी बुराइयों से बचा रहता है कि उसे उन बुराइयों की ओर प्रवृत्त होने तथा विचार तक करने का समय नहीं मिलता। बुराइयों से बचने का कितना सीधा और सरल उपाय है। बुराइयों का पाठ पढ़ना हो तो निठल्ले बैठे रहो। मनुष्य भी जिन प्रकारों से समय को खोता है उनमें से एक प्रकार निठल्ला तथा निश्चेष्ट बैठे रहना हैं।

जो व्यक्ति नियत समय पर नियत काम करता है वह समय का सदुपयोग करता रहता है। नियमित जीवन वाले व्यक्ति की यह विशेषता है कि वह अपने समय के क्षण-मात्र का

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का भी अच्छा उपयोग कर सकता है। उसकी दिन-चर्या स्वतः इस प्रकार की बन जाया करती है जिसके द्वारा वह अपने जीवन को अधिक सुख-मय और सार-मय अनुभव करने लग जाता है। उचित समय और उचित स्थान पर किए हुए सदुद्योग सुन्दरफल उत्पन्न करते हैं। महान् बनने की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति दिन में एक ऐसा समय भी नियत रखते हैं जब वे अपने दिन-भर के कार्यों पर सिंहावलोकन कर सकें। सिंहावलोकन करते समय दिन-भर के कार्यों में से जितने कार्य उत्तम और उचित होते हैं, वे ही उनके हर्ष की मात्रा को बढ़ाने वाले होते हैं और जितने निकृष्ट और अनुचित होते हैं वे ही उनके लिए दुःख पश्चात्ताप और आत्म-ग्लानि का कारण बनते और उनके विकास में बाधक सिद्ध होते हैं। वे व्यक्ति सिंहावलोकन करते समय यह भी देखते हैं कि दिन भर के कार्य्य-कलाप में उनके ऐसे कितने कार्य हैं जो त्याज्य हैं और कितने ऐसे हैं जो ग्राह्य हैं तथा उनके समय का दुरुपयोग हुआ है वा सदुपयोग। त्याज्य कार्यों का होना उन्हें उतनाही बुरा लगता है जितना समय का दुरुपयोग और असमय पर काम करना। इस सिंहावलोकन का एक परिणाम यहभी होता है कि वे समय के सदुपयोग का भी बड़ा ध्यान रखते हैं और इसी लिए वे बड़ी उन्नति और विकास कर लेते हैं। आज जिन जातियों को हम अधिक उन्नत मानते हैं उन जातियों के व्यक्तियों के जीवनों में यह बात पाई जाती है कि उनके जीवन बड़े नियमित Punctual हैं और वे समय की पाबन्दी का बड़ा ध्यान रखते हैं।

ठीक समय पर काम करने से कामों में व्यवस्था रहती है और मन में एक प्रकार का उत्साह पैदा होता है साथ ही रुचि के साथ किये हुए कार्य के सम्पादन में न तो कठिनता ही महसूस होती है और न समय की बरबादी। यह उत्साह और रुचि दोनों मिलकर भी एक छोटे से व्यक्ति से अकेले वे काम करा देते हैं जो दश मिलकर भी जिन में इस उत्साह और रुचि का अभाव होता है नहीं कर पाते। कर्त्तव्य, बुद्धि और लगन से काम करने वाले व्यक्ति को समय पर काम करने की टेव बड़ी सहायता देती है। कुछेक मनुष्य जान बूझ कर दूसरों को तङ्ग किया करते हैं और कुछेक अनजान में। दूसरा श्रेणी के पुरुषों के द्वारा समय पर काम न करने की टेव से भी दूसरों को कष्ट पहुंचा करता है। इसलिए आवश्यक है कि वे इस कारण से दूसरों को तङ्ग न करते हुए समय पर काम करने का ध्यान रक्खें। समय पर काम करने वाले व्यक्ति इस बात को दृष्टि में रखते हैं कि दूसरों के समय का भी दुरुपयोग न हो यही भाव उनके नियमित जीवन में हर्ष और प्रसन्नता की वृद्धि का कारण होता है।

वे लोग यह भी समझते हैं कि Rome was not built in a day अर्थात् रोम का निर्माण एकही दिन में नहीं हो पाया था। इसका अभिप्राय यह है कि कठिन से कठिन काम तुरन्त ही सम्पादित नहीं किए जा सकते। उनमें समय अवश्य लगता है। वे लोग ऐसे कार्यों को हाथ में ले लेते हैं। समय नियत करते हैं और उसे नियत समय पर ही करते हैं। विपरीत इसके जो समय पर काम काम करने के तो कायल हैं परन्तु करते नहीं उनके काम अव्यवस्थित, अधूरे और सार-हीन रह जाते हैं। वे अपने को दुःखी तथा दूसरों को तङ्ग करते है। वे अपने व्यक्तित्व को नहीं बना पाते और न उनका व्यक्तित्व दूसरों की दृष्टि में कोई मूल्य ही रखता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भले ही ऐसे व्यक्तियों को आंशिक सफलता मिल जाय परन्तु पूर्ण-सफलता नहीं मिलती। मन में न उत्साह पैदा होता है न रुचि और न मस्तिष्क पूर्ण विकसित हो पाता है। विद्यार्थियों के लिए समय पर काम न करने की कुटेव बड़ी हानिकारक है। इस कुटेव से जहां उनके समय का दुरुपयोग होता है, वहां उन्हें ज़रूरत से ज्यादा परिश्रम भी करना पड़ता है। यदि इस प्रकार के परिश्रम से बचना हो तो इस कुटेव को दूर कर देना चाहिए। इस कुटेव से चित्त में अशान्ति, उद्विग्नता और एक प्रकार का भय उत्पन्न हो जाता है। इन सबको दूर करने और अपने समय का सदुपयोग करने के लिए आवश्यक है कि समय पर काम करने की आदत डाली जाय। विद्यार्थियों के लिए तो स्वतः ऐसा समय विभाग बनाया जाता है जिससे समय का सदुपयोग हो परन्तु इन समय-विभागों का कोई क्रियात्मक लाभ हमारे सामने नहीं आ सकता जब तक उनपर पूर्णरीत्या अमल न किया जाय। सारांश यह है कि मनुष्य जिन प्रकारों से अपने समय को नष्ट करता है उनमें से दूसरा समय पर काम न करना है।

बहुत से आदमियों का यह स्वभाव होता है कि वे अपने समय को ऐसे कार्यों के करने में नष्ट करते हैं जो बुरे और घृणित होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति कुछेक ऐसे काम कर बैठता है जो स्वयं उसके लिए हानिप्रद होते हैं और कुछेक दूसरों के लिए कष्टप्रद, ऐसे कामों को ही अदूरदर्शिता पूर्ण और बुरा समझा जाता है। बुरे काम से सदा बचना चाहिए। जितना समय हम २० बुरे कामों के करने में लगाते हैं यदि उतना ही समय २ शुभ कर्मों के करने में लगा देवें तो बड़ा लाभ हो सकता है। गप्प मारने, व्यर्थ का टण्टा मोल लेने, अनधिकार चेष्टा करने, व्यसनों में फंसे रहने, पतन की ओर ले जाने वाले मनोरञ्जन के साधनों के जुटाने, बुद्धि-सङ्गत तथा मानवोचित कार्यों के न करने आदि में मनुष्य अपने समय को नष्ट किया करता है। सबसे ज्यादा समय की बरबादी लापरवाही के कारण हुआ करती है। कब? जब यह लापरवाही Dead Habit मुर्दास्वभाव का रूप ले लेती है। उन्नति के पथ में विचरण करने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अपने समय को बुरे कामों के करने में न बरबाद करें!

सत्तेप में यह बात निर्विवाद है कि आदमी अपने समय को ४ प्रकार से नष्ट करता है।

१—निठल्ले तथा निश्चेष्ट बैठे रहने में (२) समय पर काम न करने में, (३) किये जाने योग्य काम के न करने में, (४) बुरे कामों के करने में।

जीवन में सफलता की सोपान पर चढ़ने के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग करे, तथा उन बातों से अपने आप को बचाए रक्खें जिस से उसका समय नष्ट हो या नष्ट होने की सम्भावना हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय की पुकार

[लेखक—श्रीयुत चुन्नीलाल शर्म्मा]

मालूम नहीं मेरा जन्म कब कहां और किस समय हुआ था। जब मैं आपको अपने जन्म और स्थान का परिचय ही देने में असमर्थ हूं तो फिर यह तो बताना ही असम्भव है, कि मनुष्य की निर्माण कर्ता किस जाति में उत्पन्न हुआ। अथवा मेरे माता पिता किस जाति के थे और नहीं मालूम मेरा जन्म विशाल भवनों में हुआ या फूंस की झोंपड़ी में, नहीं मालूम मेरे जन्म के समय दाई थी या डाक्टर, कह नहीं सकता दोनों में से कौन था। या एक भी नहीं अथवा मेरी माता ने ही प्रसव की वेदना से तड़प तड़प कर जन्म दिया था। और हां नहीं मालूम मेरी मां ने मुझे आनन्द में जन्म दिया था या शोक में। नहीं मालूम मेरे जन्म का स्वागत किस प्रकार किया गया था। प्रसन्न चित्त से या नेत्रों के आंसुओं से। नहीं मालूम मेरे जन्म के उपलक्ष में समाज नाम धारी जन्तुओं की ओर से मेरी माता को क्या मिला था। समाज का प्रेम या तिरस्कार। नहीं मालूम क्या बस मेरा परिचय इतना ही है।

खैर मुझे इससे क्या चाहे मैं वर्तमान समाज नामधारी किसी भी श्रेणी में या मनुष्य की निर्माण कर्ता किसी भी जाति में उत्पन्न हुआ होऊं। ब्राह्मण या वैश्य, शूद्र या क्षत्री, नीच, ऊंच छूत, अछूत, अमीर या गरीब पर आप आश्चर्य करेंगे, कि मैं आज इन बर्तमान नामधारी किसी भी श्रेणी में नहीं हूँ। मेरी जाति नवीन है और वह संसार के प्रत्येक देश में आपको मिलेगी। कारण मनुष्य जाति ने इस बर्तमान जातियों से बहिष्कृत कर के एक और ही नवीन जाति की रचना कर डाली है। वह जाति निःसहाय दूसरों की आश्रित दर दर की भिखारी, वह जाति कौन है? जानते हो संसार के मनुष्यों? हां तुमही जानोगे तो और कौन जानेगा। तुम्हीं ने तो इस नवीन जाति की रचना की है। हां सुनो सुनो, सुनो, वह जाति, वह आश्रित, वह तुम्हारी दया पर चलने वाली जाति कौन है? वह हां! वह अनाथ है।

हां तो जब मैं इस संसार में चलने फिरने और बोलने लगा, तो इसी अनाथ नामधारी श्रेणी में अपने को जीवन व्यतीत करते हुये पाया। मेरे लिये नौकर नहीं थे, आमोद-प्रमोद के लिये भांति-भांति की बस्तुयें नहीं थीं और नहीं थे मेरे लिये वह सांसारिक सुख कि जिनके ऊपर बालक का जन्म लेते ही जन्मसिद्ध अधिकार है। मेरे लिए सुख नहीं था।

वह सुख मेरे लिये सिवाय एक कल्पना के और कुछ नहीं था। कल्पना! अरे हां! कल्पना वह मेरे लिये कल्पना भी नहीं थी। क्योंकि कल्पना भी उसी वस्तु की हो सकती है, जिस का कुछ अनुभव हो, ज्ञान हो। पर मेरे लिये तो सुख का अनुभव करना भी स्वप्न था।

जिस प्रकार सारे दिन परिश्रम करके पेट की क्षुधा को शान्त करने वाला ग़रीब मज़दूर किसान रात्रि को निद्रा की गोद में फूंस की झोंपड़ी में पड़े हुये, नाना प्रकार के स्वप्न देखता है। और फूंस की झोंपड़ी में पड़े हुये ही क्षण मात्र में बिशाल भवनों के निवास के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सारे संसार के सुखों को भोग लेता है। पर आँख खुलते ही वही फूंस की झोंपड़ी और वही रोटी की चिन्ता उसे व्याकुल कर देती है। पर मुझमें और उस फूंस की झोंपड़ी में निवास करने वाले किसान में बहुत अन्तर है। वह संसार का अन्नदाता है, हम भिक्षुक, वह संसार का पालक है। हम आश्रित वह झोंपड़ी में प्रसन्न चित्त और हम विशाल भवनों में अप्रसन्न चित्त जीवन व्यतीत करते हैं।

क्यों? इसका उत्तर हां! इसका उत्तर अपने हृदयों से पूछो।

हां! यह ठीक है, कि हमको न घरकी चिन्ता है, न वस्त्र की, न शीत का डर है न रोटी की फिक्र। पर फिर भी हमारे हृदय में एक चिन्ता है स्मरणमात्र होने से ही हृदय व्याकुल हो उठता है। वह चिन्ता क्या है। वह व्याकुलता और हृदय की वेदना क्या है। सुनो "जिस समय हम सोचते हैं कि, संसार में हमारा कौन है जो पुत्र की भांति हमको प्यार करे, और हमारे लिये वह सारे सांसारिक सुख प्रस्तुत करे कि जिनके ऊपर संसार के प्रत्येक मनुष्य का समानाधिकार है। क्योंकि हम भी उन्हीं की तरह मनुष्य हैं, हमारा भी उसी प्रकार अधिकार है। जिस प्रकार उनका, हम भी उन्हीं के वंशजों की सन्तान हैं। हम भी उसी देश और जाति में उत्पन्न हुए हैं जिसमें वह, फिर इस का क्या कारण कि वह हमको निकृष्ट दृष्टि से देखते हैं। हां यह ठीक है कि हम सांसारिक माता, पिता, भाई और बन्धुओं से वंचित हैं तो क्या हुआ क्या हम एक देश और जाति के नाते उनके भाई, बन्धु और पुत्र पुत्री नहीं। फिर क्या कारण वह हमारा पालन उपेक्षित हृदय से करते हैं। और हमारे पालन के लिए द्रव्य का व्यय करते समय वह सोचते हैं कि हम पुण्य कर रहे हैं। जिससे हमारे लिए स्वर्गलोक का मार्ग खुल जायगा। पर क्या यह उनके लिए दान है, पुण्य है, नहीं यह उनका कर्तव्य है। जिसको वह कहते हैं अवश्य, पर भूले हुये मार्ग से पुण्य का ढोंग रच कर, दानशीलता का आडम्बर रच कर, और अपने को परोपकारी कहलाकर ही वह ऐसा कहते हैं। कर्तव्य समझ कर नहीं, और वह भूल जाते हैं कि हमारा जो कर्तव्य है उसी को कर रहे हैं। पर नहीं वह हमको दीन अनाथ और निःसहाय समझ कर ही ऐसा कहते हैं। और वह भूल जाते हैं कि हमारे सांसारिक माता, पिता नहीं तो क्या हुआ? जिसकी गोद में हम हमारे माता पिता पले हम उसी के आश्रित हैं। वह ही हमारी मां है, वह ही जननी है। जिसके आशीर्वाद से तुम संसार में फूल रहे हो और ऊंचे ऊंचे महलों में पड़े हुये संसार के क्षणिक सुखों में लिप्त हो। पर क्या तुमने सोचा कि जिसके प्रताप से तुम इन सुखों को भोग रहे हो उसके पुत्र और तुम्हारे बन्धु आशा भरी दृष्टि से तुम्हारी ओर देखते हैं। पर तुम उनको हेय समझ कर नीच, और पतित समझ कर अपने भोजन में से चन्द टुकड़े उनकी ओर फेंक कर दानी बनते हो कितना आश्चर्य है। कितना ढ़ोंग है! और कितनी है विडम्बना, उफ! विश्व बन्धुता का यह परिचय।"

"जिस समय यह विचार मेरे हृदय में उठते हैं तो हृदय एक बार हाहाकार उठता है! और संसार के इन मनुष्यों पर घृणा तथा क्षोभ से व्याकुल हो उठता है उफ! यह पाखंड यह धूर्तता किसलिए सिर्फ इसीलिए है न, कि संसार में हमारा नाम हो हम दानी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मात्मा कहलायें नहीं तो और इसका कारण ही क्या है।"

संसार के मनुष्यों ! अपने को धनी, दानी और धर्मात्मा बताने वालों ! क्या हमारी इस वेदना भरी पुकार को सुनोगे ? क्या कहा ? नहीं हां ठीक है यही आवाज़ हमारे भी अन्तस्तल से प्रतिध्वनित होती है मानो कह रही हो। "मूर्खों तुम क्या सोच कर दीनता भरी पुकार उससे कह रहे हो। क्या एक देश और जाति के नाते तो यह तुम्हारी भूल है। तुम उनको बन्धु कह कर पुकारते हो वह तुमको भिक्षुक, तुमको तो वह पहले ही "अनाथ" कह चुके, फिर उनके बन्धुत्व कहाँ, अगर बन्धुत्व ही रखते तो 'अनाथ' के ही नाम से सम्बोधित क्यों करते। तुम गरीब हो और दूसरों के आश्रित, वह हैं धनवान और दूसरों के पालक ! फिर सोचो दाता और भिक्षुक में समानता कहाँ ? वह अमीर हैं तुम गरीब। वह हैं विशाल भवनों के स्वामी और तुम झोंपड़ी के भी नहीं। फिर कहाँ का बन्धुत्व और कहां का देश प्रेम उनका तो धन ही देश है, धन ही बन्धु है, धन ही मित्र है और धन ही है उनका धर्म। तुम उनकी दान शीलता को, समाज सेवा को, परोपकारता को क्या समझ सकते हो इस में भी कुछ रहस्य है और है उनका स्वार्थ ?

ओह, ठीक है मेरे अन्तरात्मा में उठने वाली ध्वनि ! ठीक है, आज तक हम इनको अपना हितैषी अपना रक्षक और अपना पालक समझते थे, पर आज समझ में आया कि यह सब स्वार्थवश और विवशता से करते हैं औरों के दिखाने के लिए दानी बनने के लिए और नाम पाने के लिए।

धनियों !! हमारा पालन करने वालों ! हमारे हितैषी बनने वालों !! तुम्हारे ढोंग का पर्दा पलट चुका है, तुम्हारे दान और पुण्य का चित्र हमारे नेत्रों के आगे नाच रहा है, अस्तु सावधान ?

अब हमारा तुम से एक ही प्रश्न है, तुम हमको 'अनाथ, के नाम से सम्बोधित करना चाहते हो या बन्धु के बोलो ! बोलो !! बोलो !!! समाज के शासन कर्त्ताओं ! चुप क्यों हो कुछ तो कहो और हमारे इस प्रश्न का हृदय से सोच कर उत्तर दो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योरुप के दयानन्द

मार्टिन ल्यूथर के प्रति श्रद्धांजली

(लेखक--श्री भगवानदास जी केला भारतीय-ग्रन्थमाल : वृन्दाबन)

महान् सुधारक ! तुमने मध्यकालीन योरुप के धार्मिक क्षेत्र से कितना मैल हटा कर उसे निर्मल और पवित्र करने का उद्योग किया, इस बात का अनुमान अब तुमसे चारसौ वर्ष पीछे के संसार में रहने वाले मनुष्य सहज ही नहीं कर सकते। उस समय 'विशप', 'एबट' आदि अनेक रोमन.कैथोलिक धर्माधिकारी नवाबों, रईसों और बादशाहों का जीवन व्यतीत करते थे। वे अपने धार्मिक कर्तव्यों को भूल कर सांसारिक माया जाल में फंस गये थे। जनता में तरह तरह के अन्ध विश्वास और कुरीतियां प्रचलित थीं, उन की ओर वे ध्यान नहीं देते थे लोगों में अन्यान्य बातों में यह भ्रम फैला दिया गया था कि 'पोप' को दान दक्षिणा देने से सब प्रकार के पापों से मुक्ति मिल सकती है। 'मुक्तिपत्र' की कीमत बहुत कुछ पापी की हैसियत के, तथा पाप की श्रेणी के अनुसार होती थी। ऐसे धर्मान्धकार के सर्वव्यापी वातावरण में. महात्मा ल्यूथर ! तुमने रण-भेरी सुनादी और इस प्रकार संकट के आह्वान में तुमने इस बात को सोचने का अवसर ही नहीं निकाला कि तुम्हारे साथी कौन होते हैं, और कहां तक तुम्हें अकेले ही इस कंटकाकीर्ण मार्ग पर अग्रसर होना पड़ेगा। तुम्हें सादर नमस्कार !

\+ + +

महात्मन् ! तुमने जर्मनी के एक ग्राम में जन्म लिया था। तुम एक निर्धन किसान को सन्तान थे। बाल्यावस्था में तुम्हे पेट भर भोजन पाने के लिये भी बड़े कष्ट सहन करने पड़ते थे। तुमने अपने परिश्रम और अध्यवसाय से जल्दी ही लेटिन भाषा और दर्शन शास्त्र आदि की शिक्षा प्राप्त करली। तुम्हारे पिता की इच्छा तुम्हें कानून के व्यवसाय में लगाने की थी। परन्तु परमात्मा ने तुम्हें दूसरे ही उद्देश्य की पूर्ति के लिये भेजा था। यों तो पहले से ही तुम्हारी रुचि धार्मिक विषयों की ओर थी, पर एकआकस्मिक घटना ने तुम्हें इस ओर विशेष रूपसे आकर्षित कर दिया। बिजली के गिरने के कारण, अपने एक प्रिय मित्र की मृत्यु होते देख कर तुम्हे सांसारिक सुखों की अनित्यता का यथेष्ट अनुभव हो गया। तुमने निश्चय कर लिया कि अब मैं जीवन भर धर्म का वास्तविक रूप समझने, और अन्य लोगों के हृदय से धर्म सम्बन्धो अज्ञान दूर करने का प्रयत्न करता रहूंगा। तुमने धार्मिक साहित्य का खूब अनुशीलन किया; व्रत उपवास, जप, तप में भी कुछ कमी न की। इन बातों से यथेष्ट सान्त्वना प्राप्त न होते देख, तुमने बाईबिल का स्वाध्याय किया। निदान तुमने यह मालूम कर लिया कि जो धर्म सर्व साधारण में ईसाई धर्म के नाम से प्रचलित हैं, वह वास्तव में बाईबिल की शिक्षा के अनुसार नहीं है, इसमें बहुत खराब मिलावट हो गई है। और यह जान लेने पर तुमने निर्भय होकर अपने बिचारों का प्रचार करना आरम्भ कर दिया।

\+ + +

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानुभाव ! तीर्थ यात्रा तो असंख्य आदमी करते हैं, पर कितने हैं, जो आँख खोल कर वास्तविक शान्ति प्राप्त करने के लिये यात्रा करते हैं, और तीर्थ स्थान में अनाचार या छल कपट आदि का व्यवहार देखकर तुम्हारी तरह उसका सम्यक् सुधार करने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं। पोप के गढ़ में—रोम में—पाप और दुराचार-प्रधान वातावरण पाकर तुम कितने दुखी हुए और धर्म मंदिर का सुधार करने, तथा उसके अधिष्ठाता को सन्मार्ग पर लाने के लिये तुम कैसे बेचैन हो उठे, इसे तुम ही जानते थे। और हां, बड़े बड़े सम्राटों तक को मन माने नाच नचा सकने वाले पोप की दुर्दमनीय शक्ति का लेखों से, और भाषणों से सामना करना भी तुम्हारे जैसे महापुरुष का ही काम था। पोप को धन का अभिमान था। उसे असंख्य जनता के अन्धविश्वास-जनित सहयोग का आसरा था। जिस किसी ने विरोध करने का दुस्साहस किया वह जीते जी अग्नि की आहुति बनाया जाता था। इसलिये पोप हंसता था कि एक ल्यूथर ही मेरा क्या कर सकता है। वह तुम्हारे विशुद्ध वादानुवाद और तर्क का सुनने में अपना अपमान समझता था। उसने अपना आदेश-पत्र जारी कर दिया कि या तो तुम अपने व्यक्त किये हुए विचारों को वापिस लो, या नास्तिकों के लिये नियत की हुई सज़ा—जीवित ही अग्नि में जलना—स्वीकार करो। पर, तुम भी मृत्यु से डरने वाले, प्राणों का मोह करने वाले आसामी न थे। सहस्रों पुरुषों की भरी सभा में तुमने पोप और उसके समर्थकों को ललकार कर वीरता पूर्वक अपने सिद्धान्त की रक्षा करने का अनुपम परिचय दिया। किन शब्दों में तुम्हारी स्तुति की जाय।

÷ + +

तुम बहुत समय तक, प्रतिक्षण अपने प्राण संकट में रखे, अनेक कष्ट उठाये, पर पोप के, तथा तत्कालीन अन्ध विश्वासों के विरुद्ध गर्जना करना न छोड़ा। इसी का यह परिणाम हुआ कि प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय की स्थापना होगई इस मत के अनुयायी ईश्वर की निराकार रुप में ही उपासना करते हैं, अपने गिरजाघरों में उसकी प्रतिमा तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले धूप, दीप, वस्त्राभूषण आदि अन्य विविध पदार्थ नहीं रखते। ये इस बात को भी नहीं मानते कि पोप किसी आदमी को स्वर्ग या नरक भेजने का अधिकारी है। ईसाइयों मे यह मत ऐसा है, जैसा हिन्दुओं में आर्यसमाज है, और तुम योरुप के ऋषि दयानन्द कहे जा सकते हो। तुम्हें सादर बन्दना !

+ ÷ ÷

अहा ! तुम्हारे समय में तथा उसके बाद इसाई धर्म के दो सम्प्रदायों में—रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट में, पुराने और नये में—कितना विरोध रहा है ! सच है, एक ही धर्म के दो मतों में जितना वैर विरोध होता है, उतना तो उन दो धर्मों में भी देखने में नहीं आता, जो एक दूसरे से सर्वथा भिन्न हों। ओफ् ! कितने प्रोटेस्टेंटों को, अपने भाई बन्धु रोमन कैथलिकों की ज़्यादतियों के कारण विवश अपनी जन्मभूमि से दूर जाकर विदेशों की खाक छाननी पड़ी है, कितनों को अपने प्राणों से हाथ धोने पड़े हैं, रण में, उत्सव में, खेल तमाशों में कितने अनायास, अकस्मात् मौत के घाट उतारे गये हैं, कितने अपने नन्हें बच्चों और अनाथ स्त्रियों को बिलखते छोड़ कर इस संसार से असमय विदा होने के लिए वाध्य किये गये हैं। इसकी स्मृति मात्र से रोमाञ्च हो जाता है। धर्म के नाम पर ऐसी क्रूरता ! ऐसी निर्दयता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो मनुष्यत्व को लज्जित करने वाली, सभ्यता को कलंकित करने वाली रही। पर धन्य है उन नर-रत्नों को, जो सहर्ष बलिदान हो गये, पर अपने स्वाभिमान, अपने धर्म की आन पर डटे रहे, जिन्होंने अग्नि में भस्म होते होते भी यह सूचना दी कि "हम स्वर्ग में ऐसा दीपक जलाएंगे' जिससे समस्त संसार प्रकाशित हो जाएगा, । यह संदेश तो सत्य हो ना ही चाहिये था। ठीक ही तो कहा गया है, 'धर्म-प्राण महात्मा का शरीर नष्ट हो सकता है, परन्तु जिस सच्चाई के लिए वह प्राण त्याग करता है, वह तो उसके बलिदान से और भी अधिक प्रभा-युक्त हो जाती है। 'इन बलिदानों के प्रभाव से संसार में प्रोटेस्टेंट मत का प्रचार बहुत जल्द हो गया। इस मत के आदि प्रचारक तुम धन्य हो!

× + ×

महोदय! तुम्हारे अनुयायियों की संख्या और शक्ति अब काफी बड़ी है। पर क्या उनमें से अधिकांश अपने महान उत्तरदायित्व को समझते, और उसे पालन करते हैं? क्या ये तुम्हारे अनुपम आदर्शों को अपने जीवन में समुचित रूप से व्यवहृत करते हैं? क्या ये संसार का अज्ञान और अन्ध विश्वास हटा कर वास्तव में मनुष्य मात्र का हित साधन कर रहे हैं? क्या उन्हें स्मरण है कि जिन महापुरुषों और संतों के ये अनुयायी या उत्तराधिकारी हैं, उनके नाम पर इन्हें कितना अधिक स्वार्थ-त्याग और परोपकार करने की आवश्यकता है।

+ × +

महात्मन्! दुःख का विषय है कि संसार तो तुम्हारे भक्तों से प्रेम और दया की आशा करें, और, वे प्रायः रक्त-पात के उत्तरदायी पाये जांय। बहुधा एक प्रोटेस्टेंट राष्ट्र दूसरे प्रोटेस्टेंट पर भी आक्रमण करते देखा जाता है यह ठीक है कि युद्ध का स्वरूप अब धार्मिक न होकर आर्थिक या राजनैतिक बताया जाता है। पर इससे क्या? युद्ध के लिये नित्य नये घातक साधन जुटाने में इतने दिमाग और हाथ लग रहे हैं, क्या यह कुछ शोचनीय नहीं है? और हां, अब एक नयी बात और होने लगी। प्राचीन काल में ईसाई धर्माचार्य युद्धों से प्रायः उदासीन रहते थे, अब ये भी अपने २ राज्य की विजय के लिए प्रार्थना करते हुए मिलते हैं। कहां हैं वे निर्भीक, निष्पक्ष आचार्य जो युद्ध छिड़ने पर अपने या पराए राज्य का विचार छोड़ कर, जी खोल कर न्यायी का समर्थन और अन्यायी का विरोध करते हों? हे महापुरुष! बड़ी आवश्यकता है कि कोई तुम्हारे जैसी महान् आत्मा लोगों के हृदय में ज्ञान का दीपक जलाये, और धार्मिक जगत के अन्याय, अत्याचार, स्वार्थ और अन्धकार को दूर करे।

वीर श्रेष्ठ ल्यूथर! सादर प्रणाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज का अछूतों में कार्य

(लेखक—श्रीयुत देवेन्द्र कमल जी एम० ए०)

यह बात संसार जानता है कि हिन्दू समाज में सफलता के लिए क्रांति की आवश्यकता है हमारी समाज का विचित्र बन्धन है घृणा। इसका कई शताब्दियों में बहुत से मान्य पुरुषों को ज्ञान हुआ होगा, किन्तु उन में से ऐसा कोई आदमी न था जो हमारी समाज की दासता के विरुद्ध आन्दोलन करता और इन व्यर्थ के बन्धनों के तोड़ने का प्रयत्न करता। कालीचन्द्र उप नाम "काला चान्द" मुसलमान हो गया और हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए अपनी समस्त शक्ति लगा दी, किन्तु उसे तलवार की युक्ति से हिन्दु समाज की व्यवस्था के सुधारने का विचार तक न आया। पण्डिता रमाबाई ईसाई हो गई और उसने हिन्दू कन्याओं पर क्रूर से क्रूर आक्षेप किए किन्तु उस बिदुषी महिला के मस्तिष्क में यह विचार नहीं आया कि हिंदू समाज में क्रांति पैदा करके समाज के आडम्बरों को तोड़ मरोड़ दें, आज हम इस बात के लिये कृतज्ञ हैं कि, महर्षि दयानन्द ने इस समस्या को समझा और सामाजिक बन्धनों के बिरुद्ध आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया, ऋषि की संस्थापित आर्यसमाज ने इस कार्य में हिस्सा बटाया और आज तक आर्य समाज इस कार्य को बड़ी सावधानी एवं तत्परतासे करती रही है किन्तु मुझे यह शंका उत्पन्न होती है कि क्या आर्यसमाज का यह कार्य सफलता को प्राप्त हो सकता है? या इससे हमारे समाज में भिन्न भिन्न बाधायें आजावेंगी, या इसका उद्धार होगा।

एक बात को कई प्रकार के दृष्टि कोण से लिखा जा सकता है अतएव मैं इस प्रश्नका उत्तर राजनैतिक दृष्टि से देना चाहता हूं। धार्मिक विधि से आर्य समाज ने अछूत जातियों में कार्य करने से शायद यह विचार समझा होगा कि ईसाइयों, मुसलमानों की तरह से अपने अनपढ़ भाइयों में प्रचार करके इनको अपनी ओर आकर्षित किया जावे, मैं नहीं कह सकता कि आर्य समाज को इसमें कहाँतक सफलता हुई, किन्तु राजनैतिक दृष्टि से प्रतीत होगा कि आर्य समाज ने प्रचार का एक ग़लत रास्ता अख्तियार करके हमारी आधुनिक राष्ट्रीय समस्याओं को और भी कठिन कर दिया है। यदि आर्य समाज और आर्य समाजियों के हृदय में केवल मनुष्य की समानता का विचार था तो हमारे अनपढ़ और निर्धन भाइयों का एक नए नाम से संस्कार कर दिया और वह नाम नमालूम कब तक इस अनाथ भूमि से दूर होगा मेरी समझ में नहीं आता कि मनुष्य की समानता मानते हुए उनके भूतपूर्व सामाजिक रूढ़ियों को लेकर उनको अछूत-दलित-का नाम लिया जाए यदि आर्यसमाज स्पर्शास्पर्श को नहीं मानती तो किसी को अछूत लिखने कहने का क्या अधिकार है? आर्यसमाज में हमारे अनपढ़ निर्धन भाइयों को काम करने वाली संस्थाओं को देखो तो हमें उनके ऐसे २ नाम मिलेंगे, यथा-दलितोद्धार सभा, अछूतोद्धार कमेटी, दलितोद्धार मण्डल, मेघोद्धार सभा, अछूत सुधारलीग, इत्यादि। क्या यह ऊपर लिखित नाम यह प्रकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करते कि आर्यसमाज मनुष्य की समानता को नहीं मानता।

यदि इन लोगों में प्रारम्भ से ऊंच नीच के विरुद्ध विचार होता तो दलितोद्धार सभायें बनाने के स्थान में जात-पांत-तोड़क मण्डल; हिन्दू सभालय आदि बनाते। आर्यसमाज ने हमारे कुछ भाइयों का नाम अछूत आदि रक्खा है किन्तु नाम में ही कुछ जाहिर होता है जिनके प्रभाव से कोई भी अपरिचित नहीं। हम अमृत को विष और विष को अमृत नहीं कहते। एक अंगरेज अपने आपको हिंदुस्तानी नहीं कह सकता। हिन्दुस्तानी अंगरेजी नाम से घृणा करता है इस अद्भुत नाम के मन्त्र ने यह प्रभाव डाला कि उनमें अछूत के नाम से अपने आप को मातृ जाति से सर्वथा भिन्न कर दिया, यद्यपि यह पृथक प्रभाव अभी बहुत धुन्धला है किन्तु यह सूर्य के समान शीघ्र ही प्रकट हो जायगा। यदि आर्यसमाज ने अपने प्रचार का ढंग न बदला।

मैं हर दिशा से यह शब्द सुनता हूं कि आर्य्य समाज के पढ़ाये-लिखाये-सभ्य बनाये हुए अछूत युवक आर्य्य समाज से बाग़ी हो गये। किन्तु जरा सोचने की बात है कि वे बाग़ी क्यों न हों। बग़ावत ही नहीं होगी अपितु-कभी शायद खुल्लम खुल्ला युद्ध भी होजाये।

इब्तदाये इश्क है, रोता है क्या।
आगे आगे देखना, होता है क्या॥

जिस समानता का ढोंग पहिले रचा गया था क्या वह अमल में लाया गया? मैं पूछना चाहता हूं कि कितनी नामधारी उच्च जातियों के युवक युवतियों का विवाह सम्बन्ध नामधारी अछूत युवक युवतियों से हुआ? मेरे विचार में उत्तर मिलेगा कि, दो तीन से अधिक नहीं। क्या इसी का नाम सफलता है? क्या इसी बात पर आर्य्य समाज अभिमान कर सकती है?

यदि-आर्य्य समाज को यह डर है कि हमारे अछूत भाई हमसे अलग हो जायेंगे, और हमारी जाति के संगठन में बाधा पड़ेगी और इससे अन्य हिन्दू जातियां अधिक शक्तिशाली होकर स्वराज्य के कार्य में बाधा डालेगी, तो उन्हें इन कल्पित नाम को जितनी शीघ्रता होसके त्याग दें, या मनुष्य की असली समानता को मान कर जात-पांत के ऊंच नीच भावों को हमारी जाति से बहिष्कृत करना चाहिए। किसी को अछूत या दलित कहना, किसी नेक आदमी का काम नहीं!

अतएव दलितोद्धार सभायें आदि शीघ्र से शीघ्र ही तोड़ देनी चाहिए और उनके स्थान पर हिन्दू साम्यवाद मण्डल आदि स्थापित कर देने चाहिए, यह सब सभायें जात-पांत-तोड़क में परिवर्तित कर एक ठोस कार्य की नींव डालनी चाहिए।

यदि हम इस समानता के भाव को लेकर कार्य करेंगे तो कभी-यह उलहना न आयेगा कि अमुक अछूत युवक जिसको आर्य्य समाज ने सुशिक्षित एवं योग्य बनाया, वह आर्य्य समाज से बाग़ी हो गया, अन्यथा दलितोद्धार सभायें आदि एक आडम्बर हैं और इससे जितनी शीघ्रता हो सके छुटकारा पा लेना चाहिए।

—०:०:०—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय महिलाओं ने परदा उठा दिया

राजनैतिक आन्दोलन में अग्रणी महिलायें

अमेरिकन पत्र कोर ने क्या देखा ?

बम्बई २९ नवम्बर।

"शिकागो ट्रीब्यून" पत्र के प्रतिनिधि मि० विलियमशीहर ने भारतीय आन्दोलन के सम्बन्ध में बम्बई से निम्न लेख अपने पत्र को भेजा है। लेख में दिखाया गया है कि किस प्रकार परदे की प्रथा को त्याग कर भारतीय महिलायें राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग ले रही हैं:---

"इस भारतीय महा संग्राम में भारतीय महिलायें अपने परदे को छोड़ कर बाहर निकल रही हैं। मिस मेयो ने जो कुछ लिखा है वह केवल परले दर्जे की कुछ बुराइयां लेकर उद्धृत करदी हैं। वैदिक जमाने से ही भारत में महिलाओं का स्थान उच्च रहा है वे राजनैतिक तथा सामाजिक सभी तरह के कार्यों में भाग लेती रही हैं। इस जमाने में भी हम देखते हैं कोचीन तथा ट्रावनकोर की रियासतों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार है, ब्रिटिश इंडिया में महिलाओं को निर्वाचनाधिकार मिले हुये हैं। १ महिला तो मद्रास कौंसिल की डिप्टी प्रेजिडेन्ट बन चुकी हैं।

महात्मा गांधी की जागृत की हुई क्राँति ने भारतीय सामाजिक अन्ध विश्वास के सूत को तोड़ डाला है। इसकी गर्जना से कट्टर हिंदुओं के पुराने गढ़ टूट गए हैं जो बालविवाह के पक्षपाती थे उन मुसलमानों की प्रथा हट गई है जो महिलाओं को परदे में बन्द रखते थे। मुसलमानों में परदे की प्रथा बड़ी शीघ्रता से हट रही है। यह भी कहा जा सकता है कि यह उनके इस आन्दोलन के आरम्भ होने पर मुसलिम महिलायें अपने पतियों की आज्ञा तथा परामर्श से परदा छोड़ रही हैं। ये लोग समय की नई रोशनी को समझ रहे हैं। आये दिन की एक घटना है। लखनऊ में एक नेता गिरफ्तार हुए उन्हें ६ मास की सजा सुनाई गई। उनकी धर्मपत्नी, जो अब तक पर्दे की आड़ में छिपी रहती थी, इस खबर के मिलते अपने परदे से बाहर कूद आई और पहलीही बार उन्हों ने अपने जीवन में परदा छोड़ दिया और इस तरह सारे संसार को दिखा दिया कि अब परदे में रहने की प्रथा गई और ऐसा कहते हुए उस ने पति का स्थान लेने की इच्छा प्रकट की।

इस तरह का सारा नाटक भारत में होरहा है। खास कर बंगाल के अखबारों में मुसलमान गुन्डों द्वारा जो महिलायें भगाई जाती थीं, और वर्षों से परदे की आड़ में रहती थीं, वे अब छुटकारा पा रही हैं।

यद्यपि परदा दूर करने में अभी कुछ समय लगेगा परन्तु वर्षों की यह पुरानी प्रथा शीघ्र ही हट रही है। सम्वाददाता लिखता है कि मेरा एक मुसलमान मित्र १० वर्ष के अन्दर अन्दर इस प्रथा का अन्त कर देगा। उसका पिता एक प्रसिद्ध मुसलमान नेता है। उसके लड़कों का इस प्रथा को हटाने का उदाहरण लिखना ही पर्याप्त होगा। उसका एक लड़का २६ वर्ष का है उसकी ... ने ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे मुसलमान दोस्त ने कहा---- "पिता जी अब भी हमसे हमारी बीवियों के साथ पर्दा रखने को कहते हैं। परन्तु ऐसा नहीं होगा। १० वर्ष के अन्दर २ हम इस प्रथा को हटा देंगे इसके बाद इसका अंत हो जावेगा।" उसने दूसरी बात कही--"मेरी शादी १६ वर्ष की उम्र में हुई थी। मुसलमानी शरह के अनुकूल मुझे विवाह के दिन से पहले अपनी धर्मपत्नी से नहीं मिलने दिया गया। इसके बाद मैं विवाह के अवसर पर उससे मिला परन्तु उससे मेरा प्रेम विवाह के बाद हुआ। शायद इस तरह की बातों को आप नहीं जानेंगे। परन्तु एक बात निश्चित है कि मेरे लड़के २० वर्ष से पूर्व कभी नहीं शादी करेंगे। और वे स्वयं अपना विवाह करेंगे मैं उनके विवाह का प्रबन्ध नहीं करूंगा।

उसी खानदान के एक सुधारवादी मुसलमान ने इस बात को सर्वथा अपनी इच्छानुकूल किया और उसने एक यूरोपियन महिला से शादी की।

वर्तमान आन्दोलन में भारत की महिलाएं जो भाग ले रही हैं वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जावेगा। पाश्चात्य संसार में इनके कार्य से तुलना करने योग्य कोई चीज़ नहीं है। ये दुबली पतली कमज़ोर स्त्रियां हज़ारों की तादाद में जेलों में भरी हैं। उन जेलों में बन्द हैं जो विषुवत रेखा के आस-पास के प्रदेशों में हैं, जहां बीमारी तथा रोग का प्रबन्ध है। वे जेल अमेरिका की तरह सुन्दर स्थानों में नहीं है।

अपने पुरुषों की भांति दृढ़ होकर इन महिलाओं ने लाठियों की खूब चोटें सही हैं। पुरु-
सवार पुलिस के नीचे कुचले जाने को खड़ी रहीं हैं परन्तु वहां से भागी नहीं।

आप लोग (अमरीका के) विश्वास नहीं करेंगे। अपन छोटे २ कदम रंगीन साड़ियां पहने उन्हों ने गत सितम्बर में बम्बई कौंसिल के चुनाव पर सफलता से पिकेटिंग किया। वे चुनाव स्थान पर लाइन बांध कर खड़ी होगईं। पुलिस चारों ओर से उनकी लाइन तोड़ना चाहती थी। केवल चन्द वोटर ही अन्दर जा सके। सारी महिलाओं के जत्थे हवालात में पहुंचते रहे। परन्तु सायंकाल तक इन रंगीनदार साड़ियों वालियों का बटालियन खड़ा होता रहा। लाठियां पड़ी, मैंने अपने को बचाया सैकड़ों आदमी भागने लगे परन्तु इस हालत में केवल इन स्त्रियों ने ही अपना पैर जमाये रखा। इस समय ऐसा मालूम पड़ता था मानो "जोन आव आर्क" खड़ी हों, घायल व कराहते लोगों को ले जाते हुए देख कर मैं पसीज गया परन्तु महिलाओं ने इस तरह समझा मानो इनके लिये खेल हो रहा हो। इनमें अधिक १६ से २५ वर्ष तक उम्र वाली महिलाएं थी। कुछ लड़कियों ने अभी अविवाहित रह कर बाल विवाह की प्रथा को दूर कर दिया था कुछ बालिकाएं जो अभी १३ से १६ वर्ष तक की होंगी जेलों में सज़ा भुगत रही हैं।

बूढ़ी महिलाओं ने भी चमत्कारिक कार्य कर दिखाया है। कविकोकिला श्री सरोजनी नायडू ६ मास की सजा भुगत रही हैं। आपने महात्मा गांधी के बाद धरसाने के नमक डिपो पर धावा बोला था! आपकी अवस्था ५१ वर्ष की है बम्बई वार कौंसिल की श्रीमती हंसा मेहता ६ मास की सजा काट रही है। श्रीमती मेहता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैज्ञानिक करामात

मशीन का बैङ्क

न्यूयार्क के एक कारखाने ने अपने कर्मचारियों का रुपया जमा करने की सुविधा के लिए एक मशीन बनाई है। जिसे रु० जमा करना होता है वह रुपये की रकम को थैली वा लिफाफे के भीतर डालकर उस मशीन में रख देता है, मशीन स्वयं रुपयों की रसीद दे देती है और रुपयों को जहाँ जाना चाहिए पहुंचा देती है। रुपया जमा करने वाला रसीद लेकर बैंक के पास जाता है और उस बैंक से किताब विना उज्र मिल जाती है।

इस अद्भुत मशीन के प्रचार से रुपये जमा करने वाले अनेक झंझटों से बच जायेंगे। साथ ही साथ बैंक कर्मचारियों को खुशामद की तकलीफ भी न उठानी पड़ेगी। समय की बचत भी होगी।

टेलीफोन से स्वभाव की परीक्षा

मनुष्य के स्वभाव को परखने के लिए वैज्ञानिकों ने अनेक तरीके ढूंढ निकाले हैं। मनुष्य की ढीली ढाली पोशाक, उसकी अस्तव्यस्त चाल, उसकी बातों का चढ़ाव-उतार उसकी लेखन शैली, अक्षरों का गठन आदि में मनुष्य के भीतरी स्वभाव की छाया स्पष्टता से दीखने लगती है। कुछ महाशय 'टेलीफोन, से ही लोगों के स्वभाव की परीक्षा करने लगे हैं। कई व्यक्तियों की आदत है कि जब उनका एक हाथ 'टेलीफोन, पर रहता है तो दूसरा पेंसिल से कुछ लिखता रहता है, कोई उँगली इधर-उधर दौड़ाया करते हैं! यदि मनुष्य बारीकी से 'टेलीफोन, पर खड़े व्यक्ति के रिक्त हाथ की हलचल को देखता रहे तो उसे उस व्यक्ति के स्वभाव का पता सहज ही चल जायगा।

हवाईजहाज में नवीनता

एक यूरोपीय वैज्ञानिक ने एक ऐसे यन्त्र का आविष्कार किया है, जिसके द्वारा हवाई जहाज में बैठा हुआ आदमी चार सौ मील तक की चीजों को देख सकेगा। कहते हैं, कि उक्त यन्त्र हवाई जहाज के केबिन के पास के एक सुराख में लगाया जायेगा, जिसके द्वारा दूर की वस्तुओं को देख कर देश के जहाज-स्टेशनों में खबर भी दी जा सकेगी। इस आविष्कार से युद्ध में भी बहुत सहायता मिलेगी।

पिता सर मनुभाई मेहता जो बीकानेर के दिवान हैं, आप गोलमेज़ के रजवाड़ों के प्रतिनिधियों में से एक हैं। मेरी श्री० मेहता के जेल जाने से दो दिन पहले बातें हुईं। आपने कहा था कि मैं जेल जाना चाहती हूँ ऐसा ही हुआ भी।

मैं एक दिन बम्बई के पुलिस कमिश्नर से बातें कर रहा था मैंने कहा:—

"वह एक कमज़ोर दुबली पतली महिला थी, मैं नहीं समझता कि वह किस तरह जेल में दिन बिता रही होगी?„ पुलिस कमिश्नर ने कहा:—मैंने भी पहले ऐसा ही सोचा था पर मैंने उसे बड़ा खतरनाक पाया! बिलकुल खतरनाक!! इस लिये मैंने उसे गिरफ्तार किया। मैंने उससे कुछ कहा, पर वह बड़ी निर्दई थी। उसने कहा—"यह महिलायें ही हैं जो आन्दोलन को इतना बढ़ा रही हैं। पुलिस के लिए दमन करना मुश्किल हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Arya Samajists' Gratitude To South Indian Scholar.

A correspondent writes:—

After the usual programme commencing with singing of *bhajans* and ending with the chanting of *shantipath* the members and sympathisers of the local Arya Samaj present at the weekly meeting on 1-11-30 took up for consideration the question of thanking Rao Saheb C. V. Krishnaswamy Aiyar. the District and Sessions Judge of Rajamundry, for his just appreciation of the work of the Arya Samaj in restoring the Veda to its high position in national life, in the course of his inaugural address as chairman of the Inter-Religious Conference held at Coconada on the 24th ultimo.

The President of the Samaj, Mr. R. K. Vasudev Mudaliar, retired Engineer, occupied the chair.

Mr. Baji Krishna Rao, B. A., B. L. ex-President of the Samaj, moved the following resolution:—

Resolution 1.—"This meeting of members and sympathisers of the Secunderabad Deccan Arya Samaj places on record its profound gratitude to Rao Saheb C. V. Krishnaswamy Aiyar, the District and Sessions Judge of Rajamundry, for declaring, in the course of the address delivered by him as chairman of the Inter-Religious conference held at Coconada on the 24th October 1930, that it was the Arya Samaj that had restord the Veda to its high position in national life in modern times."

Mr. V. S. Vishweshwar Rao Mudaliar, the Secretary of the Samaj, seconded the proposition and it was carried unanimously.

After the above resolution was passed the following two resolutions were moved from the chair and carried unanimously.

Resolution II:—This meeting feels particularly gratified at the said declaration as it was made by a non-Arya Samajist South Indian Brahmin of deep culture and high status."

Resolution III:—Resolved that copies of the above resolutions be forwarded to Rao Saheb C. V. Krishnaswamy Aiyar, and to the Press.

—::※::—

बिजली का घोड़ा

प्रेसिडेंट कुलोज ने एक अनोखा घोड़ा बनाया है जो बिजली के द्वारा चलता है। घोड़े के शिर पर उसे चलाने का पेंच लगा रहता है। उसी से आगे, पीछे ऊपर नीचे, सभी ओर की चाल उत्पन्न को जा सकती हैं। चढ़ने वाला सरपट भी ले जा सकता है और दुलकी भी। जान पड़ता है भविष्य में विज्ञान के प्रभाव से घास और चना वाले घोड़ों की आवश्यकता नहीं रह जायगी।

—::※::—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-समालोचन

— ::※:: —

Vedic Tenets

It is a booklet in English by Swami Mangalanand Pury Arya Samaj Cawnpur Itgives succenct form some principal doctrines that the Vedas inculcate accordingto the Arya Samaj.

God, soul, matter, law of Karma, marriage, Varnashrama, science of Government, the problem of depressed classes reincarnation, salvation and some others have been touched and explained in a lucid way. Who was Rishi Dayananda ? What is the Arya Smaj ? Why sould one be an Arya Smajist ? have been briefly discussed here.

The tract is of much Value. No student of English who wants to aquaint himself or herself with a faithful version of our transcendental religion claiming to be an universal faith should remain without it.

The get up and the paper are nice and the price is moderate being only annas four Available from the author.

Idolatory Non Vedic

Is another small tract in English by Swami Manglanand Pury. The author relied upon Various easternwestern authors to prove that the Vedas have no support for idolatory. He comes to argue that. the real origin of the custom lies in christian sources.

The brochure is instructive and interesting and much of its value lies in the quotations. The earnest students of religions will find much advantages in it. The price is 4 Pice only.

'भावना'—लेखक श्री० स्वामी आनन्द भिक्षु सरस्वती, प्रकाशक भगवानद स केला, भारतीय ग्रन्थमाला वृन्दाबन। पृष्ठ संख्या २८+२२४, मूल्य ॥=) आना।

'भावना' पढ़ी !, 'भावना' क्या है ? भारतीय 'भावना-जगत्, के सजीव चित्र हैं। नाना विध अत्यन्त भावों को सुन्दर स्वच्छ भाषा के वस्त्र पहिना कर मानों मिट्टी के पुतलों में जान फूंक दी है। पहिले पुस्तक का नाम देखकर समझा था स्यात् 'छायावाद, होगा। परन्तु यह तो 'मूलवाद, से भी दो क़दम आगे रहे। इसमें कल्पना और स्वानुभाव का अद्भुत सम्मिश्रण है। यदि 'विवेक, और 'बलिदान, में लेखक ने आत्म चरित, की झाँकी दिखाई है, तो 'त्याग, में भावुकता की अपूर्व उड़ान है। आसक्ति और त्याग तथा भोग और विराग का विचित्र वर्णन है। 'भिक्षु, अपना अदृश्य हाथ पसार कर कह रहा है:—

"………योग को लेकर मैं क्या करूंगा। मुझे तो वेदना चाहिए। तुम्हारी बिरह चाहिए उनके लिए देव ! मैं तुम्हें भी त्याग सकता हूँ। हँसते हुए और सहर्ष……× × × तुम मुझे वेदना दो……वह वेदना जो तुम्हें भी अपनी छाया में विलीन कर लें।………अपनी बिरह दो—वह विरह जिस की सीमा के प्रत्येक छोटे से-छोटे अंश में तुम्हारा मिलना…विराट और विस्मृतमय मिलन हो।," —'भावना, पृष्ठ १७

दैहिक और दैवीय प्रेम का क्या अदृश्य एकीकरण है ! 'भिक्षु, की 'भावना, में भक्त सहज ही अवलोक में भगवदनुभव करता है………'भावना' विचार-संगीत, की वह मधुर-तान है, जिसमें मस्त हो गायक 'सुध-बुध भूल जाता है।………

ऐसी उत्तम 'भावना', का सर्वत्र प्रचार हो, यही 'कामना, है !

मद्रास — केशवदेव ज्ञानी
२८।११।३० — सिद्धान्तालङ्कार

—::※::—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा अक्टूबर मास का प्रचार कार्य्य

—:※:—

इस मास में प्रशंसित सभा ने देहली, बुलन्दशहर, मेरठ, हापुड़, रोहतक, संगरुर, डिब्रूगढ़ भिलाई, दुर्ग, रामपुर, टुकड़ा, खुरसीपार, पाटियां आदि आदि विविध स्थानों पर दलितों के मध्य प्रचार कार्य्य किया। दीपावलि आदि के अवसर पर जुए के विरुद्ध प्रचार किया। मद्य-पान, मांस-भक्षण आदि की कुरीतियों को दूर करने का यत्न किया। मर्दुम-शुमारी के सिलसिले में भी प्रचार किया।

कान्फ्रेन्स

माहुरा (रोहतक), कोटा, तथा डिब्रूगढ़ में ३ सफल कान्फ्रेन्स हुई जिन में दलित-जाति के सुधार सम्बन्धी अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास हुए।

रक्षा कार्य्य

(१) एक मेहतर अपनी स्त्री को साथ लेकर गुजरात (पंजाब) रोजगार के लिए गया था। नारिदाबाद की पुलीस ने उन्हें गिरफ़्तार कर लिया। सभा के एक प्रचारक पैरवी के लिए भेजे गए। वे दोनों जमानत पर छुटे है। मुक़दमा चल रहा है।

(२) तुर्काबाद रायपुर सी. पी. में एक वर्ष हुआ एक महिला मुसलमान हो गई थी, उसे शुद्ध करा कर उसके घर वालों के सुपुर्द किया।

(३) मालगढ़ (बुलन्दशहर) में दलित भाइयों के लिए डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की ओर से एक कुंवां बनवाया।

श्रद्धानन्द—नगरी

में मकानात बन रहे हैं। जो आदमी मकान लेना चाहें वे सभा के दफ़्तर में जाकर पूछ सक्ते हैं।

शिक्षा

इस समय १५ पाठशालाएँ हैं। जिसमें ६५० लड़के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इन पर ६७५) मासिक व्यय सभा का हो रहा है।

—:※:—

आगामी जन-संख्या (मर्दुम-शुमारी के सम्बन्ध में सार्वदेशिक अन्तरङ्गसभा

२३—११—३० का महत्वपूर्ण प्रस्ताव सं० ६

विशेष रूप से पेश होकर निश्चय हुआ कि सार्वदेशिक सभा की ओर से सेन्सस कमिश्नर तथा भारत सरकार को लिखा जाय कि वैदिक-सिद्धान्तों के अनुसार जिनका प्रचार आर्यसमाज करता है किसी आर्य की आर्यसमाज में प्रवेश करने पर कोई जाति (Caste) नहीं रहती, चाहे वह प्रचलित रीति के अनुसार हिन्दुओं की किसी जाति में पैदा हुआ हो। इसलिए उन लोगों की जो अपने को आर्य लिखाते हैं कोई जाति नहीं लिखी जा सकती, अतः इसके अनुसार ही सारे भारतवर्ष में गणना कर्म्मचारियों को सूचित किया जावे कि वे कार्य करें और किसी भी आर्य के जाति न बतलाने पर जाति के पूछने का आग्रह न करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद और—पशुबध

—::꣸::—

१३ नवम्बर सन् १९३० के आर्य-मित्र में महात्मागांधी का यज्ञ-विषयक लेख उद्धृत हुआ है। गान्धी जी ने उस लेख में लिखा है कि 'वेदादि में अश्व, गाय इत्यादि की बलि चढ़ाने का उल्लेख मिलता है। हम उसका खंडन करते हैं। सत्य और अहिंसा की तराजू में पशु हिंसा के अर्थ में, होम या यज्ञ चढ़ नहीं सकते।' इत्यादि। महात्मा गान्धी ने आगे लिखा है कि "ऐसे अर्थों को शोध करने की अपनी अयोग्यता को हम स्वीकार करते हैं।" महात्मा गान्धी के इस लेख से वेदों के सम्बन्ध में किसी को सन्देह न हो इसलिये हम घोषणा करते हैं कि वेदादिसत् शास्त्रों में पशुबध का विधान नहीं है।

कुछेक पश्चिमी विद्वानों ने पौराणिक और बाममार्गी टीकाकार महीधर आदि की टीकाओं के आधार पर और कहीं उन्होंने स्वतन्त्रता से वेद में हिंसा (पशुबध) का विधान किया है। परन्तु चाहे तो बाममार्गी टीकाकार हों और चाहे पश्चिमी लेखक दोनों ने वेद के दृष्टिकोण को समझने का यत्न नहीं किया। वेद में (देखो यजुर्वेद का पहला ही मन्त्र) गौ को "अघन्या" [कभी न मारने योग्य] कहा गया है। फिर उसी वेद में गाय के बध का विधान किस प्रकार हो सकता है? ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ऋषि दयानन्द ने इस बात को भली भांति स्पष्ट कर दिया है। म० गान्धी को इन्हीं पश्चिमी लेखकों के लेखों से उपर्युक्त भ्रम हुआ प्रतीत होता है। जो कुछ हो, यह सिद्धान्त निर्विवाद है कि वेद यज्ञ में पशुबध के पोषक नहीं। महात्मा गान्धी की अहिंसा में तो रोगी पशु का बध करना शामिल भी हो सकता है, परन्तु वेदों की अहिंसा इससे बहुत ऊंची है। इसलिए किसी को इस भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए कि वेदों में पशुबध का विधान है।

नारायण स्वामी

—::꣸::—

रंगीला—ऋषि

—::꣸::—

इस नाम की एक छोटी-सी पुस्तक पंडित माधवाचार्य्य शास्त्री महोपदेशक सनातन-धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा सम्पादित और प्रकाशित तथा पं० ब्रह्मदेव शास्त्री द्वारा 'ब्रह्म प्रेस' इटावा से मुद्रित हुई है।

पुस्तक का विषय और लेखक की मनोवृत्ति का पता पुस्तक के नाम से ही ज्ञात हो सकता है। इसका विषय श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व है और इस व्यक्तित्व पर जो लाञ्छित, घृणित, और मिथ्या दोषारोपण हुआ है, उससे अनुमान किया जा सकता है कि लेखक की प्रेरणा कितनी वीभत्स और कितनी कुत्सित है—विशेषतया ऐसे अवसर पर जब कि चारों ओर उदारता, सद्भाव, प्रेम, सहनशीलता और संगठन की आवश्यक्ता है। एक ज़िम्मेदार सोसाइटी के एक ज़िम्मेदार महोपदेशक की लेखनी से ऐसी अनावश्यक त्याज्य, पक्षपात और ईर्ष्यापूर्ण पुस्तक का लिखा जाना एक सभ्य-समुदाय के लिए कम आश्चर्य की बात नहीं!! हम इस गन्दी पुस्तक के कुछ उद्धरण देकर अपनी लेखनी को अपवित्र नहीं करना चाहते थे, परन्तु पाठकों के सम्मुख दो एक उदाहरणों को रखना आवश्यक जान पड़ता है। ऋषि दयानन्द के कुल पर झूठे और व्यर्थ आक्षेपों के साथ-साथ उनके चरित्र, स्वभाव और व्यक्तित्व पर भी अक्षम्य अपराध लगाने की चेष्टा की है। देखिए:—

पृष्ठ १५

× × × दयानन्द के पिता नाच, गान का पेशा करते थे।·······

पृष्ठ १८—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

......शिव भजन (मूलशंकर) का विवाह रचा जाने लगा था, परन्तु यहां तो पूर्व ही विवाह का बखेड़ा समझकर उमरभर निर्वाध आनन्द लूटने की स्कीम तैयार हो चुकी थी। दुर्व्यसन की हद हो गई ! पृष्ठ १६

× × × दयानन्द अवश्य कोई ऐसा कुकर्म करके घर से भागे थे जिससे मृत्यु पर्यन्त उन्होंने अपना असली, पता छिपाने का यत्न किया ! पृष्ठ ३०

बालब्रह्मचारी कहे जाने वाले पुरुष के पास ऐसी पलङ्गतोड़ अभ्रक का क्या प्रयोजन ? जिसकी एक चावल भर खुराक से पुरुष घन्टों......परन्तु...... ...पात......'
पृष्ठ ३९

........डाक्टर टीवो साहब कहने लगे कि हमतो स्वामी जी महाराज को बड़ा पंडित जानते थे, पर अब उनके मनुष्य होने में भी सन्देह होता है।

हम यू० पी०तथा पंजाब सरकारसे सानुरोध निवेदन करेंगे कि वे ऐसे कलुषित साहित्य के प्रचार को रोकें तथा उनके प्रवर्तकों को उचित दण्ड देने की व्यवस्था करें। कारण, ऐसी पुस्तको तथा पत्रों के फल स्वरूप ही देश का वायु मण्डल दूषित हो रहा है। जिसका परिणाम राष्ट्र और राज्य-सत्ता दोनों के लिए भयंकर है।

\+ \+ \+

—::*::—

'भक्ति-प्रकाश' का 'रहस्य'

—:-०-:—

गुरुकुल वृन्दाबन के विगत अधिवेशन पर श्री स्वा० सत्यानन्द जी महाराज के 'राम नाम माहमा,—पंथ का विरोध सूचक प्रस्ताव उपस्थित होने पर मुझे आश्चर्य हुआकि, इस प्रश्न का निबटारा अभी तक क्यों नहीं हुआ। हम तो समझे बैठे थे कि, पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा इस सम्बन्ध में अपना कर्तव्य पालन कर चुकी होगी, किन्तु काफी दिन व्यतीत हो जाने पर भी अभी तक उक्त सभा ने इस सम्बन्ध में कुछ भी कार्यवाही नहीं की। आर्य-जगत् में आये दिन इस बात पर लोग प्रश्न किया करते हैं जिनका समाधान वर्तमान परिस्थिति में कठिन ही नहीं असम्भव सा हो गया है। चाहिये तो यह था कि पंजाब प्रतिनिधि सभा इस प्रकार का प्रश्न उठने के पूर्व ही स्वामी सत्यानन्द जी की 'भक्ति प्रकाश' नामक पुस्तक को आर्य सिद्धान्तो के प्रतिकूल घोषित कर देती, किन्तु इतना आन्दोलन होने और सुझाये जाने पर भी सभा कान में तेल डाले पड़ी हुई है, यह अवश्य खेद का विषय है।

यदि इस प्रश्न का सम्बन्ध आर्य सिद्धान्तो से होता और स्थान स्थान पर आर्य पुरुषों द्वारा इस पर मुझ से प्रश्न न किये गये होते तो मैं कदाचित् इस प्रश्न की ओर इतना मनोयोग न दे सकता; किन्तु अवस्था बिल्कुल विपरीत हो चली है और बहुत सम्भव है कि निकट भविष्य में ही हमारे अन्य धर्मावलम्बी भाई भी स्वामी सत्यानन्द जी के कंठी-पंथी चेले चेलियों की चर्चा करने लगे और आर्य समाज पर व्यर्थ ही कलंक का टीका लगे इसलिये यह आवश्यक है कि जिस पन्थवाद और 'गुरुडम, के विरुद्ध ही आर्यसमाज का जन्म हुआ है उसी का पोषण एक आर्य संन्यासी द्वारा होने से रोका जाय और इस प्रकार के उत्तरदायित्व शून्य या पाखन्डवाद से आर्य समाज को प्रथक रक्खा जाय।

आशा है कि पंजाब प्रतिनिधि सभा और सार्वदेशिक सभा इस परमावश्यक विषय पर अवश्य ध्यान देंगी। —हरिश्चन्द्र
अजमेर।

———::*———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ दुर्घटना ❋

'यहाँ जो काम सिखाया जाता है, वह तुम सीख सकोगी ?'

'ऐसा कौन-सा काम सिखाया जाता है, जो मैं न सीख सकूंगी !'

'यहां !.......यहां ऐसे कितने ही काम हैं, जो हर एक सहसा नहीं सीख सकता !'

'एकाध का नाम तो लो !'

'एकाध का नहीं, मैं सभी का नाम ले सकती हूं, पर......बोलो, तुम करोगी ?'

'करने योग्य होगा तो करूंगी !'

'करने योग्य क्यों नहीं ! प्रायः बहुत-सी बहनें करती ही हैं या करने पर बाध्य की जाती हैं—तनिक मुस्कराकर उसने कहा—

"क्या ? बाध्य की जाती हैं !! जबरदस्ती काम कराया जाता है" — आश्चर्य से विस्मित हो कर उसने पूछा—

"हां, यदि कोई खुशी से राजी नहीं होता, तो........"

"ज़बरदस्ती ! तो यह विधवा आश्रम है या जेलखाना !"

कुछ ही समझ लीजिये, पर यहां होता ऐसा ही है !"

'साफ़-साफ़ बोलो बहन ! मैं तुम्हारी इन पहेलियों को नहीं बूझ सकती !

'अच्छा है जब तक न बूझो तभी तक सही !'

'बहन' इस सही-वही की सही नहीं । साफ-साफ बताओ यहां क्या-क्या सिखलाया जाता है,

'तो क्या बतलाना ही होगा ! सुनोगी ?,

'सुनने के लिए ही बैठी हूं !

अच्छा तो सुनो ! यहां सिखलाया जाता है, व्यभिचार, दग़ाबाज़ी, झूठ फरेब, विश्वासघात आश्रम के धर्मात्मा और देश-भक्त अधिकारियों की प्रसन्नता के लिए अपनी आत्मा और शरीर को बेचना । कहो क्या तुम यह काम कर सकोगी ??

'ऐसा !! यहां ऐसा होता है बहन—कांपते हुए स्वर में ! मुझे विश्वास नहीं होता ! तुम कहीं मज़ाक तो नहीं कर रही हो !'

'मज़ाक ! तुम इसे मज़ाक समझती हो तो समझो ! पर मैं मज़ाक नहीं कर रही ! यह आश्रम अब आश्रम कहलाने योग्य नहीं रहे । यह अधर्म और पाप के अड्डे बन गए हैं ! अभी तुम्हें यहां आए हुए केवल दो ही दिन हुए हैं । दो चार दिन और होने दो, फिर तुम्हें आप ही पता चल जायगा कि मैं ने मज़ाक किया था या क्या?'

'जब ऐसी बात है तो तुम यहां क्यों रहती हो ?'

'कहां जाऊं ? मेरा कहीं ठिकाना भी हो । मैं तो आज ही यहां से निकल जाने को तैयार हूं ।'

'तब तो मैं भी अब यहां एकदिन न ठहरूंगी !'

'कहां जाओगी'

'कहीं जाऊंगी, पर यहां नहीं रहूंगी !'

क्या तुम यहां से अब बिना पास किए हुए ही चली जाओगी ?

पास कैसा ? क्या यहां कोई परीक्षा भी होती है ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां, होती है, और तुम-जैसी सुन्दर नवजवान स्त्री की तो अवश्य ही होती है। जो इस परीक्षा में सब से औवल नम्बर से पास होता है, उसकी बड़ी इज़्ज़त की जाती है। यह जो गोरी-गोरी सी लड़की दुर्गावती आजदोपहर को तुम्हारे पास आई थी, यहां की परीक्षा पास की हुई प्रतिष्ठित स्नातिका है। मंत्री-प्रधान आदि सभी इसको बहुत मानते हैं। आश्रम की मैनेजरा तक इससे दबती है। एक बार इसने मैनेजरा की तनिक शिकायत कर दी थी; मंत्री जी उसे आश्रम से निकालने को तैयार हो गए थे। यह अब तक तीन-चार दफे बेची जा चुकी है। रुप और आयु को देख कर लोग इस पर लट्टू हो जाते हैं और मुंह मांगा दाम चुकाकर इसे ले जाते हैं, पर यह है बहुत छटी हुई। जहां जाती है, महीने-दो-महीने रहकर वहां से किसी-न-किसी प्रकार चम्पत हो आती है, और आश्रम वाले नाम बदल-बदल कर इसको सम्मान पूर्वक फिर रख लेते हैं। यहां की परिभाषा में जो स्त्री आचार-भ्रष्ट होती है और पर-पुरुष से उसे परहेज नहीं होता, वह पास समझी जाती है। परीक्षक प्रायः आश्रम के संचालक और कार्य कर्त्ता होते हैं या उनके कोई इष्ट मित्र! बोलो परीक्षा में तुम पास होना चाहती हो! मुझे इसी काम के लिए तुम्हारे पास छोड़ा गया है। मेरे द्वारा अब तक कितनी ही बहनों का धर्म-भ्रष्ट हो चुका है, पर अब इस बार तुम्हारी भोली सूरत और सरल स्वभाव देख कर न-जाने मेरा हृदय क्यों इस पाप को करते हुये इतना दहल उठा और मैंने तुम्हें सावधान करने के विचार से यह गुप्त बात बता दी।

बहन यशोदा! मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूंगी। तुम ने मुझे केवल सावधान ही नहीं किया है, बल्कि सच पूछो तो मेरा जीवन उद्धार कर दिया है। अब मैं सदा के लिए होशियार हो गई हूं।

इतने में आश्रम की मैनेजरा ने सामने के कमरे से पुकार कर कहा, यशोदा! तुम्हें और राजरानी दोनों को मंत्री जी बुला रहे हैं।

यशोदा चली गई, पर राजरानी वहीं अपनी कोठरी में बैठी हुई उधेर-बुन करती रही। और १० बजे रात को जब आश्रम में हाज़री ली गई तो यशोदा और राजरानी दोनों अनुपस्थित मिलीं।

—हरिश्चन्द्र,

* ईश-बन्दना *

(ले०—श्रीमती पंडिता प्रेमकली देवी जी वानप्रस्थ)

दीन दयाल कहावत हो प्रभू, आरत के दुःख नाशन हारे।
योगी यती सब गावत हैं गुण, ध्यानही ओम के नाम प्यारे॥
ओम का धनुष बनाय करें जय, प्राण का बाण चढ़ावत न्यारे।
वेधत हैं परमातम को निज, काम व क्रोध व मोह बिखारे॥
ऐसी कृपा करके मुझपै प्रभू, दीजै यही बरदान सुधारे।
ध्याऊं तुझे प्रभू, गाऊं तुझे मैं मानू तुझे ऊरु जानू तुझे ही॥
'प्रेम, को शक्ति प्रदान करो बिचरु मैं सदा निर्भय जग सारे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❋ सम्पादकीय ❋

आर्य्य समाज भुसावर का नगर कीर्तन

रियासत भरतपुर में भुसावर एक अच्छा खासा कसबा है-वहां आर्य्य समाज बहुत दिनों से है और वर्षों से अपना उत्सव और नगर कीर्तन करता चला आता था। कदाचित दो वर्ष या कुछ अधिक हुये जब रियासत के एक मुसलमान सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस ने नगर कीर्तन का रास्ता नगर के मुसलमानों की इच्छा से बदल दिया। आर्य्य समाज के अधिकारियों ने इस कार्य्य को अपने चिरस्थिर अधिकार में अनुचित हस्ताक्षेप समझकर प्रोटेस्ट के तौर पर उत्सव और नगर कीर्तन दोनों बन्द कर दिये। राज्य के अधिकारियों से इस सम्बन्ध में बात चीत और लिखा पढ़ी होती रही। अब अन्त में राज्य के कर्मचारियों ने एक उल्टा हुक्म जारी किया कि आर्य और मुसलमान दोनों के नगर कीर्तन और ताज़िये बन्द किये जावें। राज्य का कर्तव्य था कि दोनों फ़रीक़ को अपना अपना काम करने की आज्ञा देकर आवश्यक प्रबन्ध करता, परन्तु उसने उपेक्षा बुद्धि से काम लेकर अपनी समस्त प्रजा को ही असन्तुष्ट करना चाहा। तंग आकर आदमी क्या नहीं करता इसी नियम के अनुसार भुसावर के आर्यों ने राज्य के बिरुद्ध सत्याग्रह करना निश्चय किया और आर्य रक्षा समिति से सहायता चाही। चूंकि राजस्थान की सभा ने जिस से भुसावर समाज सम्बन्धित है, अभी तक अपना कोई मन्तव्य सत्याग्रह करने के सम्बन्ध में रक्षा समिति की सेवा में भेजा नहीं है, इसलिये समिति सत्याग्रह तो अभी करा नहीं सकी थी। परन्तु उसने अपने मन्त्री स्वामी अनन्दभिक्षु जी सरस्वती को भरतपुर भेजा है कि वे वहां जाकर परस्थिति का अवलोकन करें और राज्य कर्मचारियों को भी अपना मत बदलने की सलाह दें, जिससे यह मामला विकराल रूप न धारण करे और सुगमता से तै होजावे—

आर्य्य समाज बहादुराबाद और अंगरेजी फ़ौज का अत्याचार

नवम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में बहादराबाद की दुर्घटना के संबन्ध में हम गताङ्क के सम्पादकीय टिप्पणी में प्रकाश डाल चुके हैं। तहक़ीक़ात करने पर जो विस्तृत समाचार मिले उसीके आधार पर इस घटना के सम्बन्ध में प्रकाश डाल देना उचित समझते हैं। गोरखा राइफ़ल नं०२।२ देहरादून के कुछेक गोरखा सिपाही अपने अंगरेज अफ़सर कपतान गफ़ की संरक्षता में बहादुराबाद (जि० सहारनपुर) पहुँचे और गोरखाओं ने कप्तान के सम्मुख ही पं० रामलोल शर्मा उपमंत्री आर्य समाज बहादुराबाद और चौ० घंश्यामसिंह प्रधान आर्य समाज रुहालकी जि० सहारनपुर को बिना किसी प्रकार की उत्तेजना देने के अमानुषिक रीति से निर्दयता और क्रूरता के साथ मारा, उनके शरीरों को चूना लगाया और गंगा की नहर में ढ़केल दिया। आर्य समाज मन्दिर में लगा हुआ "ओ३म्" के पवित्र झंडे को काट कर गिरा दिया और आर्य समाज के काग़ज़ों को जला दिया। यह एक सभ्य सरकार की सभ्य फ़ौज के करतूत हैं। इस ख़बर के फैलते ही समस्त आर्य संसार में असन्तोष और इन अत्याचार करने वालों की कुकृत्य के लिये घृणा के भाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

112933
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैले और फैलते जा रहे हैं। हम इसी आशा से, कि इन दुष्कृत्यों का सम्बन्ध केवल गोरखा सिपाहियों और उनके कप्तान से है, भारतीय तथा स्थानिक सरकार का ध्यान दिलाते हैं कि शीघ्र से शीघ्र इस मामलेकी जांच करके इन अपराधियों को शिक्षाप्रद दण्ड देवे और प्रबन्ध करे कि जिससे इस प्रकार के दुष्कृत्य दुहराये न जावें। प्रसन्नता है कि सार्वदेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त इस सम्बन्ध में उदासीन नहीं है।

आगामी जन संख्या

सार्वदेशिक सभा ने भारत की गवर्नमेन्ट तथा मरदुमशुमारी के कमिश्नर को लिखा था कि जब कोई हिन्दू, मुसलमान या ईसाई आर्य समाज में प्रविष्ट होकर वैदिक धर्म की दीक्षा लेता है, तब इसकी कोई पुरानी जाति ब्राह्मण, क्षत्री या मुग़ल, पठान आदि बाक़ी नहीं रहती और स्वयं आर्य समाज इन जन्म की जातियों को नहीं मानता इसलिये जनसंख्या करने वालों को हिदायत की जावे कि कोई आर्य जब जाति न बतलावे तो इसके पूछने का आग्रह न करें। सन्तोष की बात है कि जनसंख्या विभाग के कमिश्नर ने सभा के इस मन्तव्य को स्वीकार कर लिया है और आवश्यक हिदायत शुमारकुनिन्दों को जारी करदी है। अब किसी भी आर्य की जन्मपरक जाति लिखाने की ज़रुरत नहीं है।

आगामि मनुष्य गणना में आर्य्यों को अपने को आर्य्य लिखवाना चाहिये या हिन्दू, यह प्रश्न कई बार गत सप्ताहों में उठाया गया। आर्य्यों को हिन्दू लिखाने के समर्थकों को भय था कि आर्यों की संख्या प्रथक होने से हिन्दुओं की संख्या कुछ कम होकर उन की राजनैतिक हानि होगी। आर्य्यसमाज किसी प्रकार का राजनैतिक अधिकार प्रथक नहीं चाहता, राजनैतिक उद्देश्य और कार्य्यों के लिये गणना के बाद यदि आर्य्यों की कुल संख्या हिन्दुओं में शामिल करली जावे तो इस में आर्य्यों को कोई आपत्ति नहीं हो सकती इसीलिये सार्वदेशिक सभा ने समस्त आर्य्यों को प्रान्तिक सभाओं द्वारा अनुमति दी थी कि वे सब अपने को आर्य्य लिखावें। ज्ञात हुआ है कि प्रशंसित सभा के इस मन्तव्य के अनुकूल जन संख्या विभाग के कमिश्नर ने उद्घोषित कर दिया है कि, गणना के बाद आर्य्यों के टोटल को हिन्दुओं के टोटल में शामिल कर दिया जावेगा। इसलिये अब उन महानुभावों को भी जिन्हें हिन्दुत्व में कमी आने का भय लगा हुवा था, चिन्तित नहीं होना चाहिये और प्रत्येक आर्य और आर्यसमाज के मन्तव्य मानने वालों को आम तौर से अपने को आर्य लिखवाना चाहिये।

—:❀:—

मौलाना मुहम्मदअली

—:o❀o:—

गोलमेज कान्फ्रेन्स के लिये लंडन पहुँचने पर मौलाना मुहम्मदअली ने एक पत्र के संवाददाता से कहा था कि "मैं या तो भारत के लिए स्वतन्त्रता लेकर जाउंगा या मेरी कब्र यहीं (इङ्गलैंड में) बनेगी। पहली बात तो ठीक नहीं हुई परन्तु दूसरी बात दुःख है कि ठीक होगई। ४ जनवरी को हृदय रोग से मौलाना की मृत्यु हो गई। मौलाना ने पिछले दस सालों में अनेक रंग बदले और अब अन्त में वे संसार के मुसलमानों की एक जाति बनाने के पक्षपाती थे। जो कुछ हो उन को मृत्यु से देश की हानि ही हुई। हम मौलाना साहिब की धर्मपत्नी और अन्य कुटुंबियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियों में जागृति

—:०:०:—

बर्तमान आन्दोलन में स्त्री जाति में जो जागृति हुई उससे स्पष्ट हो गया कि आर्य्यसमाज ने जो पिछले ५० वर्षों में स्त्रियों के सुधार और अनेक बड़े विद्यालय और सैकड़ों पाठशालाएं खोल कर उन की शिक्षा में जो धन और पुरुषार्थ व्यय किया था वह फल लाने लगा। परन्तु अवभी कहीं कहीं और तो और आर्य्य महिलायें भी आर्य्यसमाजों के उत्सवों के समय परदे में बन्द देखी जाती हैं। उस दिन आर्य्यसमाज बहराइच के वार्षिकोत्सवमें श्री पूज्य म०नारायणस्वामीजी को देख कर आश्चर्य हुआ कि आर्य महिलायें पिंजड़े में बन्द थीं। प्रसन्नता की बात है कि स्वामी जी ने जब देवियों को चेतावनी दी तो दूसरे दिन न केवल परदा ही हट गया अपितु एक आर्य्य देवी ने वेदी पर आकर व्याख्यान दिया और व्याख्यान में परदे ही के विरुद्ध बातें कहीं। भविष्य में किसी भी आर्यसमाज के उत्सव में देवियों के लिये परदे का प्रबन्ध नहीं होना चाहिये आर्य महिलाओं के लिये यह बड़े अपमान की बात होगी, यदि वे सुधार के मामले में अपनी दूसरी बहनों से पीछे रहें।

—:※:—

एशिया का शिक्षा सम्मेलन

—:०※०:—

गत बड़े दिन की छुट्टियों में यह सम्मेलन भारतीय शिक्षा केन्द्र काशी में संगठित हुआ था सम्मेलन के सभापति कलकत्ता विश्वविद्यालय के महोपाध्याय प्रोफ़ेसर राधाकृष्ण थे। सम्मेलन में चीन, जापान आदि अनेक प्रदेशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। सभापति का भाषण महत्व पूर्ण था उन्होंने शिक्षा के संबंध में भारतीय दृष्टि कोण सम्मेलन के सम्मुख रखते हुए प्रकट किया कि आत्मिकोन्नति के बिना शिक्षा अधूरी है। आगामी सम्मेलन चीन में होगा पं०। मदनमोहन मालवीय भी सम्मेलन के अन्त में शरीक होगये थे। इस प्रकार के सम्मेलन की योजना करने वाले महानुभावों को हम साधुवाद देते हैं। उनका विचार श्रेयस्कर और सराहनीय है।

—:※:—

गुरुकुल महा विद्यालय

वृन्दाबन का महोत्सव

—:※:—

बड़े दिन की छुट्टियों में गुरुकुलोत्सव आशातीत सफलता के साथ समाप्त हुआ। ८ हज़ार के लगभग यात्री बाहर से आये थे, परन्तु पिंडाल में इस से बहुत अधिक श्रोताओं की संख्या होती थीं। विद्या परिषद की दोनों बैठकें सफलता के साथ हुईं।

महिला परिषद की सभानेत्री उत्कल भारती, भारत भूषण श्रीमती डाक्टर कुन्तलकुमारी देवी थी। आपकी पुत्री के अचानक बीमारी के कारण आप उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सकीं। पर आपका छपा हुआ भाषण पहुँच गया था, वह पढ़ा गया। भाषण अत्यन्त मनोहर और भाव पूर्ण था। देवियों पर उसका अच्छा प्रभाव 'पड़ा। सार्वदेशिक' के आगामि अङ्क में हम उसे देने का यत्न करेंगे।

विद्या परिषद् की बैठकमें ब्रह्मचारियों का 'एकेश्वर वाद पर संबाद बड़ा मनोरंजक था। आम तौर से ब्रह्मचारियों के निबन्ध और व्याख्यान अच्छे थे। उत्सव में श्री पूज्य सर्वदानन्द जी, श्री पूज्य महात्मा नारायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी जी, श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रोफेसर रामदेव जी, बाबू पूर्णचन्द्र वकील आगरा आदि के व्याख्यान हुये। चार ब्रह्मचारी स्नातक होकर निकले, जिन में तीन ने आयुर्वेद और चौथे ने सिद्धान्त विषय लिया था। पं० गंगाप्रसाद जी चीफजज का दीक्षान्त भाषण अच्छा और समयके अनुकूल था। प्राचीन स्नातकों के स्वागत के उत्तर में नवीन स्नातकों की ओर से ब्रह्मचारी रत्नाकर ने उत्तरमें जो वक्तृता की, वह बड़ी भाव पूर्ण थी। उसकी वक्तृता ने अनेक पुरुष और स्त्रियों को रुला सा दिया था। अपील में १५ हज़ार के लगभग धन आया जिस में चार हज़ार की एक जायदाद भी है। ऐसी खराब परिस्थिति में गुरुकुलोत्सव का इतना सफलता के साथ होजाना अधिकारियों के पुरुषार्थ और तत्परता का ही फल कहा जा सकता है, और इसके लिये हम श्री पं० घासीराम जी एम० ए० मुख्याधिष्ठाता और उनके सहकारियों को बधाई देते हैं।

कुमायूं के पहाड़ और ईसाई मिशन

शोर पथोरागढ़ से जो समाचार आये हैं उन से विदित होता है कि पहाड़ का वह हिस्सा सब का सब शीघ्र ही ईसाई हो जाने वाला है। थोड़े ही अरसे में ८२ लड़के और १४० लड़कियां मिशन में दाखिल हुई हैं। वर्षों से वहां की इसी प्रकार की हालत हो रही है- आर्यसमाज की ओर से अलमोड़ा में एक अनाथालय खोला गया है अत्यन्त आवश्यकता है कि शोर पिथौरागढ़ की ओर भी एक अनाथालय खोला जावे। यदि कोई सज्जन देश सहस्र धन देने की उदारता दिखलावे तो अलमोड़ा अनाथालय की एक शाखा वहां खोली जा सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकों की सूची

सं० नाम पुस्तक	असली मूल्य	घटाया हुआ मूल्य
१ शताब्दी बृतान्त	१।)	॥)
२ Voice of Arya Varta	॥)	।=)
३ सत्यार्थप्रकाश संस्कृत सजिल्द	२)	२)
सत्यार्थ प्रकाश ,, अ०	२)	१॥।)
४ पर्व पद्धति	॥।)	॥=)
५ आर्य समाज क्या है ?	॥)	॥)
६ दश नियम व्याख्या	।)	≡)
७ भजन भास्कर	॥)	।=)
८ ओंप्रत्यक्ष	॥।)	॥)
९ Truth & Vedas	॥)	।=)
१० Truth Bed Rocks of Aryan Culture	॥=)	॥)
११ Crucifixion by an Eye witness	।=)	।-)
१२ Vedic Teachings	१॥।)	१।)
१३ वैदिक सिद्धान्त सजिल्द	१॥)	१)
वैदिक सिद्धान्त अजिल्द	१॥)	॥।)
१४ विरजानन्द विजय (पद्यमय)	।)	=)
१५ दयानन्द लहरी	-)॥	-)
१६ प्राणायाम विधि	-)	)॥
१७ महर्षि जीवन चरित्र	।)	≡)
१८ दयानन्द ग्रन्थमाला	५)	४)
१९ व्यवहारभानु	=)॥	=)
२० भ्रमोच्छेदन	-)	)॥
२१ भ्रान्ति निवारणम्	=)	-)
२२ शिक्षा पत्री	=)	-)
२३ गोकरुणा निधि	=)	-)॥
२४ वेद विरुद्धमत खण्डन	=)॥	=)
२५ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	१॥)	१।)
२६ संस्कार विधि	॥)	।=)
२७ स्वीकार पत्रम	॥)	।)
२८ पंचयज्ञ महाविधि	-)॥	-)
२९ सत्य धर्म विचार	-)॥	-)
३० काशी शास्त्रार्थ	-)	)॥
३१ आर्य्याभिविनय	।-)	।)
३२ आर्योद्देश्यरत्न माला	)॥	)।
३३ सृष्टि विज्ञान	२)	१॥)
३४ नीति विवेचन	१॥)	१)
३५ आरोग्यता	॥)	।=)
३६ वैदिक जीवन	॥।)	॥)
३७ ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार	॥)	।=)
३८ मुक्ति सोपान	॥=)	॥)
३९ भारतमाता का सन्देश	॥)	।=)
४० बंगला अनुवाद आर्य समाज	।)	=)
४१ वैदिक सन्ध्या रहस्य	-)॥	-)
४२ आनन्द संग्रह	१)	॥।)
४३ पथ प्रदीप	१)	॥)
४४ गृहणी सुधार	॥)	॥)
४५ वैदिक विवाहादर्श	१।)	१)
४६ शुद्धबाल मनुस्मृति	।-)	।)
४७ दृष्टान्त समुच्चय	१॥)	१)
४८ वर्ण व्यवस्था	-)	)॥
४९ अमीरस सार	≡)	=)
५० वैदिक स्वराज्य	॥)	।)
५१ चित्रमय दयानन्द	१।)	॥।)
५२ कुमुदिनी चन्द्र	२)	१॥)
५३ जातीयता	।=)	।)
५४ स्वामी दयानन्द	=)	-)
५५ आरोग्य दिग्दर्शन	।=)	।)
५६ भगवद्गीता	१)	॥)
५७ हिंदु मुसलिम इत्तिहाद (उर्दू)	।)	=)
५८ भावना	॥।=)	॥।)
५९ बाल ब्रह्मचारिणी कुन्तीदेवी राज संस्करण	३)	३)
,, सजिल्द	१॥।)	१॥)
,, अजिल्द	१॥)	१।)
६० इज़हारे हकीक़त	१।)	१)
६१ महकते फूल	१)	१)

नोट—पुस्तक विक्रेताओं को घटे हुए मूल्य ही पर कमीशन दिया जायगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आर्य जगत को नवीन सन्देश
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्याग ! तप !! बलिदान !!!

सार्वदेशिक मासिक-पत्र

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, विविध-विषय विभूषित सचित्र-मासिक पत्रः—

सम्पादक—श्री० स्वामी आनन्दभिक्षु जी सरस्वती

य दि आ प

(१) वैदिक सभ्यता के मर्मज्ञ, कर्मनिष्ठ, सात्विक, प्रेम के उपासक, प्रतिष्ठित आर्य महानुभावों के सात्विक, प्रौढ़ और जीवनप्रद लेख पढ़ना चाहते हैं।
(२) देश के भिन्न--भिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक नेताओं के मार्मिक समयानुकूल परिस्थिति द्योतक विचारों से लाभ उठाना चाहते हैं।
(३) भूमण्डल की धार्मिक, सामाजिक घटनाओं का ठीक ठीक वर्णन जानना चाहते हैं।
(४) देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तरों में वैदिक पुण्य-पीयूष प्रवाहित कर देने वाले आर्य समाज की शिक्षा सम्बन्धिनी सामाजिक, शुद्धि, सङ्गठन, दलितोद्धार विषयक उथल-पुथल मचा देने वाली क्रान्तिकारी संस्थाओं का परिचय प्राप्त करना चाहते हैं।

तो

आज ही हां आज ही एक पत्र डालकर सचित्र "सार्वदेशिक" के ग्राहक बन जाइये।

प्रबन्धकर्ता—"सार्वदेशिक" देहली।

ताज़ा सब्ज़ी का बीज मंगाओ

पता—मेहता डी० सी० वर्मा आर्य टोला बेगमपुर, पटना।

---

५००) इनाम लीजिये

महात्मा प्रदत्त श्वेत कुष्ट (सफेदी) जो अद्भुत बनौषधि है एक दिन में आधा और तीन दिन में पूर्ण आरोग्य। यदि सैकड़ों हकीमों, डाक्टरों, वैद्यों, विज्ञापन-दाताओं की दवा कर थक गये हैं तो इसे लगावें। बे फायदा साबित करने पर ५००) इनाम। जिन्हें विश्वास न हो -) का टिकट लगाकर प्रतिज्ञा पत्र लिखा लें। मूल्य २)

अखिल किशोर राम,
नं० ७ पो० कतरी सराय (गया)

पं० रघुनाथ प्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिये श्रद्धानन्द प्रेस, श्रद्धानन्द बाजार देहली से छपकर प्रकाशित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri